सो बूझे जिस आप बुझाए
भाग - स (३ दा ३)

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विचों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

शब्द : हरि शब्द : शब्द गुरदेव आत्म परमात्म, परम पुरख वडयाईआ। शब्द सुहाग शब्द मातम, शब्द खेले खेल हर घट थाईंआ। शब्द बाहर शब्द बातन, शब्द नूर शब्द ज़हूर, शब्द शब्दी वेख वखाईआ। शब्द आसा शब्द मनसा शब्द करे पूर, शब्दी सेव कमाईआ। शब्द खाली शब्द भरपूर, शब्द हाज़र शब्द हज़ूर, हज़रत शब्द रूप वटाईआ। शब्द नेड़े शब्द दूर, शब्द शब्दी साची धूड़, गुरमुख विरला मस्तक लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप सालाहीआ। (१६ भादरों २०१८ बि)

शब्द गुरू कहे मैं दाता गम्भीर, प्रभ साचे मात बणाया। मेरा घर मन्दर इक्क अखीर, बिन मज़लों आपणा पन्ध मुकाया। जिथ्थे ना कोई शरअ ना ज़ंजीर, मज़्बी वंड ना कोई वंडाया। ना कोई मणका ना कोई तसबी ना कोई तस्वीर, इष्ट रूप ना कोई दृढ़ाया। ना कोई तत्त ना सरीर, मन मत बुध ना कोई सुहाया। ना कोई कलम छाही काग़ज़ उत्ते खिचे लकीर, कातब लेख ना कोई लिखवाया। ना कोई तकदीर ना तदबीर, ना कोई नग़मा नज़म सुणाया। जिस मंज़ल गृह चढ़ के बैठा अख़ीर, आख़र निरगुण डेरा लाया। ओथे इक्को अगम्म अथाह बेपरवाह धुर दा पीर, हरि हरिजू सोभा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साचा हुक्म इक्क वरताया। (१ जेठ २०२१ बि)

फुल्ल कहण एह बरखा अमृत धार, जन भगतां दिती लगाईआ। शब्द गुरू किहा नहीं इस दे नाल सारी सृष्टी दा करना विहार, एह मेरी बेपरवाहीआ। क्यों शब्द दे शब्द सदा इख्त्यार, ते शब्द दा शब्द सदा मुखत्यार, शब्द दा शब्द सदा आगिआकार, शब्द निरगुण ते शब्द सरगुण, बिना शब्द तों मण्डल रास विच्च रंग जगत ना कोई वखाईआ। शब्द कहे मैं सतिगुरू मैं गुरदेव मैं सारी दीन दुनी दा बदमाश, बदी करन करौण वाला शब्द इक्क वखाईआ। पर एह मेरा मन दे नाल कम्म ख़ास, ते बुद्धि नाल टकराईआ। ते जिस वेले

मैं आत्मा नूं देवां प्रकाश, उह मेरा मेरा नूर नूर नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर , शब्द गुरू कहे, मेरे कीते नूं नहीं सके वाच, जो अन्दर सुणाया, ओनां ने रसना गाया, कलम शाही नाल लिखवाया, लिख के सिफ्तां गए सुणाईआ। ओनां अक्खरां उत्ते धरवास रखवाया, जिस नूं अग्ग नाल सारे देण जलाया, उह प्रभू अबिनाशी भुलाया, जो घर घर अन्दर डेरा लाईआ। अल्ला वाहिगुरू राम कृष्न ओम जै जैकार कराया, जै जैकार करौण वाला नज़र कोई ना आईआ। शब्द कहे मेरा आदि अन्त किसे ना पाया, जे किसे उत्ते किरपा कीती ओन, भगवन्त नूं कन्त कह सुणाया, नारी हो के मैं साची सेव कमाईआ। जे किसे बुत्त विच्च नूर चमकाया, ओन ओस दा मंत दृढ़ाया, अठ्ठे पहर ध्यान लगाया, साह साह रसना गाया, चरन कँवल कँवल चरन बिना चरना तों सीस निवाया, ते शब्द गरू कहे मै किसे दा फेर वी नहीं माण वधाया, जो आया सो पार कराया, वेखो गुरू अवतार पैगम्बर किसे दे साहमणे नज़र कोई ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

शब्द गुरू कहे मैं अंना बोला, सुणन कुछ ना पाईआ। भेखधारी वसां विच्च काया चोला, तत्तां विच्च सोभा पाईआ। जिस वेले चाहवां ओस वेले आपणी धार दा बोलां बोला, अनबोलत हो के आपणा राग सुणाईआ। जे मैं कह दिता प्रभू मौला, ते सारयां मौला मौला कह के रौला दिता पाईआ। जे मैं किहा सतिनाम, ते सति सति सारे रहे गाईआ। जे मैं किहा वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू, ते वाह वा गुरू दी सारे करन वडयाईआ। ते जे मैं कहां ओस प्रभू दा कोई नाम नहीं कोई निशान नहीं ते तुसीं किस दा गौंदे ढोला, उह फिर सारे दिआं भुलाईआ। जे मैं कहां उह तक्कड़ वाला तोला, जे मैं कहां धुरदरगाह दा दूला, जे मैं कहां उहदा हुक्म होवे माअकूला, जे मैं कहां उह सारयां अन्दर फल्लया फूला, फेर हत्थ जोड़ के सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

शब्द कहे मैं राम बण गिआ, सीता पिच्छे भज्जया वाहो दाहीआ। शब्द कहे मैं काहन बण गिआ, राधा पिच्छे बंसरी रिहा वजाईआ । शब्द कहे मैं मूसा बण गिआ, मूंह दे भार रगढ़ के नक्क दिता घसाईआ। शब्द कहे मैं ईसा बण गिआ, गल फ़ासी लई लटकाईआ। शब्द कहे मैं मुहम्मद बण गिआ, कलमयां विच्च दिती दुहाईआ। शब्द कहे मैं नानक बण गिआ, गरीबी वेस कर के धरती कदमां नाल मिणाईआ। शब्द कहे मैं गोबिन्द बण गिआ, खण्डा खड़ग चमकाईआ। शब्द कहे मैं सभ नूं छड गिआ, शब्द शब्द विच्च समाईआ। शब्द कहे मैं सभ कुछ बण गिआ, आपे पिता ते आपे माईआ। शब्द कहे मैं ताणा तण गिआ, लक्ख चुरासी नज़री आईआ। शब्द कहे मैं विष्न ब्रह्म शिव घाड़त घड़ गिआ, संसारी भण्डारी सँघारी नाउँ रखाईआ। शब्द कहे जे मैनूं तक्को ते मैं सारयां विच्च वड़ गिआ, बिना मेरे तों जींदा नज़र कोई ना आईआ। शब्द कहे मैं अन्दर काया मन्दर ते सभ दी चोटी उत्ते चढ़ गिआ, सिखर बह के आपणा आसण लाईआ। शब्द कहे मैं मूर्ख मूढ़ बण गिआ, अकल विद्या ना कोई चतराईआ। शब्द कहे मैं सभ कुछ पढ़ गिआ, मेरे पढ़ाइआं तों बिना गुर अवतार पैगम्बर किसे नूं समझ किछ ना आईआ। सो शब्द कहे मैं पहली चेत जगत जहान दे मैदान विच्च खड़ गिआ, मद्दद अवर ना मंग मंगाईआ। आपणे विहार अन्दर सृष्टी

दी दृष्टी नाल लड़ गिआ, आपणी कार अन्दर इष्टी दा रूप धराईआ। ना कदे जंमयां ते ना कदे मर गिआ, मड़ी गोर ना कदे दबाईआ। ना हिंदू ना सिख ना ईसाई ना मुसलम ते मैं ना किसे मज़ब नूं चंगा कर के वरजिआ, आओ तुहानूं सिँघासण उत्ते दिआं बैठाईआ। जदों दिल कीता ओन्नां दे हत्थां विच्च फड़ा के निक्कीआं निक्कीआं पर्चीआं, बच्चयां वांग दिता परचाईआ। किसे नूं राम किसे नूं कृष्न किसे नूं ओम अल्ला सतिनाम दे के जगत वाला ख़रचया, मातलोक दे राहे दिते पाईआ। ओन आ के उत्ते धरतया, धरनी धरत धवल दिती वडयाईआ। गुण गा के प्रीतम अरशिआ, सिफ्त दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

शब्द गुरू कहे सारे कहन्दे मन्नो शास्त्र सिमरत वेद पुरान, अञ्जील कुरानां ध्यान लगाईआ। मैं हस्सदा फिरां बिना मेरी किरपा किसे नूं औणा नहीं ज्ञान, पढ़यां हत्थ कुछ ना आईआ। जिंनां चिर मैं अन्दर ना वड़या मन्दर ना चढ़या ते मेरी कौण देऊ पहचान, निझ नेत्र ना कोई खुल्ह़ाईआ। पढ़ना रसना दा गान, सुणना कन्नां दा विधान, मिलणा जिस वेले प्रभू होवे मेहरवान, बिना मेहर तों मिलण कोई ना पाईआ। ते जे कोई कहे असीं सारे हनसान, साडे विच्च भगवान, असीं ओसे दा निशान, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म सारे नज़री आईआ। शब्द गुरू कहे फेर मैं कहां तुहाढ्ढे ब्रह्म दी केहड़ी दुकान, ते जे तुसीं ब्रह्म ते तुहाढ्ढी करे कौण पहचान, ते बेपहिचाण कवण अखवाईआ। एसे कर के मैं अक्खरां विच्च पवा दिता घमसान, अक्खरां नाल अक्खर अक्खरां नाल अक्खर, त्रैगुण माया नाल अक्खरां वाले नाम, प्रभू ने दित्ते लड़ाईआ। की प्रभू नूं चंगा कहोगे कि शैतान, जिस ने गुर अवतार पैगम्बरां कोलों आपणे रसते बदला के सन्त सन्तां नाल दिते टकराईआ। शब्द गुरू कहे मैं आदि जुगादि सदा बलवान, बलधारी इक्क अखवाईआ। सदा रहे मेरी कमान, हुक्म इक्को इक्क वरताईआ। जो आया सो बण के गुलाम, नफ़रां वाली कार कमाईआ। एसे कर के डण्डावत बन्दना सय्यदे करदे रहे सलाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

शब्द गुरू कहे अज्ज तों समझ लउ सतिजुग दी धारा, सति दा सति लैणा उपजाईआ। प्रगट इक्क इक्क दा सर्ब पसारा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जिस नूं कहन्दे कल कलकी अवतारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ओस दा शब्द गुरू सिकदारा, हुक्मे अन्दर आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतो तुसां जन्म नहीं लैणा दुबारा, मात गरभ अगन ना कोई तपाईआ। मिलणा मेल ओस निराकारा, जो निरँकार निरवैर सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाईआ। शब्द गुरू कहे हुण मेरी बड़ी होणी परीख्या, विदवानां लैणी अंगढ़ाईआ। जिन्ह़ां कदी नेत्र नहीं दीख्या, ओन्ह़ां अक्खीं मीट के कहणा मिल्या नूर अलाहीआ। कबाब खाणा भुंन के उत्ते सीख्या, कहण धर्म दी रीती असां अपणाईआ। सतिगुर शब्द ने सारयां तों पुच्छणा तुहाढ्ढा पिछला जन्म किस तऱ्हां बीत्तया, उह दिउ समझाईआ। ते की अगले साल दी होणी रीतिआ, पर्दा दिउ खुल्ह़ाईआ। केहड़ी वस्त तुहाढ्ढे काया खीसिआ, बाहर दिउ कढ्ढाईआ। ज़रा आपणा आत्मा तक्को बिना शीशिआ, बिना शम्ह़ां तों आपणा नूर वेखो रुशनाईआ। सुणो अगम्मा कलमा अनोखा गीतिआ, जेहड़ा चार जुग दे शास्त्र ना सकण समझाईआ। केहड़ा

रंग मीठिआ, बिन रसना जिह्वा देणा समझाईआ। जेहड़े तपण वाले त्रैगुण पंज तत्त अंगीठिआ, सांतक सति ना कोई कराईआ। ओनां नूं मंगयां मिले ना भीख्या, नाम भंडारा ना कोई वरताईआ। सभ ने पौणा आपणा कीतिआ, अग्गे हो ना कोई बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड्ड वडयाईआ।
शब्द गुरू कहे मेरा पैणा इक्क धमाका, सभ नूं देणा हिलाईआ। अनेकां साधां सन्तां ध्यान ला के मेरा खिच्चणा ख़ाका, नेत्र नज़र कुछ ना आईआ। मैं पुच्छ लैणा जगत दे गुरूओ तुहाढ्ढे पिछले नौ जन्म दा की साका, सच दिउ दृढ़ाईआ। जे तुहाढ्ढा थोड़ा थोड़ा थोड़ा खुलिआ ताका, जिस वेले सामूणे होणा ओसे वेले बन्द देणा कराईआ । हुण दस्सो केहड़ा काका चुकोगे ढाका, ते किस नूं बापू कहोगे किस दा मन्नोगे आखा, भेद दिउ खुलाईआ। एह कोई विद्या वालीआं नहीं बातां, वड्डिआई नहीं जाग के कट्टणीआं रातां, गुण नहीं बहुतीआं गौणीआं गाथां, अक्खरां विच्च सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।
शब्द गुरू कहे मैं दीन दुनी दा बदल देणा यकीन, यके दीगरे बाअद खेल खलाईआ। कलिजुग नूं कहणा आफ़रीन, वाह वा तेरी वडयाईआ। जिस ने गुर अवतार पैगम्बरां दी भुलाई ताअलीम, कलिजुग जीव तुलबे आपणे लए बणाईआ। माया ममता दा दस्स के सीन, कूड़ी क्रिया विच्च फसाईआ। काम वासना कर अद्धीन, क्रोध विच्च हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। (१ चेत श सं १)

हरि शब्द हरि ज्ञान है। हरि शब्द हरि चरन ध्यान है। हरि शब्द एका एक साची टेक, गुरसिख साचे भुल्ल ना जाण है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत देवे साचा दान है । (१३ मध्घर २०१० बि)

हरि शब्द सच संयोग। हरि शब्द साचा रस भोग। हरि शब्द जन भगतां चुगाए आत्म साची चोग। हरि शब्द कट्टे हउमे रोग। दुरमत मैल पापां धोग। हरि शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सोहँ साचा योग।
हरि शब्द साचा निशान है। हरि शब्द एका माण एका ताण बली बलवान है। हरि शब्द वड शाहो दाता वड सुलतान है। हरि शब्द वड्डा राजा राजान है। हरि शब्द एका देवे जन भगतां ब्रह्म ज्ञान है। हरि शब्द सुरत शब्द मेल मिलान है। हरि शब्द दसवां दर कर किरपा आप खुलाण है। हरि शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरे आत्म वसे सच असथान है।
हरि रंग हरि शब्द जाण। हरि शब्द मिलाए मेल हरि भगवान । हरि शब्द मूर्ख मुगध कराए चतर सुजान। हरि शब्द देवे महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत वाली दो जहान है। हरि शब्द हरि का रूप है। हरि शब्द आदि अन्त जुगाँ जुगन्त सति सरूप है। हरि शब्द महिंमा जगत अनूप है। हरि शब्द गुरमुख विरला जाणे ना किसे दिसे कोई रंग रूप है। हरि शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई एका वड्डा भूप है।

हरि शब्द गुरमुख जानणा। होए मेल भगत भगवानणा। मिटे अन्धेर होए चानणा। मिटे हेर फेर, एका देवे नाम निधानणा। ना लाए कोई देर जिस किरपा करे विष्नूं भगवानणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा शब्द सतिजुग झुल्ले सच निशानणा। हरि शब्द हरि का भेरव है। हरि शब्द हरि हरि वेरव है। हरि शब्द प्रभ लाए आत्म साची मेरव है। हरि शब्द कलिजुग जीआं कढ्ठे भरम भुलेरव है। हरि शब्द गुरसिरव साचे दर साचे नेत्र लैणा पेरव है। हरि शब्द जन भगतां देवे जिनूं लिरवाए धुरों साचे लेरव है। हरि शब्द ना बेमुरव जाणे, कलिजुग रहे वेरवा वेरव है। हरि शब्द हरि रसन वरवाणे, ना कोई जाणे औलीआ पीर शेरव़ है। हरि शब्द गुरमुरव तेरे आत्म बद्धे गाने, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई विच्चों वेरव है।

हरि शब्द जगत नयारड़ा। मिलाए मेल यार प्यारड़ा। दस्से राह जगत नयारड़ा। बेमुरव हस्स ना पावे सारड़ा। गुरसिरवां हरि हिरदे वसे, देवे दरस नयारड़ा। करे प्रकाश कोट रव सस्से, मिटाए अन्ध अंधिआरड़ा। बेमुरवां आत्म अन्धेर जिउँ चन्द मस्से, ना दिसे सज्जण मीत प्यारड़ा। साचा शब्द तीर प्रभ साचा कस्से, सृष्ट सबाई पार करारड़ा। जोत सरूपी राह साचा दस्से, निहकलंक लै अवतारड़ा । बेमुरव कलिजुग जीव पैर हेठां झस्से, ना कोई पावे सारड़ा। मौत नागनी एका डस्से, ना कोई बणे किसे सहारड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सारड़ा।

हरि शब्द सच धन माल। हरि शब्द गुरमुरव साचे रक्रव संभाल। अन्तम अन्त तेरे निभे नाल। कलिजुग जीव होए कंगाल। झूठा लग्गा जगत ज़ंजाल। मायाधारी होए रवुआरी, ना कोई पावे सारी, कलिजुग अन्तम तुट्टा डाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप दलाए जिउँ दो फाड़ी दाल।

हरि शब्द गहर गम्भीर। हरि शब्द आत्म वज्जे साचा तीर। हरि शब्द आत्म झिरनां दे झिराए, अमृत प्याए साचा सीर। हरि शब्द हरिजन जाणे, जिन देवे आत्म धीर। हरि शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुरवां पिलाए विच्च मात साचा सीर।

हरि शब्द जगत वड्डिआई। पतिपरमेश्वर दया कमाई। हरि शब्द देवे दात आप रघुराई। वड करामात भुल्ल ना जाई। साचा नात गुर चरन जुड़ाई। अन्तम मिटे अन्धेरी रात, दीपक जोती दे जगाई। गुरमुरव साचे वेरव मार झात, आत्म बैठा डेरा लाई । ना दिवस ना होवे रात, एका रंग डगमगाई। बैठा रहे सद इकांत। गुरमुरव साचे दे समझाई। अमृत देवे बूंद सवांत, कँवल नाभ आप उलटाई। महराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिरवां देवे नाम वड्डिआई।

हरि शब्द सति सन्तोरव। हरि शब्द कट्टे काया दोरव। हरि शब्द उजल कराए जगत मुरव। हरि शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुफल कराए मात कुक्रव।

हरि शब्द हरि की बणत। गुरमुरव विरला जाणे सन्त। कलिजुग जीआं माया पाए बेअन्त। आपे जाणे जाण पछाणे गुरमुरव जगाए हरि हरि हरि भगवन्त। दर घर साचे आप दिरवाए, मेल मिलावा साचे कन्त। बेमुरव बंनूण झूठे दाअवे, लक्रव चुरासी विच्च भवन्त। अठसठ तीर्थ झूठे नहावे, ना कोई छुडावे अन्त। गुरसिरव साचा गुर चरनी धूढ़ी मस्तक

लावे, देवे वड्डिआई विच्च जीव जंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप नरायण नर जन भगतां होए सहाई आदि अन्त।

हरि शब्द हरि भंडारया। हरि शब्द हरि वरतारया। हरि शब्द हरि देवे विच्च संसारया। हरि शब्द आप चलाए जुगो जुग अपर अपारया। हरि शब्द हरि सुणाए, सोहँ डंक सच वजा रिहा। हरि शब्द हरि रसना गाए कलिजुग झेड़ा आप चुका रिहा। हरि शब्द मैल पापां धोए, आत्म तीर्थ सच इशनान करा रिहा। हरि शब्द हरि साचा बोए, अमृत फल्ल इक्क लगा रिहा। हरि शब्द गुरसिख विरला जाणे कोई, जिस बज़र कपाटी चीर वरवा रिहा। हरि शब्द रसना लए परोए, दसवां दर आप खुल्ला रिहा। हरि शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीपक जोती आप जगा रिहा।

हरि शब्द साचा राग। हरि शब्द रसना जप, धोणां पापां झूठा दाग। हरि शब्द गुरमुख पछाणे, बुझाए आत्म तृष्ना आग। हरि शब्द देवे हरि तेरी अन्तम पकड़े वाग। हरि शब्द लैणा वर साचे घर खुल्ले दर देवे वडी वड्डिआई प्रभ पहली माघ। गुरचरन सर जाणा तर। आत्म भंडारे प्रभ देवे भर। सुक्के रुखड़े हरे कर। गुरसिख बणाए हँस काग, दर घर साचे जाण वड़। प्रभ अबिनाशी फड़ना लड़। बेमुख जीव जाइन झड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द लगाए आग।

हरि शब्द घर सच विचोला । हरि शब्द कलिजुग जीव क्यों भुल्लया गोला । मानस जन्म विच्च मात रोला। बिन गुर ना कोई गावे घर साचे दा साचा सोहला। मात जोत प्रगटाए वज्जे वधाए, प्रगट जोत सृष्ट सबाई दे हिलाई, प्रभ अबिनाशी संपूरन कला सोलां। राजे राणे दए उठाए, आपे पाए उजाड़ राहे। तख़त ताज कोई रहण ना पाए। साज बाज सर्ब मिट जाए। एका ताज हरि आपणे सिर टिकाए। सिँघ सिँघासण डेरा लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिंद बाहों पकड़ आपणी सरन लगाए।

एक दीसे हरि जगदीश। एका छत्तर झुल्ले प्रभ साचे सीस। कलिजुग जीव झूठी करन रीस। एका राग सोहँ शब्द मिटाए राग छतीस । नारद मुन दे मत समझाए, मिटाया भेव बीस इकीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए, गुरमुख साचे सन्त जनां साचा शब्द इक्क पढ़ाए, ना कोई लगाए फीस।

वड ज़रवाणया शाह सुलतानया, मेट मिटाणयां, वाली दो जहानया । जोत सरूपी पहरे बाणया। ना कोई जाणे सुघड़ सिआणया। प्रभ अन्तम अन्त सृष्ट सबाई मेट मिटाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त आपे चले आपणे भाणया।

हरि शब्द हरि तीर चलावणा। कलिजुग जीवां धीर गवावणा। चार कुण्ट वहीर करावणा। बालक माता सीर हत्थ ना आवणा। कलिजुग जीवां ना नीर किसे मुख चुआवणा। ना कोई सहाए पीर फ़कीर, ना कोई पकड़े दामना। धर्म राए दे वज्झे जंज़ीर, अग्गे होए ना किसे छुडावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन, अन्तम अन्त आपणी सरन लगावणा।

हरि शब्द सच कटार है। सोहँ शब्द खण्डा दो धार है। प्रभ साचे दी साची कार है। जुगो जुग करे आपणा आप विहार है। तीन लोक सच्चा इक्क सिकदार है। लोकमात जोत प्रगटाए, आवे जावे वारो वार है। कलिजुग औध गई बीत, प्रभ वहाए वैहन्दी धार

है। गुरमुख साचे मानस जन्म गए कल जीत, आए सच दरबार है। प्रभ काया करे सीतल सीत, अमृत चलाए सच फुहार है। सतिजुग चलाए साची रीत, ऊँच नीच भरम निवार है। प्रभ अबिनाशी साचा मीत, वाह वाह एका इक्क प्यार है। दूजा कोई ना राखो चीत, निहकलंक सच्चा अवतार है। सोहँ शब्द गाओ सुहागी गीत, बेड़ा होवे अन्तम पार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच्च मात लिआ अवतार है।

हरि शब्द सच निशाना। हरि शब्द सच टिकाणा। हरि शब्द अनहद धुन उपजाणा। गुरमुख साचे चुण प्रभ साचे कन्न सुणाणा। हरि शब्द हरि के गुण, मेल मिलाए तीर बिधनाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाणा।

हरि शब्द हरि ज्ञान है। हरि शब्द हरि चरन ध्यान है। हरि शब्द एका एक, साची टेक गुरसिख साचे भुल्ल ना जाण है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत देवे साचा दान है। (१३ मध्घर २०१० बि)

हरि का शब्द अट्टल, जगत धुनकार है। हरि का शब्द अट्टल, वसे सच महल्ल दस्से पार किनार है। हरि का शब्द अट्टल, ना कोई देही ना कोई खल्ल, एका रंग अपर अपार है। हरि का शब्द अट्टल, ना कोई फुल्ल ना कोई फल, चारों कुण्ट पसर पसारया । हरि का शब्द अट्टल, वसे जल थल, तिन्नां लोआं पावे सारया। हरि का शब्द अट्टल, बेमुख भुलाए कर कर वल छल, गुरमुखां देवे साची धारया। हरि का शब्द अट्टल, गुरमुख साचे सन्त जनां, वसे काया सच महल्ल मुनारया।

हरि का शब्द अट्टल, जगत अमोलया । हरि शब्द अट्टल, किसे ना तोलया। हरि का शब्द अट्टल, गुरमुखां पर्दा साचा खोल्लया । हरि का शब्द अट्टल, काया मन्दर साचे बोलया। हरि का शब्द अट्टल, रंग रंगाए काया चोलया। हरि का शब्द अट्टल, गुरमुख साचे सन्त जनां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना हरि हरि बोलया।

हरि का शब्द अट्टल, जगत वणजारया। हरि शब्द अटल, भगत भंडारया। हरि का शब्द अट्टल, देवणहार हरि निरंकारया। हरि का शब्द अट्टल, अनहद धुन सच्ची धुनकारया। हरि का शब्द अट्टल, तोड़े मुन सुन आत्म जोती मेल मिला रिहा। हरि का शब्द अट्टल, ना कोई वरन ना कोई गोती, एका रंग समा रिहा। हरि का शब्द अट्टल, गुरमुखां उठाए काया सोती, इक्क हलूणा हिला रिहा। हरि का शब्द अट्टल, लक्ख चुरासी रही रोती, दिस्स किसे ना आ रिहा। हरि का शब्द अट्टल, गुरमुख उपजाए दया कमाए लोकमात साचे मोती, प्रभ साचा हार गुंदा रिहा। हरि का शब्द अट्टल, दुरमत मैल जाए धोती, जो जन रसना हरि गुण गा रिहा। हरि शब्द अटल, ना कोई मंगे दान अहूती, अमृत साचा जाम पिआ रिहा। हरि का शब्द अट्टल, एका नाम जगत भबूती, गुरमुख विरला मस्तक ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सच दवारा इक्क खुल्ला रिहा।

हरि का शब्द अट्टल, धाम असथूलया। हरि का शब्द अट्टल, मिलाए मेल कन्त कन्तूलया। हरि शब्द अटल, अठ्ठे पहर दिवस रैण तिन्नां लोआं रक्खे एका झूलया। हरि का शब्द अट्टल, चुकाए लहण देण, जो जन गाए रसना भुलया। हरि शब्द अटल, आप बणे साक

सज्जण सैण मात पित भाई भैण, अगला पिछला चुकाए मूलया। हरि का शब्द अट्टल, रसना सके ना किसे कहण, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग जीवां अन्तम भुलया। आप वहाए वहिंदे वहण, लाड़ी मौत खाए डैण, घर घर उडदी दिस्से धूलया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन, सच दवाारे लोकमात फल्लया फूलया।

हरि का शब्द अट्टल, जगत सन्यास है। हरि का शब्द अट्टल, सर्ब घट वास है। हरि शब्द अटल, होए सहाई गरभ दस मास है। हरि का शब्द अट्टल, पवण चलाए रसन स्वास है। हरि का शब्द अट्टल, इक्क वखाए सच मण्डल दी साची रास है। हरि शब्द अटल, गुरमुख साचे सन्त जनां, निज घर आत्म रक्खे वास है। हरि का शब्द अट्टल, खोल्हे बन्द कवाड़, सदा होया रहे दास है। हरि शब्द अटल, पंजां चोरां चबाए दाड़, साची जोत करे प्रकाश है। हरि का शब्द अट्टल, जोत जगाए बहत्तर नाड़, वेख वखाणे पृथ्मी अकाश है। हरि का शब्द अट्टल, आदि अन्त ना जाए विनास है। हरि का शब्द अट्टल, वस्से धाम इक्क इकल्ल, जन भगतां करे बन्द ख़लास है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत धर, आप आपणा करे साचा वास है।

हरि का शब्द अट्टल, भगत ज्ञानया। हरि का शब्द अट्टल, माण गवाए वेद चार अठारां पुरानया। हरि का शब्द अट्टल, रसना गाए कृष्न भगवानया। हरि शब्द अटल, गीता गाए जगत सुणाए, देवे ब्रह्म ज्ञानया। हरि का शब्द अट्टल, वेद बिआसा रिहा सुणाए, साची रसना हरि वखानया। हरि का शब्द अट्टल, ऊँचो ऊँच इक्क प्रबल, गौतम बुद्धा आत्म सुध्धा, मिल्या माण जगत जहानया। हरि शब्द अट्टल, आपे वेखे पाणी दुध्धा, अठां तत्तां वक्ख रखानयां। हरि का शब्द अट्टल, गुरमुख विरले आत्म गुध्धा, तन साचा सुध्धा मिले माण जगत निशानया। हरि का शब्द अटल, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, इक्क उडाए शब्द बिबाणया।

हरि का रूप अगम्म, शब्द बिबाण है। हरि का शब्द अगम्म, पुरीआं लोआं इक्क उडान है। हरि का रूप अगम्म, चारे कुण्ट दह दिशा एका करे ध्यान है। हरि का शब्द अगम्म, साची धुन सच्ची धुनकान है। हरि का रूप अगम्म, जोती जगे बेमुहान है। हरि का शब्द अगम्म, ना दिसे कोई निशान है। हरि का रूप अगम्म, ना सके कोई पछाण है। हरि का शब्द अगम्म, जगत निमाणया देवे माण है । हरि का रूप अगम्म, राजे राणया बेमुहणया अन्तम आई हान है। हरि का शब्द अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात आप उठाए शाह सुलतान है।

हरि का शब्द अगम्म, सच दुकान है। हरि का रूप अगम्म, पवण मसाण है। हरि का शब्द अगम्म, ना वसे किसे मकान है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई पत्त ना कोई पत्ती, ना कोई दिस्से डाहण है। हरि का रूप अगम्म, दिस ना आए तीर्थ तट्टी, अठसठ रहे ख़ाक छाण है। हरि का रूप अगम्म, किसे हत्थ ना आए रत्ती, वेद पुरानां आए हान है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई जाणे जोगी यती, आत्म धीरज होई हैरान है। हरि का शब्द अगम्म, गुरमुखां दे समझावे मती, साचा धर्म विच्च जहान है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई नार ना कोई पती, ना कोई दीवा ना कोई बत्ती, आत्म सभ दी होई तत्ती, कलिजुग

मारे बली बलवान है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, प्रगट होए विष्नूं भगवान है।
हरि का शब्द अट्टल, धीर धराइंदा। हरि का शब्द अट्टल, अमृत आत्म साचा सीर पिलाइंदा। हरि का शब्द अट्टल, एका तीर्थ साचा सीरथ आत्म इक्क वखाइंदा। हरि का शब्द अट्टल, ना कोई जाणे शाह सुलतान पीर फ़कीर, वेद पुरानां हत्थ ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा हरि प्रगटाइंदा। (२६ पोह २०११ बि)

हरि शब्द अपार, ब्रह्मण्ड सहारया। हरि शब्द अपार, वरभंड जैकारया। हरि शब्द अपार, आप चलाए नव खण्ड, एका एक सच्ची धारया। हरि शब्द अपार, पुरीआं लोआं रिहा वंड, आपे आप बणत बणा रिहा। हरि शब्द अपार, इक्क रखाए चंड प्रचंड, साचा खेल रचा रिहा। हरि शब्द अपार, लक्ख चुरासी देवे दंड, हरि आपणे हत्थ रखा रिहा। हरि शब्द अपार, गुरमुखां रिहा वंड, गुणवन्ता गुण विचारया। हरि शब्द अपार, बेमुखां वढ्ढे कंड, तिक्खी रक्खे धारया। हरि शब्द अपार, गुरमुखां पाए ठंड, अमृत देवे ठंडा ठारया। हरि शब्द अपार, बेमुखां आत्म होई रंड, भुल्ले जीव गवारया। हरि शब्द अपार, गुरमुखां पाए ठंड, गुरमुख विरला आत्म बंनूं साची गंढ, धुरदरगाही वस्त अपारया। हरि शब्द हरि आपे दे वंड, लक्ख चुरासी सुणा रिहा। हरि शब्द अपार, वड ख़ज़ानया। हरि शब्द अपार, मिलाए मेल हरि बीने दानया। हरि शब्द अपार, एका घर रहाए उपजाए लक्ख चुरासी कन्न सुणानया। हरि शब्द अपार, तिक्खी रक्खे हरि जी धार, काया मन्दर साचे अन्दर, आप वखाए सच टिकाणया। (५ माघ २०११ बि)

हरि शब्द अपार, जगत चलाईआ। हरि शब्द अपार, गुरूआं पीरां साधां सन्तां, आत्म वज्जी इक्क वधाईआ। हरि शब्द अपार, एका एक सच्चा तीरा, बज़र कपाटी चीर वखाईआ। हरि शब्द अपार, अमृत आत्म कढ्ढे बाहर, ठंडी धार इक्क वहाईआ। गुरमुखां आत्म कढ्ढे हउमे पीड़ा, एका धार बंधाईआ। हरि शब्द अपार, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अंक एका डंक, राओ रंक रखाईआ।
हरि शब्द अपार, खेल निरालीआ। जन भगतां कराए मेल वाली दो जहानयां। हरि शब्द अपार, गुरमुख साचे सन्त जन आत्म पाए सार, सुरत संभालीआ। हरि शब्द अपार, धर्म राए दी कट्टे जेलू, देवे नाम इक्क बिबाणया। हरि शब्द अपार, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात मार झात, देवे इक्क सुगात सच्ची निशानीआं।

हरि शब्द अपार, सदा अडोलया। हरि शब्द अपार, गुरमुख विरले मात बोलया। हरि शब्द अपार, गुर प्रसाद साध सन्त, पूरा किसे ना तोलया। हरि शब्द अपार, लक्ख चुरासी भुल्ले जीव जंत आत्म पड़दा किसे ना खोल्लया। हरि शब्द अपारा मेल मिलावा साचे कन्त, हरि शब्द अपार, गुरमुख विरला जाणे सन्त, आत्म कुण्डा जिस ने खोल्लया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म अन्दर आपे बोलया।
हरि शब्द अपार, जगत धुनकाईआ। हरि शब्द अपार, गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। हरि

शब्द अपार, एका दूजा भउ चुकाईआ । हरि शब्द अपार, घर साचे वज्जे वधाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर सुहाईआ।

हरि शब्द अपार, सदा जैकारया। हरि शब्द अपार, एका घर साचे दर सदा सदा पसारया। हरि शब्द अपार, विरले मिलाए मेल कन्त भतारया। हरि शब्द अपार, काया सीतल ठंडी धार, करे ठंडा ठारया। हरि शब्द अपार, साचे मन्दर जाए वड़, एका जोती अगम्म अपारया। पुरख अबिनाशी अग्गे खड़, आप फड़ाए आपणे लड़, इक्क बहाए सच दवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां चुकाए जम का डर, आदि अन्त एका एक आवे जागे वारो वारया। वारो वार आए संसार। सृष्ट सबाई बंने धार। गुरमुखां देवे नाम अपार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरनां एका सरना धरनी धरना कलिजुग तेरी अन्तम वार।

हरि शब्द अपार, वड वड्डिआया। हरि शब्द अपार, खेल करतारया। हरि शब्द अपार, जन भगतां कराए मेल विच्च संसारया। हरि शब्द अपार, लोकमात रखावे उपजावे वारो वारया। हरि शब्द अपार, एका डंक राओ रंक अठारां वरनां एका सरना आपे आप रखा रिहा। हरि शब्द अपार, गुरमुखां लाए आत्म तनका, खिच्च लिआए चरन दवार। हरि शब्द अपार, सन्त सुहेले तारे जिउँ भगत जनका, आत्म पड़दे देवे पाड़। हरि शब्द अपार, पतित पापी जाए तार जिउँ तारी गनका, रसना गाए हरि निरँकार। हरि शब्द अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात जपाए आदि अन्त वारो वार।

हरि शब्द अपार, हरि खीनया। हरि शब्द अपार, वड वड दाना बीनया। हरि शब्द अपार, गुरमुख विरले रसना चीनया। हरि शब्द अपार, तन मन काया ठंडा करे सीनया। हरि शब्द अपार, अमृत सिच काया कराए ठंडी ठार, हरि शब्द अपार, खोले बन्द कवाड़, तत्ती वा ना लग्गे हाढ़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त दुलारे, आपे परखे चंगे माड़े, सच सच सच नगीनया।

हरि शब्द अपार, वथ्थ रघुराईआ। हरि शब्द अपार, सर्ब कला समरथ, मातलोक सदा एका वस्त टिकाईआ। हरि शब्द अपार, गुरमुखां देवे वथ्थ, सिर रक्खे दे कर हत्थ, आत्म भेव गूझ खुलाईआ । हरि शब्द अपार, लक्ख चुरासी पाई नत्थ, चारों कुण्ट फिरन वाहो दाहीआ। हरि शब्द अपार, पंजां चोरां जाए मथ्थ, इक्क चढ़ाए शब्द रथ, लोआं पुरीआं पार कराईआ। हरि शब्द अपार, जन भगतां देवे नाम वथ्थ, शब्द गैहणा लोकमात लैणा, हरिजन सेव कमाईआ। पुरख अबिनाशी साचा सैणा, दरस दिखाए तीजे नैणा, सन्त सुहेले मिल मिल बहिणा, अचरज जीत चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, दुरमत मैल तन रिहा धोत, हरिजन रहे सरनाईआ। (११ माघ २०११ बि)

हरि शब्द अपार, सतिगुर विच्च टिकाईआ। सतिगुर शब्द जैकार, गुरमुख लए जगाईआ। गुरमुख शब्द प्यार, सुरती शब्द समाईआ । मनमुख सुत्ते पैर पसार, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। हरि शब्द शब्द अथाह, सतिगुर विच्च टिकाइंदा। सतिगुर शब्द भगत मलाह, गुरमुख आप तराइंदा। गुरमुख मेला साचे नाउँ, एका नाउँ रसना गाइंदा। बेमुखां दिसे ना कोई थाउँ,

दर दवार ना कोई सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाइंदा ।

हरि शब्द शब्द बेअन्त, हरि हरि आप उपाइंदा। सतिगुर शब्द साचा कन्त, गुरमुख नारी आप प्रनाइंदा। गुरसिख बणाए साची बणत, लोकमात वेख वखाइंदा। भरमे भुल्ले जीव जंत, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार बंधाइंदा।

सतिगुर शब्द ठांडा सीत, गुरमुखां करे प्यारया। गुरमुख परखे साची नीत, एका रूप समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखा रिहा।

हरि शब्द बलवान, सतिगुर हत्थ वडयाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, गुरमुखां झोली पाईआ। गुरमुख साचा चतुर सुजान, आपणे रंग रंगाईआ। मनमुख भुल्ले जीव निधान, हरि का भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ।

हरि शब्द शाहो भूप, सतिगुर विच्च टिकाया। सतिगुर पूरा सति सरूप, गुरमुख साचे लए तराया। गुरसिख नाता तोड़े जूठ झूठ, सच सुच्च प्रनाया। मनमुख जीव गए रूठ, दूसर दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तम फेरा पाया।

हरि शब्द हरि निशान, सतिगुर हत्थ उठाईआ। सतिगुर वेखे दो जहान, गुरमुखां मेल मिलाईआ। एका बख्शे चरन ध्यान, एका ब्रह्म वखाईआ। मनमुख भुल्ले जीव निधान, पंज विकार रसन हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खलाईआ।

हरि शब्द सचखण्ड, सतिगुर झोली पाइंदा। सतिगुर गुरमुखां आपे रिहा वंड, लोकमात वेख वखाइंदा। गुरसिख नंगी होए ना कंड, सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। मनमुख नार दुहागण रंड, साचा कन्त ना कोई हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, भेख पखण्डा मेट मिटाइंदा।

हरि शब्द हरि नरायण, सतिगुर पूरा वेख वखाइंदा । सतिगुर पूरा चुकाए लहण देण, गुरमुखां झोली पाइंदा। गुरमुख धाम अव्वले एका बहण, नौं दवारे पार कराइंदा। मनमुख डुब्बे माया वहण, मंझधार ना कोई तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताइंदा।

हरि शब्द हरि रूप, सतिगुर विच्च समाईआ। सतिगुर पूरा वेखणहारा चारे कूट, गुरमुख आप उठाईआ। गुरमुख उपर आपे तुठ, आपणी बूझ बुझाईआ। मनमुखां मुख रखाया जूठ झूठ, रसना काग वांग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार इक्क बंधाईआ। हरि शब्द निरगुण धार, सतिगुर आप चलाइंदा। सतिगुर साचा कर प्यार, गुरमुखां बूझ बुझाइंदा। गुरमुख साचा वेख विचार, आपणा मोह चुकाइंदा। मनमुख मानस जन्म गए हार, लक्ख चुरासी ना कोई छुडाइंदा। आप आपणी बंनें धार, आप आपणा शब्द चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा शब्द अलाइंदा।

हरि शब्द हरि सार, सार शब्द आप अखवाईआ। गुर शब्द गुर अधार, गुर गुर रिहा टिकाईआ । नाम शब्द शब्द प्यार, गुरमुख साचे रिहा कमाईआ। मूर्ख मूढ़े भुल्ले जीव गवार, मनमत

रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, आप आपणी चलत चलाईआ।

हरि शब्द सच जैकार, एका नाअरा लाइंदा। साधां सन्तां पावे सार, दर सोया कोई रहण ना पाइंदा। वेखे महल्ल अट्टल उच्च मुनार, इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड खोज खुजाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड खेल नयार, जेरज अंड फेरी पाइंदा। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हत्थ रखाइंदा। तिखीआं रक्खे दोवें धार, दो जहानां आप चलाइंदा। ब्रह्म विष्न शिव दए हुलार, आप आपणा कर्म कमाइंदा। करोड़ तेतीसा कर ख़वार, सुरपत राजा इन्द संग रखाइंदा। शब्द सुत कर उजिआर, जोती नूर इक्क चमकाइंदा। गुरमुख साजण मीत मुरार, आप आपणा मेल मिलाइंदा। कलिजुग अन्तम पार किनार, तीर्थ तट्ट ना कोई तराइंदा। वेद पुरान करन पुकार, अञ्जील कुरान मता पकाइंदा। खाणी बाणी एका धार, आप आपणा दर सुहाइंदा। लेख लिखाए बण लिखार, वेद व्यासा लेखे लाइंदा। राम रमईआ कृष्न मुरार, सहँसा बंसा आप हो जाइंदा। ईसा मूसा ख़बरदार, एका नाअरा लाइंदा। संग मुहम्मद चार यार, हक़ हकीकत वेख वखाइंदा। ऐनलहक़ वेख घर बार, अल्ला राणी मेल मिलाइंदा। नानक नाम सति जैकार, शब्द सार धुन उपजाइंदा। गुरमुख शब्द मीत मुरार, सगला संग निभाइंदा। एका जोती गुर अवतार, हरि हरि रूप वटाइंदा। कलिजुग तेरा कूड़ पसार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। ना कोई सज्जण मीत मुरार, साध सन्त दिस ना आइंदा। ना कोई चुक्के किसे भार, आपणा भार ना कोई उठाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, गुर दर मन्दर मस्जिद डेरा लाइंदा। एका भुलया हरि निरँकार, गीत गोबिन्द ना कोई गाइंदा। अगनी लग्गी तत्ती हाढ़, त्रैगुण वेख वखाइंदा । रजो तमो तेरा अखाड़, सतो डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, गुरमुख साचे आप तराइंदा। (२५ मध्घर २०१५ बि)

सतिगुर शब्द : *उह परमात्मा, जिस ने जुग चौकड़ीआं तबदील कीतीआं ते बणाईआ होईआं ने उह कदी किसे इन्सान नाल ते बुद्धि वाले नाल ते अकल वाले नाल गल्लबात नहीं करदा। प्रभू, उहदा इक्क मशवरा है सलाह है दलील है विचारधारा है करनी दा करतव है, जां खेल खेलणा है। उह आपणे सतिगुर शब्द नाल सलाह करदा है, होर किसे नाल नहीं करदा। जेहड़ा सतिगुर शब्द कदे जंमिआ मरया ते नास नहीं होया। दुनियां दे नाल परमात्मा दा कोई सलाह मशवरा नहीं।*

जिथ्थे पुरख परमात्मा नूं संबोधन कीता जोत दी धार ने तत्तां वाले सरीर दा नाम दा रूप धारन करके। फिर दुनियां नूं संबोधन कीता, कि ऐ मनुष ऐ इन्सान। श्री गुरू नानक देव जी ने संसार विच्च ऐसा मार्ग प्रसिध कीता, कि कलिजुग दा कुकर्म भरिशटाचार ते अत्याचार दा समां आ रिहा संसार पता नहीं कलिजुग किस तरीके नाल भुला देवे। पर थोड़ी जही मरयादा कायम कीती कि सतिगुर कौण है, सतिगुर किस नूं किहा गिआ? सतिगुर नूं प्रतीत करौण वास्ते साहिबा ने आपणे जीअ ही, जोत अते शब्द दी धार भाई लहणे विच्च रक्ख दिती। दुनियां नूं संबोधन कर दिता ऐ प्रेमीउँ पिआरिओ, ऐ जगिआसूओ, ऐ संसारीओ, सतिगुर शरीर नहीं है, सतिगुर परमात्मा दी ताकत है। जेहड़ी मैं आपणी

शक्ती धुर तों लै के आया सा, आह मैं देवी दे पुजारी अंगद विच्च रक्ख रिहा हां और उस नूं भरभूर बणा दिता। गुरू अञ्जण साहिब जी ने किरपा कर दिती, ७२ साल दी आयू दे विच्च सेवादार ते मेहर कर दिती गुरू अमरदास नूं बणा दिता। एसे तरां जोत ते शब्द दी धार दसां जामयां तक्क चली गई और संसार दे विचों संसा कढ़ु दिता बई जिस सरीर दे अन्दर परमात्मा दी शब्द दी धार आ जावे, उह आपणी जोत दा प्रकाश रक्ख देवे, उस शरीर दा सतिकार हो सकदा है, लेकिन सतिगुरू शब्द है, शरीर सतिगुरू नहीं है। एह गुरू नानक देव जी ने फैसले वास्ते एह सारा खेल खेलया। ..... (सतिगुरां दुआरा कीते अरथां चों)

निहकलंक हरि निरँकार, सतिगुर शब्द अखवाइंदा। घट घट मन्दर करे सहार, हर घट वेख वखाइंदा। (२१ जेठ २०१६ बि)

सतिगुर शब्द अगम्मी धार, सचखण्ड निवासी आप प्रगटाइंदा। सतिगुर शब्द सच्ची जैकार, सच जैकारा इक्क अलाइंदा। सतिगुर शब्द साची कार, हरि करता आप समझाइंदा। सतिगुर शब्द साचा हट्ट वणजार, वस्त इक्को इक्क वरताइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे सर्ब संसार, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। सतिगुर शब्द सेवा ला गुर अवतार, साची सिख्या इक्क दृढ़ांइंदा। सतिगुर शब्द पीर पैगम्बर पाए सार, कलमा नबी रसूल जणाइंदा। सतिगुर शब्द भगत भगवान लए उठाल, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाइंदा। सतिगुर शब्द सन्तां वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवार इक्क जणाइंदा । सतिगुर शब्द गुरमुखां खोल्ह़ किवाड़, बन्द ताकी कुण्डा लाहिंदा। सतिगुर शब्द गुरसिखां चले नाल नाल, सदा सदा संग निभाइंदा । सतिगुर शब्द नाता तोड़े त्रैगुण माया जगत जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। सतिगुर शब्द लेखा चुकाए काल महांकाल, भय भयानक रूप ना कोई वखाइंदा। सतिगुर शब्द एथे ओथे बण दलाल, बण विचोला वेख वखाइंदा। सतिगुर शब्द अमृत आत्म सरोवर दए उछाल, निझर झिरना इक्क झिराइंदा। सतिगुर शब्द सुरत सवांणी करे प्रितपाल, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। सतिगुर शब्द सुणे मुरीदां हाल मुशर्द आपणा नाउँ धराइंदा। सतिगुर शब्द आप जणाए पंज तत्त काया माटी खाल, हरि मन्दर इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क समझाइंदा।

हरि का शब्द सतिगुर रूप, सतिगुर गुर गुर वेस वटाईआ। गुर गुर लेखा चारे कूट, दह दिशा सोभा पाईआ। दह दिशा देवे सच सबूत, साहिब आपणा नाम पढ़ाईआ। हरि का नाउँ लेखा जाणे काया पंज कलबूत, निरगुण सरगुण वेखे थाईं थाईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वडयाईआ।

सतिगुर शब्द सच्चा नाम, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। सतिगुर शब्द सच्चा जाम, मधर प्याला इक्क वखाइंदा। सतिगुर शब्द करे कराए सच्चा काम, करनी किरत इक्क दृढ़ांइंदा। सतिगुर शब्द मेटे अन्धेरी शाम, निरगुण जोत नूर रुशनाइंदा। सतिगुर शब्द देवे प्रकाश कोटन भान, मण्डल मंडप आप सुहाइंदा । सतिगुर शब्द सृष्ट सबाई इक्क ज्ञान, ज्ञान ध्यान विच्च मिलाइंदा । सतिगुर शब्द इक्क निशान, धर्म निशाना इक्क झुलाइंदा। सतिगुर

शब्द इक्क ईमान, चार वरनां सिदक निभाइंदा। सतिगुर शब्द इक्को रस पीण खाण, विख रूप ना कोई वटाइंदा। सतिगुर शब्द साचा सुणना कान, बिन कन्नां आप जणाइंदा। सतिगुर शब्द दो जहानां देवे माण, अभिमान मेट मिटाइंदा। सतिगुर शब्द बणाए सच विधान, राज जोग आप समझाइंदा। सतिगुर शब्द देवे धुर फ़रमान, सच संदेसा इक्क अलाइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे राज राजान, शाह सुलतान हुक्म मनाइंदा। सतिगुर शब्द लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डा खण्डां पाए आण, अग्गे सिर ना कोई उठाइंदा। सतिगुर शब्द चारे खाणी दए बिआन, अंडज जेरज उत्भुज सेतज भेव अभेद जणाइंदा। सतिगुर शब्द चारे बाणी दए बबाण, नाम बबाणा इक्क धराइंदा। सतिगुर शब्द भेव जणाए अञ्जील कुरान, काया काअबा वेख वखाइंदा। सतिगुर शब्द इक्क तौफ़ीक रहीम रैहमान, मिहबान बीदो इक्को नूर धराइंदा। सतिगुर शब्द सच इस्लाम, इसम इक्को इक्क वखाइंदा। सतिगुर शब्द सच नज़ाम, दो जहानां बंधन पाइंदा। सतिगुर शब्द जुग जुग पैग़ाम, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप सुणाइंदा। सतिगुर शब्द सुण कलिजुग जीव होण हैरान, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। सतिगुर शब्द जन भगतां मिले दान, सन्तन झोली आप भराइंदा। सतिगुर शब्द गुरमुखां देवे माण, गुरसिखां आपणे अंग लगाइंदा। सतिगुर शब्द मनमुख ना सकण पछाण, नेत्र नैण ना कोई खुल्ह़ाइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि इक्को नाद सुणाइंदा।

सतिगुर शब्द सच्चा नाद, अनादी आप सुणाईआ। सतिगुर शब्द सच ब्रह्माद, ब्रह्मांड रिहा समाईआ। सतिगुर शब्द सति आवाज़, धुरदरगाही बांग अलाईआ । सतिगुर शब्द रच रच काज, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वडयाईआ । सतिगुर शब्द सति सरूप, सति सति दृढ़ांइंदा। सतिगुर शब्द वसणहारा चारे कूट, दह दिशा खोज खुजाइंदा। सतिगुर शब्द नाता तोड़े जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया मोह मिटाइंदा। सतिगुर शब्द करे पाक काया कलबूत, पतित पुनीत दया कमाइंदा। सतिगुर शब्द नज़र ना आए कोई वजूद, वाहद आपणी धार वखाइंदा। सतिगुर शब्द मेल मिलाए नाल महबूब, मुहब्बत इक्को इक्क समझाइंदा। सतिगुर शब्द वसे सच अरूज, हुजरा इक्को इक्क वडिआइंदा। सतिगुर शब्द जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग वखाइंदा।

सतिगुर शब्द उच्च अटारी, अट्टल अट्टल जणाईआ। सतिगुर शब्द मेल मिलाए जोत निरँकारी, निरगुण मेला सैहज सुभाईआ। सतिगुर शब्द देवे सच खुमारी, खुमार इक्को इक्क वखाईआ। सतिगुर शब्द कूड़ी क्रिया हउमें रोग कट्टे बीमारी, बिमल आपणी धार प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द नाम खण्डा वखाए तेज़ कटारी, कटाकश इक्को इक्क जणाईआ। सतिगुर शब्द लेखा जाणे आर पारी, मंजधार ना कोई रुड़्ह़ाईआ। सतिगुर शब्द खेल नयारी, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। सतिगुर शब्द मेल मिलाए परवरदिगारी, पर्दानसीं पर्दा इक्क उठाईआ। सतिगुर शब्द लेखा जाणे धुर दरबारी, बेनज़ीर शाह हकीर होए सहाईआ। सतिगुर शब्द जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाम जणाईआ।

सतिगुर शब्द सूरा सर्बंगा, सर्ब कला अखवाइंदा। सतिगुर शब्द नाम मरदंगा, वड मरदानगी आपणे हत्थ रखाइंदा। सतिगुर शब्द पुरीआं लोआं आपे लंघा, राह विच्च ना कोई अटकाइंदा।

सतिगुर शब्द दो जहान वजाए मरदंगा, तार सतार ना कोई वखाइंदा। सतिगुर शब्द चंड परचंड तिखी धार खण्डा, खड़ग इक्को इक्क रखाइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे जेरज अंडा, उत्भुज सेतज फोल फुलाइंदा। सतिगुर शब्द पाए वंडा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बंधन पाइंदा। सतिगुर शब्द आदि जुगादि जुग जुग तोड़े घमंडा, गढ़ हँकारी बुरज ढाहिंदा। सतिगुर शब्द कलिजुग अन्त सृष्ट सबाई सुणाए साचा छन्दा, सोहँ ढोला इक्क अलाइंदा। सतिगुर शब्द बणाए साचा बन्दा, बन्दगी इक्को इक्क दृढ़ांइंदा। सतिगुर शब्द लेखे लाए गंदा, मूर्ख मूढ़ चतुर सुजान बणाइंदा। सतिगुर शब्द सर्ब जीआं दा इक्को धन्दा, इक्को राह जणाइंदा। सतिगुर शब्द वेखणहारा भुक्खा नंगा, भुखयां नंगयां माण दिवाइंदा। सतिगुर शब्द बस्ता बंनु किसे ना टंगा, बन्द संदूक ना कोई कराइंदा। सतिगुर शब्द आदि जुगादि जुग जुग निरगुण हो के वज्जा, साज बाज ताल ना कोई रखाइंदा। सतिगुर शब्द घर घर अन्दर फिरे भज्जा, औंदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। सतिगुर शब्द गुरमुख हिरदे बह बह सजा, घर सच्चा इक्क सुहाइंदा। सतिगुर शब्द बुढ्ढा नढ्ढा ना कोई बच्चा, जवान रूप ना कोइ बदलाइंदा। सतिगुर शब्द किसे घड़या ना जाए विच्च संचा, घाड़त घड़त ना कोई वखाइंदा। सतिगुर शब्द जुग चौकड़ी कदे ना होए कच्चा, काची माटी काया रंग चढ़ाइंदा। सतिगुर शब्द सदा सदा सद सच्चा, साची सिख्या इक्क दृढ़ांइंदा। सतिगुर शब्द सभ दी करे रिछा, प्रितपालक नाउँ धराइंदा। सतिगुर शब्द निरगुण सरगुण माण दिवाए जट्ट धन्ना, धन इक्को इक्क वखाइंदा। सतिगुर शब्द राग सुणाए सच्चा कन्नां, काण सभ दी मेट मिटाइंदा। सतिगुर शब्द करे प्रकाश नेत्र अंनु, अज्ञान अन्धेर मुकाइंदा। सतिगुर शब्द भोग लगाए नामा छन्ना, छन्न छपरी आप सुहाइंदा। सतिगुर शब्द बिन भगतां किसे कोलों ना मन्ना, मनसा पूर ना कोई कराइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे राह चलाइंदा।

सतिगुर शब्द गूड़ो गूड़, गहर गम्भीर अखवाईआ। सतिगुर शब्द नूरो नूर, नूर नूर रुशनाईआ। सतिगुर शब्द सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सभ ठाईंआ। सतिगुर शब्द ना नेड़े ना दूर, घट घट आसण लाईआ। सतिगुर शब्द सदा सद आसा पूर, पूरी आस कराईआ। सतिगुर शब्द जुग जुग प्रगटे ज़रूर, ज़रूरत इक्को इक्क जणाईआ। सतिगुर शब्द पूरब बख्शे सर्ब कसूर, अग्गे मार्ग लाईआ। सतिगुर शब्द नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द मेट मिटाए हंगता ग़रूर, गुरबत कोई रहण ना पाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादि जुग जुग होया रिहा मफ़रूर, बिन भगतां आपणेअन्दर बन्द ना कोई कराईआ। हरि का शब्द देवे सच शऊर, शुहरत इक्को इक्क वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को नाम सिफ्त सालाहीआ।

सतिगुर शब्द सदा अनमुल, अनमुलड़ा आप बणाइंदा। सतिगुर शब्द सदा अनतुल, तोल विच्च कदे ना आइंदा। सतिगुर शब्द धुरदरगाही फुल, दो जहान महकाइंदा। सतिगुर शब्द पुरख अकाल दी कुल्ल, कुलवन्ता नाउँ धराइंदा। सतिगुर शब्द बूटा कदे ना जाए हुल, फुल फुलवाड़ी आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द आप दृढ़ांइंदा।

सतिगुर शब्द सतिगुर जिहा, जेही कार कमाईआ। सतिगुर शब्द सतिगुर नेंहा, नेंह इक्को

इक्क समझाईआ। सतिगुर शब्द सतिगुर मेंहां, मेघला इक्को धार बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दए वडयाईआ।

सतिगुर शब्द सच्चा राम, राम राम मिलाइंदा। सतिगुर शब्द सच पैग़ाम, पीर पैगम्बर रंग रंगाइंदा। सतिगुर शब्द जुग जुग पूरन करे काम, पूरी आसा पूर वखाइंदा। सतिगुर शब्द कलिजुग अन्तम लै के आए पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आप समझाइंदा। सतिगुर शब्द बदल दए नज़ाम, हाकम इक्को नज़री आइंदा। सतिगुर शब्द भूपत भूप बण राजान, हुक्म हाकम इक्क वडिआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द आप वडिआइंदा। सतिगुर शब्द सर्ब कला समरथ, समरथ आप प्रगटाइंदा। सतिगुर शब्द कलिजुग अन्त महिमां गणाए अकथ्थ, कथनी कथ ना कोई सुणाइंदा। सतिगुर शब्द जन भगतां देवे अगम्मी वथ, वस्त इक्को इक्क वरताइंदा। सतिगुर शब्द आत्म परमात्म मार्ग देवे दस्स, सन्त सज्जण मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द गुरमुख हिरदे जाए वस, दूई द्वैती पर्दा लाहिंदा। सतिगुर शब्द गुरमुखां देवे इक्को रस, रस फीका सर्ब गवाइंदा। सतिगुर शब्द हरिजन मेल मिलाए हस्स हस्स, आप आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर शब्द कलिजुग अन्तम हो प्रगट, परम पुरख भेव चुकाइंदा। इक्को विके पुरख अकाल दे हट्ट, दूजा वणज ना कोई कराइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण सरगुण सति सरूप मार्ग दए दस्स, अनभव प्रकाश इक्को नूर जणाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, ग़रीब निमाणयां वसे साथ, बोध अगाध सुणाए गाथ, भेव अभेदा आप जणाइंदा। निरवैर चलाए राथ, पार लगाए आपणे घाट, कलिजुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाइंदा। सतिगुर शब्द पुच्छे वात, कूड़ी क्रिया रहे ना नार कमज़ात, जन भगतां पूरी करे ख़ाहश, ख़ाहश आपणी नाल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द लेखे लाए पवण स्वास, आत्म परमात्म दए विश्वास, पारब्रह्म ब्रह्म वेखे आपणी शाख़, शनाख़त इक्को इक्क समझाइंदा। सतिगुर शब्द सदा अबिनाश, जुग चौकड़ी खेले खेल तमाश, मण्डल मंडप पावे रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। सतिगुर शब्द कलिजुग अन्त करे प्रकाश, नूरो नूर नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द आप वडिआइंदा।

सतिगुर शब्द वड्डा बल, बल बावन भेव चुकाईआ। सतिगुर शब्द अछल अछल्ल, वल छल आपणा खेल रचाईआ। सतिगुर शब्द वसे धाम अट्टल, अट्टल महल्ल इक्क रुशनाईआ। सतिगुर शब्द करे वेस कलिजुग कल, कल कालख पड़दा लाहीआ। सतिगुर शब्द सति सरूप धार गिआ रल, जोती जोत जोत समाईआ। सतिगुर शब्द सच संदेसा रिहा घल्ल, नर नरेशा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द पुठी लाहे खल्ल, मनसूर सूली उत्ते चढ़ाईआ। सतिगुर शब्द करे खेल घड़ी घड़ी पल पल, पलक सके ना कोई बदलाईआ। सतिगुर शब्द जन भगत दवारा बैठा मल्ल, महिफल इक्को गुण दरसाईआ। हरि शब्द सतिगुर शब्द गुर शब्द शब्द गुर इक्को वजाए नाद अट्टल, अट्टल इक्को राग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, शब्द इक्को इक्क प्रगटाईआ।

सतिगुर शब्द सोहँ सो, सति सतिजुग राह चलाइंदा। सतिगुर शब्द निरगुण निर्मोह, कूड़ी मुहब्बत ना कोई रखवाइंदा। सतिगुर शब्द वसे ब्रह्मण्ड खण्ड लोअ, पुरी आकाश आसण लाइंदा। सतिगुर शब्द सतिगुर जिहा हो, होका आपणे नाम सुणाइंदा। सतिगुर शब्द धुर

दा ढोआ लै के आए ढो, ढोलक इक्को इक्क रखवाइंदा। हरि का शब्द भेव ना जाणे को, कलिजुग जीव काग वांग कुरलाइंदा। कूड़ी सेजा गए सो, सोया मात ना कोई उठाइंदा। वेले अन्तम पए रो, रोंदयां चुप्प ना कोई कराइंदा। जो सतिगुर शब्द सुरती जाए छोह, शहनशाह आपणा मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द अमृत मेघ देवे चो, निझर रस इक्क वखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिगुर शब्द इक्क उठाइंदा।

सतिगुर शब्द इक्क उठावेगा। साचा नाद वजावेगा। ब्रह्म ब्रह्माद सुणावेगा। लोक परलोक हलावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव इक्को सलोक अलावेगा। लक्ख चुरासी देवे झोक, झोक ना शुकर मनावेगा। जन भगतां तन नगारे लाए चोट, डंका नाम वजावेगा। मन वासना कछु खोट, कूड़ी क्रिया मेट मिटावेगा। जन्म कर्म दा मेटे रोग, धुर संजोग मेल मिलावेगा। वेखणहारा चौदां लोक, चौदां तबकां फोल फुलावेगा। देवणहारा साची मोख मुफ़त आपणा नाम वरतावेगा। ना कोई हरख़ ना कोई सोग, चिन्ता दुक्ख सर्ब गवावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , देवणहारा साचा वर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, इक्को शब्द गुरू प्रगटावेगा। इक्को शब्द सतिगुर उठेगा। दो जहानां लुटेगा। कूड़ी क्रिया जड़ पुट्टेगा। जन भगतां उपर तुठेगा। लोकाया किसे कोलों ना लुकेगा। शेर हो के बुक्केगा। सन्त सुहेले गोदी चुकेगा। मनमुख मूढ़े शौह दरयाए सुट्टेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, शब्द गुर गुर शब्द उजल मुख रक्खेगा। (२८ माघ २०१६ बि)

सतिगुर शब्द साची बाणी, बाण इक्क लगाइंदा। सतिगुर शब्द सच्चा हाणी, हाणीआं मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द अकथ्थ कहाणी, कह कह आप सुणाइंदा। सतिगुर शब्द धुर निशानी, सच निशाना इक्क जणाइंदा। सतिगुर शब्द अमृत पाणी, मिट्ठा ठंडा रस इक्क वखाइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे चारे खाणी, भेव अभेदा आप जणाइंदा। सतिगुर शब्द सेवा लाए चारे बाणी, हुक्म हाकम इक्क समझाइंदा। सतिगुर शब्द सुरत परनाए निरगुण राणी, आप आपणा बंधन पाइंदा। सतिगुर शब्द घट घट होए जाण जाणी, गृह गृह खोज खुजाइंदा। सतिगुर शब्द खेल महानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द इक्को इक्क वडिआइंदा।

सतिगुर शब्द सच्चा राग, रागी गा ना सके राईआ। सतिगुर शब्द सच आवाज़, धुरदरगाही आप सुणाईआ। सतिगुर शब्द सच्चा समाज, कूड़ी वंड ना कोई वंडाईआ। सतिगुर शब्द सच जहाज़, गुरमुख सज्जण लए चढ़ाईआ। सतिगुर शब्द सद रक्खे लाज, सदा सदा होए सहाईआ। सतिगुर शब्द सच्चा बाज, उडारी इक्को इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द सिफ्त सालाहीआ।

सतिगुर शब्द सदा सुच्चा, सूखम रूप जणाइंदा। सतिगुर शब्द सदा उच्चा, साचे घर सोभा पाइंदा। सतिगुर शब्द सदा रुझा, लक्ख चुरासी अन्दर सेव कमाइंदा। सतिगुर शब्द गुरमुख विरले बुझा, जिस आपणा भेव खुल्ह़ाइंदा। सतिगुर शब्द गुरसिख सज्जण सुझा, जिस आपणा पड़दा लाहिंदा। सतिगुर शब्द भेव खुल्ह़ाए गुज्झा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। सतिगुर शब्द

सन्त सुहेले सुझा, सूझी इक्को इक्क वरवाइंदा । सतिगुर शब्द लेखा जाणे जुग जुगा, जुगन्तर आपणा राह जणाइंदा। सतिगुर शब्द कदे ना मुक्का, अतोट अतुट वरताइंदा। सतिगुर शब्द कदे ना रुखा, नाम वस्तू नाल रलाइंदा । सतिगुर शब्द कदे ना भुक्खा, भुक्खयां भुक्ख मिटाइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाल मिलाइंदा।

सतिगुर शब्द सदा सोहणा, सुहञ्जणा आपणे विच्च समाईआ। सतिगुर शब्द सदा मोहणा, मोहणी रूप वटाईआ। सतिगुर शब्द सदा अनहोणा, अणहुंदी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द सदा गौणा, गा गा शुकर मनाईआ। सतिगुर शब्द गुरमुख सच्चे पौणा, प्रेम प्रीती इक्क वधाईआ। सतिगुर शब्द जन हिरदे इक्क वसौणा, इक्क ध्यान लगाईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा ताल वजाईआ। सतिगुर शब्द ताल तलवाड़ा, नज़र किसे ना आइंदा। सतिगुर शब्द लेखा जाणे बहत्तर नाड़ा, तन्दी तन्दी रबाब जणाइंदा। सतिगुर शब्द काया परभास वेखणहार अखाड़ा, डूंघी कंदर सोभा पाइंदा । सतिगुर शब्द होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूंघे सागर सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। सतिगुर शब्द करे कराए साची कारा, किरती आपणी किरत कमाइंदा। सतिगुर शब्द सर्ब जीआं दा इक्को नाअरा, अक्खर वंड ना कोई वंडाइंदा। सतिगुर शब्द सच्चा नगारा, निगहबान आप वजाइंदा। सतिगुर शब्द सच हुलारा, दो जहानां आप वखाइंदा। सतिगुर शब्द सदा प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, परम पुरख मेल मिलाइंदा।

सतिगुर शब्द साची रंगत, इक्को रंग वखाईआ। सतिगुर शब्द नाता तोड़े भुक्ख नंगत, भुखयां भुक्ख मिटाईआ। सतिगुर शब्द गढ़ तोड़े हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक्क दरसाईआ। सतिगुर शब्द हरिजन लाए अंग अञ्जण, अंगीकार इक्क कराईआ। सतिगुर शब्द दूजे दर ना जाए मंगत, मंगता रूप ना कोई वखाईआ। सतिगुर शब्द बोध अगाधा पंडत, जीव जंत सर्ब पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द सदा अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोई कराईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाईआ।

सतिगुर शब्द गहर गम्भीरा, गवर आपणी खेल कराइंदा। सतिगुर शब्द माण दवाए कबीरा, जोलाहा आपणे घाट वखाइंदा। सतिगुर शब्द लेखे लाए कसीरा, रविदास चुमार आप वडिआइंदा। सतिगुर शब्द कट्टे ज़ंजीरा, जम की फासी तोड़ तुड़ाइंदा। सतिगुर शब्द ज़ाहर पीरा, नूर नूराना नज़री आइंदा। सतिगुर शब्द चोटी चढ़े अख़ीरा, मंज़ल आपणी इक्क दरसाइंदा। सतिगुर शब्द बेनज़ीरा, नज़र सभ दी आप बदलाइंदा। सतिगुर शब्द बदलणहारा तकदीरा, रेख भेख आप जणाइंदा। सतिगुर शब्द देवणहारा ठांडा सीरा, सीर अमृत रूप वटाइंदा। सतिगुर शब्द कट्टणहारा भीड़ा, औझड़ राह ना कोई पाइंदा। सतिगुर शब्द चुक्कणहारा बीड़ा, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। सतिगुर शब्द सोहणा सुच्चा नग नगीना हीरा, जड़त आपणे विच्च रखवाइंदा। सतिगुर शब्द सदा सदा इक्को चीरा, जन भगतां सिर बंधाइंदा। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे हुक्म चलाइंदा।

सतिगुर शब्द हुक्म हाकम इक्को इक्क जणाईआ। सतिगुर शब्द ब्रह्म आत्म, परमात्म मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द उत्तम ज़ातम, जीव जंत जुगत जणाईआ । सतिगुर शब्द इक्को

राह जणाए धर्म सनातन, सति सति इक्क दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द खेल करे बातन, बेपरवाह बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द मेल मिलाए पुरख अबिनाशन, अबिनाशी रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पृथ्मी आकाशन दए वडयाईआ।

सतिगुर शब्द साचा सोहला, सति सतिवादी आप जणाइंदा। सतिगुर शब्द चुकाए पड़दा उहला, द्वैती रूप ना कोई वखाइंदा। सतिगुर शब्द चुक्के अन्तम डोला, डोली आपणे कंध उठाइंदा। सतिगुर शब्द बण विचोला, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दोहां घर फेरा पाइंदा। सतिगुर शब्द जुग जुग पाए रौला, भगतां आप जगाइंदा। सतिगुर शब्द जुग जुग खेले होला, रत्ती रत्त नाल रंगाइंदा । सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच झकोला इक्क जणाइंदा।

सतिगुर शब्द सदा गभ्भरू, बल आपणा आप रखवाईआ। सतिगुर शब्द सदा वजाए डब्बरू, डंका आपणे हत्थ रखवाईआ। सतिगुर शब्द अञ्जण कमाया अमरू, रामदास मिली वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द शब्द शनवाईआ।

सतिगुर शब्द साची ग़रज़न, गरज इक्को इक्क जणाइंदा। सतिगुर शब्द पाया गुर अरजन, दोए जोड़ अर्ज़ वास्ताा पाइंदा। सतिगुर शब्द पूरा करे फ़र्ज़न, ग्रन्थ पन्थ राह चलाइंदा। सतिगुर शब्द जुग जुग कूड़ी क्रिया आए वरजण, सच सच्चा राह जणाइंदा। सतिगुर शब्द हउमें हंगता मेटे मरज़न, मरीज़ गुरमुख आप बचाइंदा। सतिगुर शब्द जुग जुग दा लाहे कज़न, मकरूज़ आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर शब्द कोई होण ना देवे हर्जन, हाजत भगतां पूर कराइंदा। सतिगुर शब्द मेल मिलाए आदि निरञ्जण, नर नरायण गले लगाइंदा। सतिगुर शब्द सदा दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराइंदा। सतिगुर शब्द इक्को नेत्र अंजण, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। सतिगुर शब्द काया माटी करे कंचन, कंचन पारस नाल छुहाइंदा। सतिगुर शब्द हरि का बचन, भगवन्त भगत बच्चयां आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द आप सालाहिंदा।

सतिगुर शब्द सदा सद नीवां, नीचों नीच नीच अखवाईआ। सतिगुर शब्द हर घट वसे जीवां, जीव जीव करे कुड़माईआ। सतिगुर शब्द नाता तुड़ाए साढे तिन्न हत्थ सीवां, त्रै त्रै अगन ना लागे राईआ। सतिगुर शब्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को घर वखाईआ।

सतिगुर शब्द इक्क दरवाज़ा, घर सच्चा सच दृढ़ांइंदा। सतिगुर शब्द ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। सतिगुर शब्द गुरसिख कहे आ जा, सद्दा नाम इक्क जणाइंदा। सतिगुर शब्द फिरे भाजा, अन्दर बाहर खोज खुजाइंदा। सतिगुर शब्द बण राजन राजा, गृह साचा हुक्म मनाइंदा। सतिगुर शब्द अगम्मी वाजा, सुर ताल ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द इक्क रखाइंदा।

साचा शब्द सुणावांगा। अगम्मी राग अलावांगा। सारंग सारंगा ना कोई वखावांगा। अनरंगा रंग चढ़ावांगा। मरदंगा इक्क वजावांगा। सुरती सोई आप उठावांगा। अकाल मूरती नज़री आवांगा। तुरती नाद इक्क अलावांगा। आसा पूरती पूरी आस करावांगा। बण जवान लंघां मूहर दी, मुख आपणा आप दिखलावांगा। एह गल्ल नहीं कोई ग़रूर दी, गुर गुरबत

सभ दी मेट मिटावांगा। एह खेल हाज़र हज़ूर दी, जो करनी कर वखावांगा। खेल चुक्के नेड़ दूर दी, तुरत गुरमुख आपणी गोद बहावांगा। कहाणी अकथ्थ भरपूर दी, भरम सभ दे मेट मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को नाद वजावांगा। इक्को नाद वज्जेगा। कूड़ कुड़यारा भज्जेगा। काल कलंदर नच्चेगा। गुरमुख विरला बचेगा। जिस आपणा मार्ग दस्सेगा। घर मन्दर बह बह हस्सेगा। हरि सरन सरनाई वसेगा। अमृत रस चक्खेगा। प्रभ सरनी आ के ढठ्ठेगा। लहणा चुके पत्थर वट्टे दा। लेखा जाणे कट्टे वच्छे दा। जट्ट हो के जट्ट रक्खेगा। फट्ट हो के फट्ट वज्जेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दस्सेगा।

एका नाम दसाएगा। चार वरन समझाएगा। शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश मेल मिलाएगा। आत्म ब्रह्म सर्ब वखाएगा। कर्म कांड मिटाएगा। आंढ गवांढ उठाएगा। आपणा सारंग वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी जीव जंत इक्को राहे लाएगा। इक्को राह लग्गेगा। दीपक जोती इक्को जगेगा। होवे खेल सूरे सर्बग्गे दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, सतिगुर शब्द शब्द गुर सतिगुर गुर सतिगुर शब्द गजेगा।

सतिगुर शब्द गूंजेगा। जन भगतां अत्थरू पूंझेगा। कूड़ी क्रिया किरकट हूंझेगा। सच प्रीती कर के झूझेगा। लक्ख चुरासी विच्चों आपणे भगत आपे बूझेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा चुकाए एका दूजे दा। (२८ माघ २०१६ बि)

सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादि समरथ। सतिगुर सच्चा जाणीए, महिंमा जुग जुग अकथ्थ। सतिगुर सच्चा जाणीए, निरगुण सरगुण चलाए रथ। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम निधाना देवे वथ। सतिगुर सच्चा जाणीए, कूड़ विकारा देवे मथ। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दर्शन सगल वसूरे जाण लथ्थ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी जिस दी महिंमा सदा अकथ्थ।

सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी गहर गम्भीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो निरगुण निरवैर बेनज़ीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो शहनशाह पीरां दा पीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दी खिच्च ना सके कोई तस्वीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो अन्तर निरंतर देवे धीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो अमृत बख्शे सीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो झगड़ा मेटे शाह हकीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक गुणी गहीर।

सतिगुर सच्चा जाणीए, एका एक श्री भगवन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी धुर दा कन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा इक्को नाम निधाना मंत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दी महिंमा सदा अगणत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो हरिजन बणाए सन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो गढ़ तोड़े हउमे हंगत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो मेल मिलाए भगतां संगत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो बोध अगाधा होए पंडत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी तोड़े हउमे हंगत।

सतिगुर सच्चा जाणीए, परम पुरख किरपाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, दीनां बंधप दीन दयाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोत जगाए बेमिसाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो आपणी गोदी लए सवाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाता तोड़े काल महांकाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, गुरमुख उठाए आपणे बाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, लक्ख चुरासी विच्चों करे बहाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन सच करे प्रितपाल।

सतिगुर सच्चा जाणीए, देवे घर सुहञ्जणा। सतिगुर सच्चा जाणीए, चरन धूड़ कराए मज़ना। सतिगुर सच्चा जाणीए, नेत्र नाम पाए अञ्जणा। सतिगुर सच्चा जाणीए, दर्द दुःख होए भय भञ्जणा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो देवे सच अनन्दना। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो इक्क जणाए छन्दना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सच कराए बन्दना।

सतिगुर सच्चा जाणीए, जो इक्क जणाए इक्क इकल्ला धुर दा साकी। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लहणा देणा देवे बाकी। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो बन्द किवाड़ा खोल्हे ताकी। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो भाग लगाए काया माटी खाकी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्को पुच्छे वाती।

सतिगुर सच्चा जाणीए, धाम वखाए निहचल। सतिगुर सच्चा जाणीए, बेड़ा पार कराए जल थल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल।

सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी आप। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो जन भगतां होए माई बाप। सतिगुर सच्चा जाणीए, त्रैगुण मेटे ताप। सतिगुर सच्चा जाणीए, रोग सोग गवाए सन्ताप। सतिगुर सच्चा जाणीए, लेखा रहण ना देवे पाप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका सच जपाए जाप।

सतिगुर सच्चा जाणीए, अबिनाशी अचुत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लेखा जाणे काया पंज भुत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस सचखण्ड टिकाया बचन सिँघ लछमण सिँघ दा सुत्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सुहञ्जणी करे रुत्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखे लाए काया बुत्त।

सतिगुर सच्चा जाणीए, हरि शहनशाह शाबाश। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो भगतां पूरी करे आस। सतिगुर सच्चा जाणीए, गुरमुख सचखण्ड दवार दए निवास। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो हरिजन सन्त सुहेले भेजे पाल सिँघ दे पास। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो गुरमुख पन्ध मुकाए पृथ्मी अकाश। सतिगुर सच्चा जाणीए, मानस जन्म कराए रहिरास। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो भगतां बदले लोकमात आवे खास। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो बंस सरबंस होण ना देवे उदास। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लहणा देणा मेटे शंकर कैलाश। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन वखाए आपणा सच्चा घर बाहर, जिथ्थे इक्को पए रास। (२६ मध्घर श सं ११ लछमण सिँघ दे गृह)

सतिगुर सच्चा जाणीए, जो आदि जुगादी एक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन भगतां देवे साची टेक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो बुध करे बिबेक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सुरती शब्दी नाल करे नेक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो आत्म परमात्म कराए हेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कूड़ी क्रिया करे खेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो दर्शन देवे नेतन नेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो अन्तर अन्तश्करन खोल्हे भेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचा लए चेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी एकँकारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, ब्रह्म ब्रह्माद जो वेखणहारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, दो जहानां पावे सारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, लक्ख चुरासी वेखे वेखणहारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन भगतां करे प्यारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा इक्को नाम जैकारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा अवतार पैगम्बर गुर देण सहारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा नूर जोत उजिआरा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो शब्दी नाद दए धुनकारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा आदि जुगादि पसारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा अवतारा। (२६ मध्घर श सं ११ गूड़ा राम दे गृह)

सतिगुर सच्चा जाणीए, परम पुरख सुलतान। सतिगुर सच्चा जाणीए, वाली दो जहान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा सतिगुर शब्द बलवान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो अवतारां देवे दान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो पैगम्बरां कलमा दए महान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो गुरू गुरदेव करे परवान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो वेखणहारा ज़िमीं असमान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो त्रैगुण पंज तत्त करे प्रधान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लक्ख चुरासी करे ध्यान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा इक्को नाम निधान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा रूप अनूप महान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो जुग जुग करे कलयान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कलिजुग अन्त होवे प्रधान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कूड़ी क्रिया मेटे निशान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नौजवान। (२६ मध्घर श सं ११ रोशन लाल दे गृह)

सतिगुर सच्चा जाणीए, सो पुरख निरञ्जण मीता । सतिगुर सच्चा जाणीए, हरि पुरख निरञ्जण त्रैगुण अतीता । सतिगुर सच्चा जाणीए, एकँकारा ठांढा सीता। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि निरञ्जण धुर दा मीता। सतिगुर सच्चा जाणीए, अबिनाशी करता बदलणहारा रीता । सतिगुर सच्चा जाणीए, श्री भगवान पतित पुनीता। सतिगुर सच्चा जाणीए, पारब्रह्म प्रभ आपे जाणे आपणा कीता। सतिगुर सच्चा जाणीए, सतिगुर शब्द सदा सदा अनडीठा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो देवे नाम रस मीठा। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि अन्त दए ना पीठा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सड़या नहीं गोबिन्द वाले अंगीठा । उह सतिगुर

कलिजुग अन्त पछाणीए, जो भगतां चाढ़े रंग मजीठा। आत्म परमात्म मेल मिलावे हाणीआं, मिट्ठा करे कौड़ा रीठा। दो जहानां बण के शाह सुलतानीआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी धुर दा मीता।

सतिगुर सच्चा जाणीए, शब्द गुरू गुरदेव। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी निहकेव। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो वसे निहचल धाम निहकेव। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो जुग जुग भगतां करे सेव। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो देवे नाम रस मेव। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी अलक्ख अभेव।

सतिगुर सच्चा जाणीए, नूर नुराना नूर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सदा सदा हज़ूर। सतिगुर सच्चा जाणीए, सर्ब कला भरपूर। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी योधा सूर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो आसा मनसा करे पूर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो वसे कदे ना नेड़े दूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी मसती दए सरूर।

सतिगुर सच्चा जाणीए, जोधा सूरबीर बलवन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी अगम्मा कन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, परम पुरख भगवन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दी महिंमा सदा अनन्त । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच चाढ़े रंग बसन्त।

सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कलिजुग अन्त सुहाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो जोती जाता वेस वटाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो शब्द नाद दृढ़ाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो भगत सुहेले मात उठाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जुग विछड़े मेल मिलाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, फड़ बाहों गोद टिकाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो घर घर होए सहाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लहणा देणा पूरब झोली पाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कन्ढ्ढी घाटां वेख वखाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो गरीब निमाणयां गले लगाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सतिजुग लेखा कलिजुग पूर कराए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन हो के आपणे रंग रंगाए। (२६ मध्घर श सं ११ कृष्ना देवी)

सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जाता आदि जुगादि। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो वसणहारा ब्रह्म ब्रह्माद। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम सुणाए अनहद नाद। सतिगुर सच्चा जाणीए, सति सच देवे साची दाद। सतिगुर सच्चा जाणीए, कूड़ विकार मेटे विवाद। सतिगुर सच्चा जाणीए, तन वजूदां देवे साध। सतिगुर सच्चा जाणीए, मेहरवान मोहण माधव माध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जो वसणहार बाहर सुन्न समाध।

सतिगुर सच्चा जाणीए, धुर दा परवरदिगार। सतिगुर सच्चा जाणीए, नूर अलाही सांझा यार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सूफी बणाए बरखुरदार। सतिगुर सच्चा जाणीए, रहबर

होवे विच्च संसार। सतिगुर सच्चा जाणीए, मेल मिलाए आपणी धार। सतिगुर सच्चा जाणीए, कलमा दए अपर अपार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कढ्ढे बाहर विच्चों डूंघी ग़ार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाहो भूप सच्ची सरकार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा आदि जुगादी धरम। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो भेव खुल्ह़ाए ब्रह्म। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लेखा जाणे कांड कर्म। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोबनवन्ता इक्क जो भाग लगाए काया माटी चरम। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन भगतां लेखे लाए जरम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी मालक धुर परम।
सतिगुर सच्चा जाणीए, जो प्रेम प्रीती बख्शे सिक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो निरगुण धारा करे हित। सतिगुर सच्चा जाणीए, पारब्रह्म अबिनाशी अचित। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो खेले खेल नवित्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो भगतां करे सुहंझणी थित। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी पित। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखे लाए तन वजूदी रित। (३० मध्घर श सं ११ खेमो देवी दे गृह)

सतिगुर सच्चा जाणीए, देवे सति सन्तोख। सतिगुर सच्चा जाणीए, बख्शे साची मोख। सतिगुर सच्चा जाणीए, मेटे हरख़ सोग़। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम चुगाए धुर दी चोग। सतिगुर सच्चा जाणीए, मेटे जन्म कर्म विजोग। सतिगुर सच्चा जाणीए, आत्म परमात्म करे संजोग। सतिगुर सच्चा जाणीए, देवे दरस अमोघ। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी रसीआ होवे आत्म भोग।
सतिगुर सच्चा जाणीए, परम पुरख बिधाता। सतिगुर सच्चा जाणीए, आत्म परमात्म जोड़े नाता। सतिगुर सच्चा जाणीए, अमृत बूंद प्याए। स्वांता। सतिगुर सच्चा जाणीए, देवे दरस इक्क इकांता। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन्म कर्म दा लेखा मेटे खाता। सतिगुर सच्चा जाणीए, अन्तम अन्त पुछे वाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा बूंद स्वांता। (३० मध्घर श सं ११ कुलवन्त सिँघ दे गृह)

सतिगुर सच्चा जाणीए, होवे सतिगुर धुर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जाता बणे गुर। सतिगुर सच्चा जाणीए, शब्द नाद सुणाए सुर। सतिगुर सच्चा जाणीए, प्रकाश करे अन्धेर घुर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो अन्तर आत्म नाल पए तुर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक मन मनसा मेटे असुर।

सतिगुर सच्चा जाणीए, देवे साची बुद्ध। सतिगुर सच्चा जाणीए, हरिजन निर्मल करे बुद्ध। सतिगुर सच्चा जाणीए, माण दवाए उत्ते बसुध। सतिगुर सच्चा जाणीए, पंच विकारा मेटे युद्ध। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा दवारा जाए सुझ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे आथण उग।

सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी शक्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो वेखे आपणी धार भगत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सुहंझणा करे वक्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लेखे लावे बूंद रकत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो पार कराए दीन दुनी विच्चों हरिजन साचे फकत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे बूंद रकत। (३० मध्घर श सं ११ बिशन सिँघ दे गृह)

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, इक्क इकल्ला एकँकार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, सचखण्ड निवासी परवरदिगार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दो जहानां पावे सार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, धरनी धरत करे पसार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लक्ख चुरासी दए अधार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग जुग लए अवतार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आत्म परमात्म मेला मेले कन्त भतार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शब्द अनाद दए धुंनकार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अमृत बख्शे ठंडा ठार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, भगत सुहेले लए उभार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लोकमात बणे मीत मुरार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाहो भूप सच्चा सिकदार। (३० मध्घर श सं ११ जलंधर सिँघ दे गृह)

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जाता कमलापाती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, खेले खेल लोकमाती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, देवणहारा धुर दी दाती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां अमृत बख्शे बूंद सवांती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दर्शन देवे इक्क इकांती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, वेस वटाए बहु बिध भांती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा मेटे ज़ात पाती।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, निरगुण गहर गम्भीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जिस दा रूप रंग रेख ना कोई सरीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो सभ नूं करे तामीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो अमृत रस बख्शे ठंडा सीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग जुग देवणहारा सीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दीन दुनी दी बदलणहारा ज़मीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खण्डा नाम वखाए इक्को शमशीर। (३० मध्घर श सं ११ देवा सिँघ दे गृह)

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, पूरन पुरख अबिनाशी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शहनशाह शाहो भूप शाबाशी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जाता सचखण्ड निवासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो खेले खेल पृथ्मी अकाशी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो मण्डल मंडप पावे रासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो आत्म धार करे प्रकाशी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो भगतां मेटे जन्म जन्म उदासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो जुग जुग सेवक होवे दास

दासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनहारा बन्द खुलासी।
सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आदि जुगादि तोड़े बंधना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अन्तर देवे सुख अनन्दना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नूर नुराना चाढ़े चन्दना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, सच शब्द सुणाए छन्दना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, तन वजूद चाढ़े रंगणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, मानस जन्म होण ना देवे भंगणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शाहो भूप सूरा सर्बगणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जिस भगत दवारे भगतां अन्दर लँघणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो नाता तोड़े विकार पंजणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नेत्र नाम निधाना पावे अञ्जणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दीन दयाल सदा बख्शंदणा । सतिगुर सच्चा आप प्रभ, देवणहारा परमानंदना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो उठाए आपणे कंधना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल खिलाए विच्च वरभंडणा। (३० मध्घर श सं ११ पूरन सिँघ दे गृह)

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, बेअन्त अगम्म अथाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, निरगुण निरवैर नूर अलाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आदि जुगादी बेपरवाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग चौकड़ी बणे मलाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अवतार पैगम्बरां गुरूआं देवे शब्द सलाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, सिफ्तां विच्च कराए वाह वाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लेखा जाणे थल अस्गाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां होए सहा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवा।
सतिगुर सच्चा आप प्रभ, बिन रूप रंग। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शाहो भूप सूरा सर्बंग। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नाम निधाना वजाए मरदंग। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अमृत धार वहाए अगम्मी गंग। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां अन्दर जाए लंघ। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आत्म सेज सुहाए पलंघ। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कट्टणहारा भुक्ख नंग। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हरिजन लगाए आपणे अंग। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाता सूरा सर्बंग। (३० मध्घर श सं ११ बचनो देवी दे गृह)

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, चौकड़ी जुगा जुगन्तर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, सति सति बणाए बणतर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, खेले खेल गगन गगनंतर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नाम निधान जणाए मंत्र। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां वसे सदा निरंतर।
सतिगुर सच्चा आप प्रभ, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्दा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दीन दयाल सदा बख्शंदा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, गहर गवर गुणी गहिंदा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, वस्त अमोलक नाम देंदा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां रक्खे सदा जिंदा।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवार सदा रहंदा।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, मेहरवान महबूब। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, वसे अर्श अरूज़। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हर घट दिसे मौजूद। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, मंज़ल हक दस्से मकसूद। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग जुग कूड़ी क्रिया करे नेसतो नाबूद। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नौ खण्ड पृथ्मी दस्से इक्क हदूद। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग मेटणहारा दूज़।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, सचखण्ड निवासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत नूर प्रकाशी अन्तर घट निवासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो लेखा जाणे शंकर कैलाशी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, भगतां अन्दरों मेटे उदासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आपे होए नाम स्वासी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहनशाह शाहो शाबाशी। (३० मध्घर श सं ११ सवरनो देवी दे गृह)

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नित नवित्त सदा बख्शंदू। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, ठाकर स्वामी सागर सिंधू। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जीव जंत वेखे आपणी बिन्दू। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो खेल खिलाए मुस्लिम हिंदू। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साहिब गुणी गहिंदू।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नौजवाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शाह सुलताना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, मर्द मरदाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, वाली दो जहानां। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग जुग पहरे बाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कलिजुग अन्त होए प्रधाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हरिजन वेखे विच्च जहाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, भगत सुहेले बख्शे चरन ध्याना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आत्म जोती बणे काहना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा आप प्रभ, बिन मंगयां देवे दाना।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शमअ नूर जोत रुशनाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, खेले खेल सदा बिधनाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दीन दुनी बदले ज़माना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लेखा जाणे ज़मीं असमाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी करता करता पुरख भगवाना।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, चोटी चढ़ के वेखे सिखर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, पर्दा लाहे बज़र कपाटी पत्थर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नेत्र विरोलण ना देवे अथ्थर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, भगतां सेज हंढाए सत्थर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा शब्द जणाए अकथ्थी कथन।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, बिन तत्तां तत्त सरीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शाह पीरां दा पीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दर दरवेशी फकीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नज़रीए बाहर दिसे बेनज़ीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां बदल देवे तकदीर।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, एका एक बेपरवाहिआ। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लेखा जाणे थाउँ थांइआ। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, रचन रचाए त्रैगुण माया। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां होए आप सहाया। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हरिजन गोदी लए उठाया। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाया। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कलिजुग अन्तम लए तराया । सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे उथे दो जहान शाहो भूप भूप सुलतान, करनी दा करता इक्क अखवाया। (३० मघ्घर श सं ११ बलबीर सिँघ अंर्गेज़ सिँघ दे गृह)

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, मालक ब्रह्मण्ड खण्ड त्रै भवण। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लेखा जाणे लक्ख चुरासी स्वास पवण। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अमृत मेघ निराला बख्शे सवण। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो वसे कूटे चारे चवन। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लहणा देणा मेटे ज़ात वरन। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दो जहानां वाली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, फल वेखणहारा चुरासी लक्ख डाली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, त्रैगुण माया तोड़े जगत ज़ंजाली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, भेव खुल्ह़ाए पुरख अकाला आप हाली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी काली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जिस दा लहणा देणा मशरक मगरब जनूबण दिसे शमाली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे रिहा भाली।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, निरगुण निराकार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, वसणहार सच सच्चे दरबार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कलिजुग अन्तम होवे ज़ाहर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कल कलकी लए अवतार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नाम शब्द करे जैकार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच वस्त देवे आप करतार।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कुदरत कादर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां देवे दरगाह आदर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दो जहानां बणे पिदर मादर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हरिजन करे जगत उजागर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, भाग लगाए काया गागर । सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाहो भूप दाता दानी वणज कराए धुर दा बण सौदागर।

सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दिता तन वजूद। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो असल नाल चुकाए सूद। सतिगुर सच्चा जाणीए, सुत्यां जागदयां देवे सूझ। सतिगुर सच्चा जाणीए, पर्दा लाह के बुझाए आपणी बूझ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेख मुकाए अन्तश्करन गूझ।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जाता अगम्म। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जनणी कुक्ख पए कदे ना जम्म। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, तन वजूद ना रक्खे काया माटी चंम। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लेखा जाणे आत्म धार ब्रह्म। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग जुग प्रगटाए

धुर दा धरम। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दीन दुनी दा मेटणहारा भरम। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा जाणे साचा कर्म।
सतिगुर सच्चा जाणीए, कारज करे सिध । सतिगुर सच्चा जाणीए, मेल मिलाए आपणी बिध। सतिगुर सच्चा जाणीए, घर देवे नौ निध। सतिगुर सच्चा जाणीए, तन मन अन्तर दए विध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन बणाए आपणे साचे रिंद।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, बेअन्त बेऐब। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दो जहानां सतिगुर साहिब। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अवतार पैगम्बर गुर भेजे आपणे नाइब। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आपणा खेले खेल अज़ाइब। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग जुग पूरा करे वाइद। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हरिजन रहण ना देवे अलहिद । सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां लक्ख चुरासी कट्टे कैद। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा पूरा करे फराइज़।

सतिगुर पूरा जाणीए, सतिगुर साचा शब्द। सतिगुर पूरा जाणीए, जो सभ नूं देवे अदब। सतिगुर पूरा जाणीए, जो हर घट होवे ज़ज़ब। सतिगुर पूरा जाणीए, जो झगड़ा मेटे दीन मज़ूब। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दीन दुनी कलिजुग अन्तम करे तुअज़ब।

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जगत विद्या बाहर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शब्दी शब्द होवे ज़ाहर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दो जहानां पावे सार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जाता लए अवतार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कलिजुग मेटे अन्ध अंधिआर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हरि भगत सुहेले जावे तार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, गुरमुख गुरसिख बख्शे चरन प्यार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अमृत रस देवे ठंडा ठार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लाए पार किनार।
सतिगुर सच्चा जाईए, जो धुर दा साचा सईआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी पित मईआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम चढ़ाए साची नईआ। सतिगुर सच्चा जाईए, जो लेख मुकाए राए धर्म दी वहीआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लोकमात पकड़े बहीआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो आया गोबिन्द बाद ढईआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत नूर रुशनईआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, शब्द नाद बजईआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, अमृत रस जाम पवईआ। सतिगुर सच्चा जाईए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो सई विच्च आ के भगतां दे लेखे उत्ते पाए सहीआ। (३० मध्घर श सं ११ वकील सिँघ दे गृह)

सतिगुर सच्चा हरि निरँकारा, दूसर अवर ना कोई वडयाईआ। (२३ फग्गण २०१७ बि)

सति पुरख सतिगुर पूरा श्री भगवान, आदि जुगादि समाया। गुर गुर रूप धरे जहान, निरगुण निरवैर पुरख बेपरवाहिआ। (२३ फग्गण २०१७ बि)

सतिगुर सच्चा श्री भगवान, आपणी खेल खलाइंदा। गुर सतिगुर रूप हो प्रधान, लोकमात वेस वटाइंदा। (२२ सावण २०१८ बि)

पूरन सतिगुर आप प्रभ, सभ किछ करन करावण योग। पूरन सतिगुर आप प्रभ, आदि जुगादि आत्म परमात्म मेले सच संयोग । पूरन सतिगुर आप प्रभ, अन्तर निरंतर कट्टण वाला हउमे रोग। पूरन सतिगुर आप प्रभ, गृह मन्दर अन्दर निज नेत्र देवे दरस अमोघ। पूरन सतिगुर आप प्रभ, एथे ओथे दो जहानां मेटे वियोग । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, देवे दरस अगम्म अमोघ।
सतिगुर पूरन आप है, आदी पुरख अगम्म। पूरन सतिगुर आप है, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म। पूरन सतिगुर आप है, जो आदि जुगादी मेटणहारा भरम। पूरन सतिगुर आप है, जो लेखा जाणे जीव जंत कर्म। पूरन सतिगुर आप है, जो निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण जणाए धरम। पूरन सतिगुर आप है, जिस दा जनणी कुखों होए कदे ना जरम। पूरन सतिगुर आप है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्को परम।
पूरन सतिगुर आप प्रभ, बिन तत्त वजूद सरीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो सतिगुर शब्द करे ताअमीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस दी विष्न ब्रह्मा शिव तस्वीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो निरगुण निराकार निरँकार बेनज़ीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस दा आदि अन्त ना जाणे कोई अखीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो आदि जुगादी जन भगतां देवणहारा धीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो शरअ शरीअत कट्टणहार ज़ंजीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी आदि जुगादी जुग जुग बदले ना कोई ताअमीर। (११ माघ श सं ११ अजीत सिँघ दे गृह)

पूरन सतिगुर आप प्रभ, आदि जुगादी इक्क इकल्ला। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो वसणहारा जला थला। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो आत्म धार परमात्म हो के रला। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो भाग लगाए भगतां साढे तिन्न हत्थ महल्ला। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो दूई दवैती मेटणहारा सल्ला। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जो सच संदेसा नाम निधाना रिहा घल्ला।
पूरन सतिगुर आप प्रभ, नूर नुराना नूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो हर घट हाज़र हज़ूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो मसती देवे नाम सरूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, हउमे हंगता गढ़ तोड़े गरूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो शब्द अनादी देवे तूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जन भगतां आसा मनसा करे पूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो पन्ध मुकाए नेड़े दूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जन्म जन्म दे बख्श देवे कसूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस दा

नाम कलमा अवतार पैगम्बर गुरूआं कीता मशहूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, चार जुग दे शास्त्र जिस दे मज़दूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाहो भूप सर्ब कला भरपूर।

पूरन सतिगुर आप प्रभ, हरि शाहो शहाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, सो पुरख निरञ्जण नौजवाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, हरि पुरख निरञ्जण शाह सुलताना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, एकँकार बली बलवाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, आदि निरञ्जण डगमगाना । पूरन सतिगुर आप प्रभ, अबिनाशी करता वाली दो जहाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, श्री भगवान नौजवाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, पतिपरमेश्वर खेले खेल महाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो सचखण्ड सुहाए सच टिकाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस दा थिर घर चरन कँवल महाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो सुत दुलारा शब्द करे प्रधाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो विष्न ब्रह्मा शिव प्रगटाए निशाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो त्रैगुण माया पंज तत्त खेल खिलाए जगत जहाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो चारे खाणी लक्ख चुरासी देवे दाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड गगन गगनंतर सुहाए अगम्म असथाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस दा लहणा देणा त्रैभवण ज़िमी असमाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो अवतार हो के पहरे बाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो शब्द शब्द सुणाए तराना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो अमृत रस प्रगटाए महाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो दीपक जोत जगाए बिन तेल बाती खेले खेल महाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस पैगम्बरां दिता धुर कलमा अगम्म पैग़ामा। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस गुरू गुरदेव दस्सया नामा। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस चार जुग दे शास्त्र अक्खरां नाल कीते प्रधाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो जुग जुग जन भगतां देवे माना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, साचे सन्तां वेखे मार ध्याना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, गुरमुख आपणी गोद उठाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, गुरसिखां देवे दरस गुण निधाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, मुरीद मुशर्द करे परवाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जुग चौकड़ी बदलदा जावे निशाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो कलिजुग अन्तम संदेशा देवे धुर फ़रमाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्दी धार नौजवाना मर्द मरदाना आपणा हुक्म वरताईआ। (११ माघ श सं ११ सुरजीत सिँघ दे गृह)

पूरन सतिगुर आप प्रभ, आदि जुगादी परवरदिगार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, इक्क इकल्ला एकँकार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, निरगुण सरगुण सांझा यार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत करे उजिआर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, शब्द नाद दए धुनकार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, अमृत बख्शे ठंडा ठार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, पन्ध मुकाए नौ दवार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जगत तृष्ना दए मार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, नाम निधाना दए खुमार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, लेखा जाणे अन्दर बाहर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जुग जुग भगतां दए अधार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, लक्ख चुरासी लेखा दए निवार। पूरन सतिगुर आप

प्रभ, दरगाह साची सचखण्ड बख्शे चरन प्यार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी आपणी बंने धार।

पूरन सतिगुर आप प्रभ, अलक्ख लखीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, शाहो वड परबीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो होए सहाई दीनन दीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो जन के लेखे लाए भगतां माघ महीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, प्रभ सच प्रीती दस्से मरना जीणा। पूरन सतिगुर आप प्रभ, झगड़ा मुकाए लोक तीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, हरिजन ठांढा करे सीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, गुरमुख प्यास बुझाए जिउँ जल मीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, लोकमात प्रगटाए अगम्म नगीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी हरिजन लेख मुकाए लोक तीना, त्रैगुण माया पंज तत्त आपणे लेखे लाईआ। (१४ माघ श सं ११ वकील सिँघ दे गृह)

पूरन सतिगुर मन्नणा, पारब्रह्म करतार। जिस जुग जुग बेड़ा बंनणा, बंनणहार सच्ची सरकार। जन भगतां बख्शे सच अनन्दना, चरन प्रीती अगम्म प्यार। निंम महकाए वास चन्दना, हरिजन साचे लए उबार। इक्को दस्से धुर दी बन्दना, इष्ट देव आप करतार। घर स्वामी बणे सज्जणा, हरि ठाकर मीत मुरार। जिस दा अगम्मी वज्जे नदना, आत्म दए सच्ची धुनकार। जिस दा रूप मोहिन मदना, रंग रेख तों बाहर। जो लेखे लाए आला अदना, हरिजन बणे मीत मुरार। जो भाग लगाए काया माटी बदना, पंज तत्त करे शिंगार। जिस दा इक्को दीपक जगणा, जगत जहान होए उजिआर। उह मेटणहार शरअ दी हद्दना, आप वसे हदूदां बाहर। जिस दा कीता किसे ना रद्दना, जुग जुग पावणहारा सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो लहणा देणा लेखा पूरा करे जन भगतां तत्त पंजना, पंचम मीता ठांढा सीता आपणा रंग रंगाईआ। (१४ माघ श सं ११ दलीप सिँघ दे गृह)

पूरन सतिगुर जाणीए, हरि दाता बेपरवाह। जिस दी महिंमा अकथ्थ कहाणीए, कलम शाही चले ना कोई चतुरा। जो लेखा जाणे दो जहानीए, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड थल अस्गाह। तिस दा करीए इक्क चरन ध्यानीए, जो सदा सदा होए सहा। तूं मेरा मैं तेरा गाईए बाणीए, जो लहणा देणा दए मुका। पन्ध रहे ना चारे खाणीए, आवण जावण लहणा दए चुका। सो साहिब स्वामी जो देवणहारा अमृत रस पाणीए, पतिपरमेश्वर नूर अल्ला। आत्म परमात्म बणे हाणीए, धुर संजोगी मेल मिला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहनशाह।

पूरन सतिगुर जाणीए, आदि अन्त भगवन्त। पूरन सतिगुर जाणीए, निरगुण धार जोती कन्त। पूरन सतिगुर जाणीए, जो अन्तर आत्म देवे आपणा मंत। पूरन सतिगुर जाणीए, जो गढ़ तोड़े हउमे हंगत। पूरन सतिगुर जाणीए, जो मेल मिलाए साची संगत। पूरन सतिगुर जाणीए, जो बोध अगाधा होवे पंडत। पूरन सतिगुर जाणीए, जो हरिजन लेखे

लाए आपणे सन्त। पूरन सतिगुर जाणीए, जो बणाए साची बणत। पूरन सतिगुर जाणीए, जिस दी महिंमा सदा अगणत। पूरन सतिगुर जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं मेरा मैं तेरा, निरगुण निरगुण दस्से आपणा छंत। (१४ माघ श सं ११ दविंदर सिँघ दे नवित्त)

सतिगुर पूरन पूरन उपदेशे, आदि जुगादि शब्द जणाईआ। जिस दी सिख्या सुणन विष्न ब्रह्मा शिव महेशे, महखासुर आपणी खुशी बणाईआ। जिस दे अवतार पैगम्बर गुर सुणन संदेशे, बिन संध्धया सरघी रिहा दृढ़ाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशे, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जो निरगुण सरगुण बदलणहारा भेसे, भेखधारी अगम्म अथाहीआ। जो वसणहारा सचखण्ड साचे देसे, दरगाह साची सोभा पाईआ। जो तन वजूदां मेटणहार कलेशे, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। जिस दा मुच्छ दाहड़ी ना कोई केसे, तन वजूद ना कोई रखाईआ। जिस दा शब्द सतिगुर दस दस्मेशे, दह दिशा वेख वखाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी हुक्म नर नरेशे, नर हरि इक्क अखवाईआ। जिस दी सिफ्त सलाह करे सहँसर मुख शेशे, शहनशाह धुरदरगाहीआ। जुग बदलणा जिस दा पेशे, पेशीनगोईआं अवतार पैगम्बर गुर गए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।
सतिगुर पूरन पूरन बोल, अनबोलत राग दृढ़ाईआ। स्वामी हो के वसे कोल, घर बैठा सोभा पाईआ। नाम निधान दए अनतोल, अतुल आप वरताईआ। सच दवारा देवे खोलू, पर्दा परदिआं विचों चुकाईआ। शब्द अनादी वजा के ढोल, सोई सुरत दए जगाईआ । बज़र कपाटी पर्दा खोलू, भेव अभेदा दए समझाईआ। निरगुण हो के निरगुण करे चोलू, चोज़ी प्रीतम रंग रंगाईआ। स्वामी हो के जाए मौलू, मौला हो के आपणा खेल खिलाईआ। पंच विकार करे ना घोल, तन वजूद करे ना कोई लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

सतिगुर पूरन पूरा, रिहा सर्ब ठाईंआ। आदि जुगादी धुर दा नूरा, जोती जाता अगम्म अथाईआ। शब्द अनादी अगम्मी तूरा, तुरीआ बाहर दृढ़ाईआ। नित नवित्त हाज़र हजूरा, हज़रतां बाहर धुरदरगाहीआ। इशारा देवणहारा मूसा उत्ते कोहतूरा, कुदरत कादर नूर अलाहीआ। जिस दी मसती नाम सरूरा, सुरती शब्द विच समाईआ। उह जन भगतां लहणा देणा पूरा करे ज़रूरा, ज़रूरत वेखे चाईं चाईंआ। जिस दा नाम कलमा मशहूरा, सतिगुर शब्द नाल सलाहीआ। जिस दा पन्ध नहीं नेरन दूरा, दूर दुराडा इक्को रंग समाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला करनहारा मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ।

सतिगुर पूरन पूरन एक, एकँकार रूप समाईआ। आदि जुगादी देवणहारा टेक, टिक्के मस्तक खाक रमाईआ। करनहारा बुध बिबेक, पतित पुनीत कराईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक,

अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। हरिजन सन्त सुहेले बणाए नेक, निक्का वडा वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर पूरन पूरन देवे जाप, जग जीवण दाता दया कमाईआ । सच स्वामी अन्तरजामी प्रगट होए आप, आप आपणा पर्दा लाहीआ । त्रैगुण माया मेटे ताप, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। जन भगत बणा के आपणी ज़ात, आत्म परमात्म संग बणाईआ। अमृत बखश के बूंद सवांत, झिरना निझर दए झिराईआ। दरस दिखाए आप इकांत, इक्क इकल्ला धुर दा माहीआ। जन भगतां पुच्छे अन्तम वात, वारस हो के वेख वखाईआ। मेहरवान हो के लेखे लावे प्रेम प्यार दी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। नाम निधाना देवे दात, अमुल आप वरताईआ जन भगतां पुच्छे वात, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। चरन प्रीती जोड़ के नात, मेल मिलाए सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बखशणहारा अमृत बूंद स्वांत, तृष्ना तृखा मेटे सहज सुभाईआ। (३० माघ श सं ११ हरि भगत दवार जेठूवाल)

नारद कहे जन भगतो मैं चिठ्ठी लिआंदी पुराणी, पुराण अठारां जिस दा राह तकाईआ। उस दे विच्च अवतार पैगम्बर गुरूआं तों बाहर बाणी, अक्खरां वंड ना कोई वंडाईआ। जिस दा लहणा देणा बाकी जो हर घट जाण जाणी, जानणहार वड वडयाईआ। नाले लेख लिखया पूरन स्वामी, पूरन पवण पाणी पूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जिस दे लेखे विच्च चारे खाणी, खाण वाला शंकर वी उस नूं सीस निवाईआ। जिस दा वेस अव्वलड़ा तुरक पठाणी, अमल आपणे विच्च समाईआ। उह सभ नूं रिहा पुणी छाणी, छानणा नाम वाला इक्क लिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप चढ़ाईआ।

नारद कहे पुराणी पत्रका कहे पुकार, पुकार पुकार के सुणाईआ। पूरन सतिगुर पूरन दा यार, पूरन पूरन विच्च समाईआ। पूरन अन्दर पूरन बाहर, पूरन गुप्त पूरन ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर पूरन नज़री आईआ। पूरन शब्द पूरन धार, पूरन सार शब्द नाल वडयाईआ। पूरन जोत पूरन आकार, निराकार पूरन रूप दरसाईआ। तुसीं हो जावो हुशिआर, रहणा ख़बरदार, नैण लैणां उघाड़, आपणी अक्ख अक्ख विच्चों बदलाईआ। मैं आ गिआ टप्पदा जंगल ते पहाड़, समुंद सागराँ कर के पार, रावी दा किनारा तट्ट सोभा पाईआ। जिथ्थे मिल्या सांझा यार, बणाए बरखुरदार, बिनां हत्थां तों देवे प्यार, मुहब्बत दा मुहब्बत रूप बदलाईआ। मेरी पुराणी पत्रका कहे इस प्रभू नूं इक्क वार करो निमस्कार, इक्क नाल अनेक जन्म दा लेखा दए मुकाईआ। क्यों पूरन पातशाह ते पूरन सच्ची सरकार, शहनशाह पूरन आप अखवाईआ। पूरन घर पूरन गृह पूरन दरबार, पूरन सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। किते आकड़ विच्च ना आ जाइओ कि साडे दरां दा बणया उह भिखार, साथों मंग मंग के आपणा झट्ट लंघाईआ। एह ते एहदी बख्शिश, वाली धार, जेहड़ी अनमुल्ली दात तुहाढ्ढी झोली पाईआ। मैं चार जुग दा वेखणहार, जुग जुग ध्यान लगाईआ। एन पिच्छे आपणयां भगतां नूं भगती विच्च रोल रोल दित्ता मार, तसीहे जगत वाले भुगताईआ । आह वेखो मेरी पुराणी किताब,

कहन्दी इक्को हुण दस्स के, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दा जैकार, चार खाणी दा लेखा दित्ता मुकाईआ। एसे कर के मैं वी बन्दनां करां डण्डावत करां सजदा कर चरनां दी लावां धूढ़ी छार, टिक्के मस्तक विच्च चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेड़ा सच दा करे पार, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। (६ चेत शहनशाही सम्मत नौं)

सतिगुर दरस : सतिगुर शब्द देवे दरस, अन्तर तृष्ना तृखा मिटाईआ। अमृत मेघ अगम्मा बरस, बूंद सवांती कँवल नाभी टपकाईआ। जगत तृष्ना मेटे हरस, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ । मेहरवान हो के करे तरस, रहमत सच कमाईआ। उन्नां दा जीवन होवे सपरश, ज़िंदगी लेखे पाईआ। किरपा करे योधा सूरबीर मरदाना मरद, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो मनज़ूर करन वाला अर्ज़, आरज़ू सभ दी वेख विखाईआ। जिन्नां प्रभ मिलण दी गर्ज़, तन मन्दर होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। दर्शन देवे सतिगुर दीन दयाला, हरि करता वड वडयाईआ। त्रैगुण माया तोड़ ज़ंजाला, जीव जुगत दए समझाईआ। काया मन्दर समझा सच्ची धर्मसाला, साढे तिन्न हत्थ सोभा पाईआ। मन का मणका भेव जणाए धुर दी माला, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। बज़र कपाटी तोड़ के ताला, त्रैगुण अतीता त्रैगुण दा लेख मुकाईआ। सच प्रेम दा पिआए प्याला, नाम निधाना मुख चवाईआ। अनहद शब्द नाद दे धुंनकारा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। जोती दीपक गृह मन्दर देवे बाला, बिन तेल बातषी डगमगाईआ। गुरमुख पकड़ उठाए आपणे लाला, लालन आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वडा वड वडयाईआ।

सतिगुर दरस अमृत रस, बिन रसना आप चखाइंदा। मन कल्पणा होवे वस, मनुआ दह दिशा ना उठ उठ धाइंदा। निझ नेत्र लोचन नैण खोल्हे अक्ख, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। दर्शन देवे हो प्रतक्ख, साख्यात सनमुख सोभा पाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बोल अलक्ख, अलक्ख अगोचर पर्दा आप उठाइंदा। घर स्वामी ठाकर जाए वस, बाहर नज़र कोई ना आइंदा। झगड़ा मिटाए मनमत, गुरमत आप समझाइंदा। पर्दा लाह के तत्तव तत्त, सति सतिवादी आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दरस आप कराइंदा।

साचा दरस देवे गुर पूरा, पूरन ब्रह्म दृढ़ांइंदा। शब्द अनाद सुणा तूरा, तुरीआं तों बाहर भेव खुल्हाइंदा। जोत अगम्मी बखश के नूरा, नूर नुराना डगमगाइंदा। पर्दा लाहे ज़ाहर ज़हूरा, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। जिस ने नूर चमकाया मूसा उत्ते कोहतूरा, सो स्वामी खेल खिलाइंदा। उह दर्शन देवे जन भगतां आप ज़रूरा, ज़रूरत सभ दी वेख विखाइंदा। किरपा कर चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूड़ा, कोझे कमले गल लगाइंदा। जिन्नां बखशे चरन धूड़ा, दुरमत मैल धवाइंदा। साचे नाम दा बख्श सरूरा, सुरत शब्द मिलाइंदा। जो चल

के आए दूरन नेरा, नेरन नेरा हो के वेख विखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, शाह पातशाह शहनशाह आप अखवाइंदा। सतिगुर दर्शन देवे प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। लेखे लाए रसना रिहवा, कीता जाप, अजपा जाप विच्च समाईआ। गृह अन्दर वड़ के खोल्हे ताक, कुण्डी खिड़की आप खुल्हाईआ। सति सच मार अवाज़, सोई सुरत लए उठाईआ। काया काअबे खोल्ह के राज, रिजक रहीम दए वडयाईआ। जो वेखणहारा जुगादि आदि, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। उह सतिगुर शब्द सुहेला सदा साथ, सगला संग निभाईआ। जिस दी चार जुग दे शास्त्र गाउँदे गाथ, सिफ्तां वाले ढोले सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनहार इक्क अखवाईआ।

सतिगुर दरस आत्म अनन्दा, निजानंद दए वडयाईआ। करे प्रकाश कोटन रव चन्दा, सस रव नाल वडयाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जणाए छन्दा, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। अमृत रस निझर देवे धार अगम्मी गंगा, जिस दी गंगा गोदावरी जमना सुरसती सार कोई ना पाईआ। धुंन अनादी शब्द ब्रह्मादी वजाए आप मरदंगा, तन्द सितार ना कोई हिलाईआ। दर्शन विच्च प्रभू बणे आप बखशंदा, बखशणहार आप अखवाईआ। भगतन जानण लक्ख चुरासी सफ़र रहे ना लंबा, जम्म की फ़ासी गेड़ा दए चुकाईआ। सतिगुर दरस नाल निज नेत्र नैण गुरसिख कदे रहे ना अन्धा, अन्ध आत्म डेरा ढाहीआ। बेशक बाहरों दिसे पंजां तत्तां वाला बन्दा, अन्तर निर्मल नूर जोत रुशनाईआ। जो दूई द्वैत शरअ शरीअत भरम दी ढाहे कंधा, हंगता हउमे गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि मालक अगम्म अथाहीआ।

दरस कहे जिस सतिगुर पेखे चरन, चरन कँवल शरनाईआ। निझ नेत्र खुल्हे हरन फरन, लोइण वज्जे वधाईआ। मंज़ल हकीकी चढ़न, दर साचे सोभा पाईआ। आत्म परमात्म ढोला पढ़न, निरअक्खर धार दृढ़ाईआ। झगड़ा चुक्के मरन डरन, चुरासी रहण कोई ना पाईआ। मिले साहिब स्वामी सरन, सरनगत इक्क रखाईआ। जो आदि जुगादि तारन तरन, तारनहार बेपरवाहीआ। भगत सुहेले शब्दी धार बंधाए लड़न, पल्लू इक्को गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल आवे करन, भगत सुहेले लोकमात विच्चों फड़न, फड़ फड़ बाहों प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। (११ चेत शहनशाही सं ६)

सतिगुर दर्शन काया अन्दर, साढे तिन्न हत्थ अन्तर निरंतर वज्जे वधाईआ। करे प्रकाश अन्धेरी डूंघी कंदर, काया काअबा दो दो आबा डगमगाईआ। त्रैगुण अतीता ठांढा सीता बजर कपाटी तोड़े जंदर, रजो तमो सतो दा लेखा आप मुकाईआ। मनूआं मन दह दिश उठ धावे ना बन्दर, सुरती शब्द शब्द बंधाईआ। गृह प्रकाश देवे बिना सूर्या चन्दर, जोती जाता डगमगाईआ। दया कमाए तन वजूद अन्धेरे खण्डर, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा साहिब इक्क गुसाईंआ।

सतिगुर दर्शन तन वजूद, माटी खाक मिले वडयाईआ। भेव खुल्लाए आलीशान अर्श अरूज, अर्शी प्रीतम धुरदरगाहीआ। मंज़ल देवे हक़ मकसूद, दरगाह साची पड़दा आप उठाईआ। मन कल्पना कूड़ी क्रिया करे नेसतो नाबूद, जड़ चोटी रहण कोई ना पाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले महबूब, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा दरस दिखाईआ। नौ दवारे पन्ध रहे ना हदूद, ईड़ा पिंगल सुखमन आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा पर्दा आप उठाईआ।
सतिगुर दर्शन काया माटी, मटका वेखे चाईं चाईंआ। जोत जगाए नूर ललाटी, नूर नुराना डगमगाईआ। नाम वखाए आपणी हाटी, जगत वणजारा ना कोई जणाईआ। अमृत रस देवे निझर बाटी, बूंद सवांती नाभी कँवल विच्चों पलटाईआ। सतिगुर शब्द सुरत चढ़ाए आपणी घाटी, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। लेखा रहे ना तीर्थ अठ्ठ साठी, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। दुरमत मैल जाए काटी, सतिगुर दरस वडी वडयाईआ। मनूआं मन फिरे ना नाटी, नटूआ आपणा रंग रंगाईआ। जोत जगाए बिना तेल बाती, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ।

सतिगुर दरस देवे बिना अक्खां, जग नेत्र लोड़ रहे ना राईआ। घर स्वामी ठाकर मिले सखा, सुखन आपणे पूर कराईआ। जिस दी कीमत पा सके ना कोई करोड़ी लक्खां, गणती गणत ना कोई गिणाईआ। उह खेले खेल अगोचर अलखणा अलक्खा, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। जो आदि जुगादि पुरख समरथ्था, साहिब सुलतान नूर अलाहीआ। जिस दा नित नवित्त जुग चौकड़ी बणदा रथा, रथ रथवाही हो के वेख वखाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द सतिगुर शब्द सुणावे कथा, आत्मक राग राग दृढ़ाईआ। जिस दा खेल यथार्थ यथा, यदी यदप आपणा भेव चुकाईआ। उह जोत जगाए दया कमाए जन भगत सुहेले मस्तक मथ्था, टिक्के धूढ़ी खाक खाक रमाईआ। लहणा देणा चुकाए तत्त अठां, अप तेज़ वाए पृथ्मी अकाश मन मत बुध आपणे रंग रंगाईआ। सतिगुर दरस दीदारी निरगुण धार हरिजन प्यार अन्तर आवे नट्ठा, बिन कदमां भज्जे नट्ठे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ।
सतिगुर दरस लोड़े सर्ब जग, जागरत जोत ध्यान लगाईआ। जो बुझावणहारा कूड़ कुड़िआरी अग्ग, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। भेव चुकाए उपर शाह रग, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। हँस बणाए बगढ़े बप्प, माणक मोती चोग चुगाईआ। जगत विकार दी मेटे हद्द, हदूद आपणी दए दरसाईआ। बिना जगत साज़ सुणाए नद, अनहद नादी नाद धुन करे शनवाईआ। अमृत रस सच प्याए मदि, मधुर धुन नाल शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ।

सतिगुर दरस हरिजन करन दा चाओ, चाओ घनेरा इक्क रखवाईआ । बिन रसना जिह्वा गाए वाहो वाहो, वाहवा वाहिगुरू तेरी बेपरवाहीआ । सो सतिगुर पूरा बिन हत्थां पकड़े बाहों, बिन तत्तां गोद उठाईआ। अन्तर निरंतर बिन रसन जपाए नाउँ, नाउँ निरँकार आप दृढ़ाईआ । एथे उथे दो जहानां देवे ठंढी छाउँ, अगनी तत्त ना लागे राईआ । फड़ फड़ हँस बणाए

काउँ, काग हँस रूप बदलाईआ। आपे पिता आपे माउँ, आपे होए जणेंदी माईआ। दीन दयाला दर्शन देवे थाईं थाउँ, थान थनंतर आपणे रंग रंगाईआ। आदि जुगादी सद करनहार नयाउँ, निआंकार इक्क अखवाईआ। जन भगतां दर्शन देवे साढे तिन्न हत्थ गराउँ, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक्क वखाईआ।

जिस नूं दर्शन देवे पूरा सतिगुर, गोबिन्द गोबिन्द मेला सहज सुभाईआ। लहणा देणा आदि जुगादी वेखे धुर, धुर मस्तक लहणा देणा दए चुकाईआ। अन्तर आत्म परमात्म शब्द नाद सुणाए सुर, सुरती शब्दी नाल मिलाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया मेटे अन्धेर घोर, पंच विकार हँकार दए मिटाईआ। मनुआ मन पाए ना शोर, छौहर बांका हो के वेखे चाईं चाईंआ। पंच परपंच रहे ना अन्दर चोर, ठग्गी ठग्ग ना कोई कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक्क सुहाईआ।

सतिगुर दरस सदा अगम्मा, जग नेत्र लोचन वेखण कोई ना पाईआ । जो बिना तेल बाती दीप जगाए शमअ, नूर नुराना जोती जाता डगमगाईआ। जो आदि जुगादी मेटे सगली तमा, लालच रहण कोई ना पाईआ। लेख मुकाए राए धर्म लक्ख चुरासी जमां, जम की फांसी दए कटाईआ। सच सुहंझणा चरन कँवल बणाए अगला समां, पूरब लहणा लहणे विच्च झोली पाईआ। लेखा जाणे पवण स्वासी दमां, दामनगीर आप हो जाईआ। हरख सोग चिन्ता मेटे ग़मां, ग़मखार हो के वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण धार सच दवार सदा नवां, बिरध बाल बुढेपा जुग चौकड़ी नज़र कोई ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर हुक्म संदेश नर नरेश हो के देवे नाल चवां, चाओ घनेरा इक्को इक्क जणाईआ। (२ भादरों शहनशाही सम्मत ११)

सतिगुर किरपा : सतिगुर किरपा, अन्ध विनासे। सतिगुर किरपा, जोत प्रकाशे। सतिगुर किरपा, भरम भउ नासे। सतिगुर किरपा, होए बन्द खुलासे। सतिगुर किरपा, कट्टे जम की फासे। सतिगुर किरपा, गुर सतिगुर चरन कँवल करे निवासे। सतिगुर किरपा, दस दस मास मात गरभ कदे ना फासे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल शाहो शाबासे। सतिगुर किरपा, भए अनन्द। सतिगुर किरपा, मुख सालाहण बत्ती दन्द। सतिगुर किरपा, रसन तजाए मदिरा मास गंद। सतिगुर किरपा, हरिजन गाए सुहागी छन्द। सतिगुर किरपा, खुशी होए बन्द बन्द। सतिगुर किरपा, लेखा चुक्के जेरज अंड। सतिगुर किरपा, माणस जीवण जगत चुक्के पन्ध। सतिगुर किरपा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सदा सदा बख्शंद।

सतिगुर किरपा, किरपानिध हरिजन दया कमाइंदा। करता कारज करे सिध, जुगत आपणे हत्थ रखाइंदा। आपणे मिलण दी आपे बिध, जुगा जुगन्तर आप बणाइंदा। घर उपजाए नौं निध, अठारां सिध दर फिराइंदा। दाता दानी गुणी गहिंद, वस्त अमोलक नाम अनमुल्ला

झोली पाइंदा। हरिजन बणाए साची बिन्द, पूत सपूता वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा साचे मार्ग आपे लाइंदा।
साचा मार्ग हरि निरँकारा, एका एक जणाईआ। सतिगुर चरन जगत सहारा, बिन सतिगुर पार ना कोई कराईआ। लक्ख चुरासी डूंघी मंझधारा, डूंघी भवरी पार ना कोई कराईआ। कलिजुग तेरा अन्त किनारा, आपे वेखे वेखणहारा, पुरख अकाल वड्डी वडयाईआ। जिस जन दए नाम आधारा, सोहँ शब्द सति जैकारा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। इक्क वखाए हरि मन्दर सच्चा गुरूदवारा, काया मन्दर अन्दर कुण्डा लाहीआ। ठाकर स्वामी होए उजिआरा, पीर पैगम्बर बेपरवाहीआ। जिस जन देवे आप सहारा, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा इक्क दातारा, देवणहार इक्क अखवाईआ। (२० जेठ २०१८ बि)

तेरी किरपा सभ दे कारज सुआर दी, सुरत सवाणी खुशीआं ढोला गाईआ। एह संगत भुक्खी तेरे दरस दीदार दी, दुखीआं दुःख दर्द रिहा वंडाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क भुक्ख तेरे सच प्यार दी, प्यार विच्चों सुख आत्म नज़री आईआ। (२५ हाढ़ २०२१ बि)

सतिगुर मेला : सतिगुर मेला सुफल जन्म, कर्म कांड दुःख रोग रहण ना पाइंदा। माणस देही मिटे भरम, भाण्डा भरम भउ भन्नाइंदा। निरगुण नूर जोत देवे अगम्मी किरन, अज्ञान अन्धेरा अन्ध मिटाइंदा। सर सरनाई देवे सरन, सरनगत इक्क समझाइंदा । भय चुकाए मरन डरन, भउ आपणा इक्क वखाइंदा। लेखा चुकाए वरन बरन, आत्म ब्रह्म सर्ब वखाइंदा। देवे वड्डिआई उपर धरन, धरनी धरत धवल सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणे रंग रंगाइंदा।
सतिगुर मिलयां सति सन्तोख, चिन्ता ग़म रहण ना पाइंदा। जन्म कर्म दा मिटे विजोग, दूई द्वैत डेरा ढाहिंदा। मेल मिलाए धुर संजोग, कूड़ विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। हउमे हंगता कट्टे रोग, हँ ब्रह्म इक्क समझाइंदा। तन नगारे लाए चोट, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, घर घर विच्च दीवा बाती आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस भेव अभेद खुलायंदा।
सतिगुर मिलयां आत्म सुख, घर वज्जे नाम वधाईआ। जगत तृिसना मिटे भुक्ख, आसा मनसा पूर कराईआ । मात गरभ दा लेखा चुक्के उलटा रुख, आवण जावण फंद दए कटाईआ। साची गोदी दीन दयाल चुक्क, घर साचे दए बहाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों उजल मुख, दुरमत मैल मैल धवाईआ। लोकमात दा बूटा पुट, सचखण्ड दवारे दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस एथे ओथे होए सहाईआ । सतिगुर मिलयां मिटे सन्ताप, चिन्ता ग़म ना कोई जणाईआ। नज़री आए आपा आप, आप आपणा वेख वखाईआ। गीत गोबिन्द जणाए सच्चा जाप, सोहला ढोला राग अलाईआ। मेट मिटाए तीनों ताप, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। नज़री आए साख्यात, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। अन्तर आत्म परमात्म पूरी करे ख़ाहश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस अन्तर आत्म वेख वखाईआ।

सतिगुर मिलयां मिले सांत, अगनी तत्त रहण ना पाईआ। नज़री आए इक्क इकांत, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। अन्दर वड़ के काया मन्दर पौड़े चढ़ सुणाए बात, शब्द अनादी धुन शनवाईआ। कूड़ी क्रिया मेट मिटाए अन्धेरी रात, निरगुण नूर दीपक जोत साचा चन्द करे रुशनाईआ। पार उतारे आपणे घाट, पत्तण बैठा बेपरवाह इक्को माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे नाम वर, हरिजन लेखा आप जणाईआ।

सतिगुर मिलयां सच्चा मीत, मित्र प्यारा दए वडयाईआ। घर सुआमी आए ठीक, ठाकर ठोकर नाम लगाईआ। मन वासना लए जीत, मत बुद्ध ना कोई चतुराईआ। काया करे ठंढी सीत, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। चरन प्रीती देवे सच प्रीत, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिल गुरमुख गुर गुर खुशी मनाईआ। सतिगुर मिलयां आत्म रंग, रंग रंगीला इक्क चढ़ाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहिर वज्जे मरदंग, नाद अनादी आप सुणाईआ। नौं दुआरे वेखे लंघ, घर दसवें बूझ बुझाईआ। होए प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जोत डगमगाईआ। निज आत्म आवे इक्क अनन्द, सुख सागर रूप समाईआ। गीत सुहागी गाए छन्द, सोहँ राग अलाईआ। सेज सुहञ्जणी सुहाए पलंघ, पावा चूल नज़र कोई ना आईआ। मेल मिलाए सूरा सर्बंग, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हरि सुआमी लाए अंग, अंगीकार आप अखवाईआ। जन्म कर्म दी टुट्टी देवे गंढ, बंधन इक्को इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए जगाईआ।

सतिगुर मिलयां खुल्हे सुरती, आलस निंदरा दए मिटाईआ। नज़र आए अकाल मूरती, मूरत अकाल आप दरसाईआ। नाम निधान वज्जे नाद तूरती, तुरया सेवा लाईआ। सदा सदा सद आसा पूरती, आसा पूरन हरि अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लेखा लेखे लाईआ।

सतिगुर मिलयां अन्तर ठंढ, बाहर अगन ना कोई तपाईआ। भरम भुलेखा दूई द्वैती ढाहे कंध, घर इक्को नज़री आईआ। सति सरूपी रंगे रंग, जोती जल्वा नूर रुशनाईआ। धुरदरगाही वज्जे मरदंग, तन्दी तन्द सतार नज़र कोई ना आईआ। आत्म मंगे इक्को मंग, परमात्म मेल मिलाईआ। परमात्म सुणावे आपणा छन्द, साचा भेव चुकाईआ। तूं मेरे मैं तेरा सोहँ नाउँ इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। माणस जन्म ना होवे भंग, अन्तम आपणे लेखे पाईआ। धर्म दुआर गुरमुख वेखणा लंघ, गृह मन्दर डेरा लाईआ। नज़री आए साहिब सर्बंग, भूपत भूप सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख जुग जन्म दे विछड़े मेले आण, विछोड़ा आपणी झोली पाईआ। (६ अस्सू २०२० बि)

मालवे वालिओ गावो शब्द, सतिगुर सरन सच्ची सरनाई। झगड़ा छडणा दीन मज़्हब, आत्म परमात्म लैणा प्रनाई। इक्क दूजे दा करना अदब, सभ नूं समझणा भैणा भाई। सतिगुर मेला जगत नहीं बदन, निरगुण निरगुण दए मिलाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विकार विच्चों तुहानूं कढ़ुण, फड़ बाहों पार कराई। (१३ चेत श सं ६)

सतिगुर चरन ; चरन कँवल मिले सरनाई, सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। चरन कँवल मिले वड्डिआई, हरि दाता वेख वखाइंदा । चरन कँवल वज्जे वधाई, आत्म परमात्म राग सुणाइंदा। चरन कँवल होए कुड़माई, भगत भगवान मेल मिलाइंदा। चरन कँवल गुरमुख मिले चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को चरन पतिपरमेश्वर सर्ब समझाइंदा।
चरन कँवल नाता अगम्म, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सतिगुर चरन हड्ड मास नाड़ी ना कोई चंम, तत्त रूप ना कोई वटाईआ। सो चरन दो जहानां बेड़ा देवण बंन्ह, फड़ के बेड़ा पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच प्रीती ठांडी सीती त्रैगुण अतीती हरि बख्शे इक्क सरनाईआ।

सतिगुर चरन ठांडा दरबार, घर इक्को नज़री आइंदा। गुरसिख विरला करे प्यार, जिस आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरमुख सच्चा करे दीदार, निज नेत्र लोचण खुल्हाइंदा। साचा सन्त पावे सार, जिस भाण्डा भरम भउ भन्नाइंदा। साचा भगत वेखे आ के धुर दरबार, जिस मन्दर अन्दर सतिगुर आपणे चरन रखवाइंदा। सो महल्ला अपर अपार, सूरज चन्द नज़र कोई ना आइंदा। छप्पर छन्न ना कोई दीवार, ना कोई बाढी बणत बणाइंदा। कर किरपा हरि करतार, प्रेम प्रीती आपणे नाल जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को चरन कँवल वड्डिआई देवे उपर धवल, माणस मानुख मानुश आपणे लेखे लाइंदा।
सतिगुर चरन बुझाए अग्ग, अगनी तत्त ना कोई जलाईआ। सतिगुर चरन हँस बणाए कग्ग, काग हँस रूप वटाईआ। सतिगुर चरन नज़री आइण उपर शाह रग, नौं दुआरे सार कोई ना पाईआ। सतिगुर चरन दो जहानां सच्चा हज्ज, काया काअबा इक्क सुहाईआ । सतिगुर चरन साचे मन्दर लैण सद्द, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। सतिगुर चरन आवण जावण मुकावण हद्द, लेखा कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चरन चरनोदक जिस जन अमृत जाम मुख चवाईआ। (१४ अस्सू २०२० बि)

सतिगुर चरन कँवल सच बंधन, बन्दगी मशंदगी दी लोड़ रहे ना राईआ। निझ आत्म देवे परमानंदन, रस रसीआ इक्क चखाईआ । साची डण्डावत मनज़ूर करे साहिब बख्शंदन, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। ढोला गौणा पवे ना कोई बत्ती दन्दन, रसना जेहवा ना कोई हलाईआ। सच प्रकाश चाढ़े नूरी चन्दन, जोती जोत डगमगाईआ। निम वास महका के वांग चन्दन, कूड़ी क्रिया अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। जगत दवारा गुरमुख पार लँघण, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। आत्म सेजा सुहौणी सेज पलँघण, जिस दा पावा चूल नज़र किसे ना आईआ। नाम निधान वज्जे मरदंगण, सुर ताल करे शनवाईआ। करे खेल सूरा सर्बगण, घट भीतर पड़दा उहला दए उठाईआ। जोधा सूरबीर बण मर्द मरदंगण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्क सुहाईआ। (१४ सावण शहनशाही सम्मत २)

आत्म ध्यान गुरचरन परोए। गोझ ज्ञान दी सोझी होए। (५ चेत २००७ बि)

गुरशब्द गुरचरन ध्यान। (६ जेठ २००७ बि)

ब्रह्म ज्ञान हरि चरन ध्यान। (११ मध्घर २०१० बि)

गुरचरन सेव पारब्रह्म प्रभ पाईए। गुरचरन सेव गुण निधान घर दरसाईए। गुरचरन सेव जन्म जन्म दे पाप गवाईए। गुरचरन सेव दुःख देह प्रभ गवाईए। गुरचरन सेव सच सुच्च इक्क रंग समाईए। गुरचरन सेव रंग मजीठ झूठी देह चढ़ाईए। गुरचरन सेव सोना कंचन इक्क दरसाईए। गुरचरन सेव सोहँ शब्द ज्ञान दवाईए। गुरचरन सेव महाराज शेर सिँघ दर्शन पाईए। गुरचरन सेव विच्चों हउमे मैल गवाईए। गुरचरन सेव चरन कँवल केस चवर झुलाईए। गुरचरन सेव कलिजुग निहकलंक दरसाईए। गुरचरन सेव फिर जन्म ना पाईए। गुरचरन सेव अन्त काल प्रभ जोत मिल जाईए। गुरचरन सेव महाराज शेर सिँघ घर माहि पाईए। (१४ जेठ २००७ बि)

चरन कँवल उपर धवल भगत भगवान सच प्रीत, प्रीतीवान आप समझाइंदा। (२१ चेत २०२० बि)
गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई ना दीसे थाउँ। (११ मध्घर २०१० बि)

सतिगुरप्रसाद : गुरप्रसाद : सतिगुरप्रसाद सति वस्त, सति सतिवादी हरि वरताइंदा। गुरमुखां रक्खे सदा मसत, नाम मसती इक्क चढ़ाइंदा । एका रंग रंगाए कीट हसत, हस्त कीट विच्च आप समाइंदा। खोलणहारा हरि जू दृष्ट, आपणी दृष्टी एका पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसाद आप बणाइंदा।
सति प्रसाद सच सिँघासण, सति पुरख निरञ्जण आप बणाईआ। लहणा देणा चुक्के पृथ्मी अकाशन, जो जन रसना रस रस खाईआ । लक्ख चुरासी कट्टे फासन, राए धर्म ना दए सजाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आसन, निरासा गुरसिख कोई रहण ना पाईआ। लेखा जाणे पवण स्वासण, रसना जिह्वा वेख वखाईआ। जन भगतां होवे दासी दासन, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसाद इक्क बणाईआ।
सति प्रसाद हरि का रस, गुर सतिगुर आप बणाइंदा। जन भगतां अन्तर जाए वस, वस किसे ना आइंदा। गुरसिख तेरा गाए जस, जस वेद पुरान ना कोई अलाइंदा। साचा मार्ग इक्को दस्स, लक्ख चुरासी राह वखाइंदा। पन्ध मुकाया नस्स नस्स, जुग चौकड़ी पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसाद आप वरताइंदा। सति प्रसाद सति सति भोग, सति सतिवादी आप लगाईआ। निरगुण सरगुण होया संजोग, महाराज शेर सिँघ करे कुड़माईआ । नाता तुट्टा लोक परोलक, अवण गवण ना कोई फिराईआ। सचखण्ड गौणा इक्क सलोक, साचा सोहला सच्चे माहीआ। अद्धविचकार

ना सके कोई रोक, विष्न ब्रह्मा शिव राए धर्म गुरसिख निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अगम्म अथाह एका ओट, एका मिले सच सरनाईआ। शब्द मिलावा निर्मल जोत, जोती जोत आप मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसाद जिस खवाईआ।

सति प्रसाद सति सवाद, रसना जिह्वा ना गुण जणाइंदा। जन भगतां देवे आदि जुगादि, दूसर हत्थ ना किसे फड़ाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों काढ, सन्त सुहेले मेल मिलाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा। गुर चेले लडाए लाड, गुरसिख आपणा भेव खुल्ह़ाइंदा। सदा सुहेला हरिजन विच्च रिहा आदि जुगादि, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसाद जिस अन्तर आप टिकाइंदा।

सति प्रसाद अन्तर रक्खे आप, आपणी दया कमाईआ। जन्म जन्म दा कट्टे पाप, दुरमत मैल धोवे शाहीआ। इक्क जणाए पूजा पाठ, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ । बजर कपाटी जाए पाट, द्वैती पड़दा रहे ना राईआ। इक्क वखाए साचा हाट, सतिगुर पूरा आप खुल्ह़ाईआ। गुरमुख तेरी अन्तम कट्टे वाट, पान्धी बण बण फेरा पाईआ । गुर का रस लैणा चाट, रसक रसक एका मुख सलाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि संगत लाए आपणे घाट, बण खेवट खेटा जगत मलाह बेपरवाह पार किनारा इक्क रखवाईआ।

सति प्रसाद सतिगुरप्रसाद गुर प्रसाद किसे हत्थ ना आवे हाथ, पृथ्मी आकाश गगन मण्डल ना कोई वरताईआ। जे वरतावे तां पुरख अबिनाश, गुर अवतारां भोरा भोरा झोली पाईआ। दूजी वार किसे फेर लभ्भे ना उह सवाद, रस विच्चों रस ना कोई जणाईआ। जुग चौकड़ी करदे फिरन तलाश, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ। (२८ माघ २०२० बि)

सतिगुर प्रशाद कदी खाया ना जाए नाल होटां, बुल्लां नाल ना कोई चतराईआ। जिस नूं खा के मिलदीआं उह मौजा, जिथ्थे सन्त भगत बैठे डेरे लाईआ। एह विहार नहीं वाला लोकां, लोक लज्जया ना कोई रखवाईआ। सतिगुर वास्ते सिख तारना नहीं औखा, फड़ बाहों पार लंघाईआ। केहड़ा पढ़ना पैणा पोथा, केहड़ा अक्खर देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रशाद इक्को इक्क वेख वखाईआ।

सतिगुर परसाद वस्त अगम्मी, जगत हलवाई ना कोई बणाईआ । आदि जुगादि ना होए निकम्मी, ठंडी होई पऱे ना कोई सुटाईआ। घृत तेल अगनी जगत वस्त किसे ना जम्मी, सूजी मेवा संग ना कोई रखवाईआ। जिन्ह़ां उपर किरपाल किरपा करे वड दाता धनी, धनाड हो के दया कमाईआ । उह आत्म परमात्म प्रशाद खाण नूं आवे भन्नी, अन्दरे अन्दर पन्ध मुकाईआ। जे कोल आया सतिगुर बण के कतरा जावे कन्नी, गुरमुख पल्ला छुडा भज कदे ना जाईआ । जे होवे आपणी अक्ख अंन्ह़ी, किसे नूं सुजाखा की देणा बणाईआ। जो आप होया डंनी, दूजा डंन ना सके मिटाईआ । जिस ने अजे आप रोटी खांधी होवे चप्पा खंनी, की भुक्खयां देवे रजाईआ। नहीं उह सतिगुर पूरा जिस दी इक्को मन्नी, घर

घर रिज़क पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति परसाद खा खा खुशी वखाईआ। (३ भादरों २०२१ बि)

सतिगुर परसाद जिनाँ मिल्या काया चोली, झलक झल्लयां दए वखाईआ। अन्दरे अन्दर बदल देवे आपणी बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। (२ मध्घर २०२१ बि)

सतिगुर परसादि सति वस्त, सति सतिवादी हरि वरताइंदा। गुरमुखां रक्खे सदा मसत, नाम मसती इक्क चढ़ाइंदा। (१५ चेत २०१६ बि)

सतिगुर परसाद सदा सति, सति सतिवादी रूप वटाइंदा। घर उपजावे ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या इक्क समझाइंदा। निझर देवे अगम्मी रस, अमृत झिरना आप झिराइंदा। कर प्रकाश जोत लट लट, नूर नुराना डगमगाइंदा। साचा मार्ग देवे दस्स, नौं दवारे पार कराइंदा। सुखमन टेडी बंक आपे दस्स, औझड़ घाटी पार कराइंदा । ईड़ा पिंगल वेखे आपणी अक्ख, गृह मन्दर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन सति परसाद इक्को झोली पाइंदा।

सति परसाद सतिगुर किरपा, हरिजन साचा मंग मंगाईआ। जन्म कर्म दी रहे ना बिप्पता, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। लेखा चुके स्वर्ग बहश्ता, प्रभ जोती जोत जोत मिलाईआ। नज़री आए इक्को इष्टा, श्री भगवान नूर इल्लाहीआ। बन्द किवाड़ी खोल्हे दृष्टा, मेहर नज़र अक्ख उठाईआ । होए मिलावा जिउँ राम वशिष्टा, विश्व आपणी धार समझाईआ। सो सुहञ्जणा होए परविष्टा, घड़ी पल मिले वडयाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल करावणहारा पूरा निसचा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सति परसाद इक्क समझाईआ।

सति परसाद सतिगुर हत्थ, जुग चौकड़ी आप वरताइंदा। लक्ख चुरासी नालों कर के वक्ख, भगत भगवान वेख वखाइंदा। मेहरवान सिर रक्ख हत्थ, ओट इक्को इक्क जणाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, अगनी तत्त ना कोई तपाइंदा। जानणहारा मित गत, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर खोज खुजाइंदा। बीज बीजे साचे वत, फुल फलवाड़ी नाम महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच परसाद इक्क वडिआइंदा।

सच परसाद सदा भरपूर, श्री भगवान दए वडयाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, माया ममता मोह चुकाईआ। अन्तर देवे इक्क सरूर, नाम खुमारी दए चढ़ाईआ। जल्वा जोती बख्शे नूर, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सच परसाद जन भगतां झोली पाईआ। (२२ फग्गण २०२० बि)

सच प्रशाद हरि अमृत बाणी, सन्त सज्जण रहे जणाईआ। (४ विसाख श सं १)

हरिसंगत प्रसाद अमृत रस, रस रसीआ दए वडयाईआ। हरि का प्रसाद जोत प्रकाश,

घर घर दए टिकाईआ। करे खेल हरि शाहो शाबाश, साख़यात रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बंधन आपे पाईआ।

हरिसंगत हरि प्रसाद हरि की भेटा, प्रेम प्यार जणाइंदा। हरि का प्रसाद गुरमुख खेवट खेटा, लोकमात बेड़ा पार कराइंदा। एका घर वसण पिता पूत पित बेटा, साचा मन्दर इक्क सुहाइंदा। जुग चौकड़ी ना भुल्ला चेता, चेतन्न आपणे नाल बंधाइंदा। साढे तिन्न हत्थ रक्खी वेंता, लोकमात नींह धराइंदा। कलिजुग अन्तम दस्सण आया भेता, भेत आपणा आप खुल्ह़ाइंदा। जिस नूं कबीर इक्को देखा, सो गुरमुखां दरस विखाइंदा। आदि जुगादि जाणे लेखा, लिख लिख लेख आप मुकाइंदा। किसे हत्थ ना आवे धारी केसा, मूंड मुंडाया ना बंधन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा जोड़ आप जुड़ाइंदा।

गुरसिख प्रसाद ब्रह्म रंग, रंगण रंग विखाईआ। हरि का प्रसाद आत्म मंग, परमानंद दए जणाईआ। गीत सुहागी साचा छन्द, अनहद नाद सुणाईआ। नाता जीउ इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड, एका घर मेला रिहा मिलाईआ। हरिसंगत प्रसाद साची दाद, हरि दाता वेख विखाइंदा। गुर का प्रसाद बोध अगाध, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, निवण सु अक्खर इक्क समझाइंदा । कलिजुग अन्तम रक्खी लाज, हरिजन आप जगाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों लए काढ, आपणे घर बहाइंदा। मेल मिलावा मोहन माधव माध, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। सन्त सुहेले साचे लाध, गुर सतिगुर मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दया कमाइंदा।

संगत प्रसाद हरि की सेवा, सेवा साची हरि जणाईआ। गुर प्रसाद अमृत मेवा, रस रसना आप चखाईआ। आदि निरञ्जण अलख अभेवा, इक्को बेपरवाहीआ। कौसतक मणीआ लावे थेवा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। गाए गीत बिन रसना जिह्वा, बत्ती दन्द ना कोई हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बणे विचोला बेपरवाहीआ। हरिसंगत प्रसाद सच सच, हरि साजण आप बणाइंदा। हरि का प्रसाद एका घर, भेव कोई ना पाइंदा। गुरमुख विरला महल्ल अट्टल, मिनार कोट किला गढ़ आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां एका दर वखाइंदा।

गुर प्रसाद खुल्हिआ दरवाज़ा, दर दरबान मिली वडयाईआ। इक्क भिखारी इक्क राजा, इक्क शहनशाह अखवाईआ। इक्क दर दर घर घर फिरे भाजा, इक्क बैठा मुख छुपाईआ। इक्क रातीं सुत्यां मारे वाजां, इक्क सुत्यां करवट ना सके बदलाईआ। इक्क लोकमात रक्खे लाजा, इक्क रिहा पत गवाईआ। कलिजुग अन्त खेल कीआ विच्च माझा, माझा देस मिली वडयाईआ। इक्को गोबिन्द सूरा रिहा भाजा, पुरख अकाल नाल मिलाईआ। सतिजुग चलाए सच जहाजा, साची सेव कमाईआ। सचखण्ड निवासी ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणयां लए उठाईआ। शाह सुलतानां खोल्हे पाजा, कूड़ी क्रिया वेख वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां बेड़ा आप चलाईआ।

हरिसंगत प्रसाद सच दुआरी, आसा आस पुजाईआ। गुर प्रसाद मिले धुर दरबारी, दरगाह साची वड वडयाईआ। ना कोई मन्दर ना कोई अटारी, किला कोट ना कोई रखवाईआ।

ना कोई पंडत पांधा करे विचारी, मुलां शेख़ां ना कोई जणाईआ। ना कोई गरंथी पन्थी गाए गाथा, बावन अक्खर ना कोई सुणाईआ। जिस जन मिल्या पुरख समरथ, तिस नाता तुटा जगत लोकाईआ। एथे ओथे इक्को वथ, इक्क दुआर ना कोई वरताईआ। दे प्रसाद करे ना बस, आपणा प्रसाद जुग जुग रिहा वरताईआ। बिन रसों देवे रस, रस रसीआ आपणा रस वखाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कीती आस, चौथे जुग होया सहाईआ। गुर अवतार सारे कहण प्रभ नूं कम्म कोई ख़ास, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां विचोला आप अखवाईआ।

हरि संगत तेरा प्रसाद त्रैगुण अतीता, त्रैभवन धनी आप वरताईआ। हरि प्रसाद ठंडा सीता, अगनी तत्त बुझाईआ। सतिजुग चले साची रीता, सति सतिवादी आप चलाईआ। भगत भगवन्त पतित पुनीता, पतित पापी लए तराईआ। पिछला वेला सुत्यां बीता, अग्गे अक्ख रिहा खुल्ह़ाईआ। वेखो धाम इक्क अनडीठा, लोकमात लिआ प्रगटाईआ। कलिजुग अन्त वेखे कौड़ा रीठा, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी बीठलो बीठा, नर नारी लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट रिहा समाईआ।

गुर प्रसाद देवे आदर, हरि संगत माण वडयाईआ। गुर तेग बहादर चिट्टी चादर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। गुर गोबिन्द चिला तीर कमान इक्क उठाईआ। एका आख के गिआ साबर, सबर सबूरी आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संगत तेरा प्रसाद आपणे लेखे लाईआ।

हरि संगत प्रसाद बड़ा अनमुल, अनमुलड़े हट्ट विकाईआ। हरि प्रसाद बड़ा अतुल, तोल ना तोलया जाईआ। सच भंडारा गिआ खुल्ह़, वेखे सर्ब लोकाईआ। हरि संगत ना जाए रुल, करता कीमत आपे पाईआ। दर जो आए भुल्ल, जन्म मरन दए कटाईआ। हरि संगत ना जाए हुल, सिंमल रूप ना कोई वखाईआ। सोहँ गाए रसना बुल, आत्म परमात्म करे कुड़माईआ। भाग लगाए साची कुल, कुलवन्त फेरा पाईआ। गोबिन्द फुलवाड़ी जाए फुल्ल, गोबिन्द बूटा आपे लाईआ। घोल घुमा आपे घुल, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रसाद आप वखाईआ।

वेखो हरि दा सच प्रसाद , हरि जू आप विखाइंदा। सदा सुहेला वसे आदि जुगादि, आपणे रंग रंगाइंदा। जन भगतां देवे इक्को दात, देवणहार इक्क अखवाइंदा। आपे जाणे आपणी हाद, किनारा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसाद आप वरताइंदा।

वेखो प्रसाद लग्गा ढेर, ढह ढेरी ख़ाक गवाईआ। कर किरपा हरि जू तारे मेहर, मेहर नज़र एका पाईआ। प्रगट होया इक्को केहर, शेर रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी लए घेर, बचया कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसाद आप वरताईआ।

हरि प्रसाद जिस ने खाणा, खाना आपणा लए खुलाईआ। दरगाह साची मिले माणा, हरि सतिगुर होए सहाईआ। धर्म राए नेड़ ना आणा, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाईआ। लाड़ी

मौत ना बंने गाना, वेले अन्त ना लए प्रनाईआ। सतिगुर देवे शब्द बिबाणा, गुरमुख साचे लए चढ़ाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ध्यान लगाउणा, नेत्र नैण खुल्ह़ाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवाना, हरिजन आपणे गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत समाईआ।

जोती जोत श्री भगवाना, मिल जोती जोत मिलाईआ। सचखण्ड सच मकाना, थिर घर आपणा नाम टिकाईआ। लहणा देणा चुक्के आवण जावणा, लक्ख चुरासी ना कोई भवाईआ। राग नाद ना कोई गाणा, तुरीआ राग ना कोई सुणाईआ। एका पाउणा पद निरबाणा, परम पुरख वड्डी वडयाईआ। जो जन मन्ने हरि का भाणा, हरि भाणे रिहा समाईआ। वेखो तख़तों लहणा राजा राणा, रोवे सर्ब लोकाईआ। किसे ना सुझे पीणा खाणा, सेज ना कोई हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा प्रसाद जन भगतां आप वरताईआ। गुर प्रसाद गुरसिखां खादा, खा खा शुकर मनाईआ। घर बैठयां हरि दर्शन पाया, हरि जू दर दर दया कमाया। आदि अन्त दा भय मनाओ, डर अवर ना कोई जणाया। अमरापद एका पाओ, घर मिले सहज सुखदाया। गीत गोबिन्द एका गाओ, शब्दी मंगल गाया। जगत दुआरा डेरा ढाहो, सचखण्ड आसण लाया। परमानंद विच्च समाओ, निजा नंद रिहा शरमाया। हरि संगत फूल कंद खाओ, अमृत फल रिहा वखाया। खुशी बन्द बन्द कराओ, बन्दीख़ाना दए तुड़ाया। जोत निरञ्जण चन्द चढ़ाओ, अन्ध अन्धेर दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि संगत तेरा प्रसाद आपणे लेखे लाया।

लेखे लग्गा आया दर, हरि दर्दी दर्द वंडाईआ। खुशी होए नारी नर, नर नरायण वेख वखाईआ। बाल बिरध जवान आपे फड़, आपणी गोद बहाईआ। बिन पौड़ीउँ आपे जाए चढ़, औंदा जांदा दिस ना आईआ। अन्दर बह बह रिहा पढ़, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। किला कोट तोड़ हँकारी गढ़, एका रंग वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप तराईआ। (२६ पोह २०१८ बि)

गुर प्रसाद प्रभ पूरा पाया। गुर प्रसाद जन्म मरन दा फंद कटाया। गुर प्रसाद मिल गुर मानस जन्म सफल कराया । गुर प्रसाद गुर लिखया धुर गुण निधान, घर आए भगत लेख लिखाया। गुर प्रसाद महाराज शेर सिँघ साचा वर पाया हरि राया। (२७ चेत २००८)

गुर प्रसाद हरि वरताइंदा। गुरसिखां झोली पाइंदा। वारो वारी हरि पिलाइंदा । जगत खुआरी आप मिटाइंदा। कलिजुग अन्तम भारी प्रभ साचा राह चलाइंदा। गुरमुखां देवे चरन प्यारी, सच प्रीती आप वखाइंदा । ना कोई रहे दर जीव हँकारी, भरम भुलेखे सारे लाहिंदा। जो जन आए चल सच्चे दरबारी, प्रभ तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। साची जोत जगे निरँकारी, निहकलंक नाउँ रखवाइंदा । (७ चेत २०११ बि)

गुर प्रसाद गुर प्रसाद कराईए। गुर प्रसाद गुर दर्शन पाईए। गुर प्रसाद प्रभ जोत जगाईए। गुर प्रसाद काया तपत बुझाईए । गुर प्रसाद चन्नण वांग देह बणाईए। गुर प्रसाद गुर सेव कमाईए। गुर प्रसाद गुर भेट चढ़ाईए। गुर प्रसाद घर नौं निध

पाईए। गुर प्रसाद गुर दर मंगण आईए। गुर प्रसाद नाम पदारथ झोली पाईए। गुर प्रसाद मन दा भरम गवाईए। गुर प्रसाद सतिगुर पूरा नैण दरसाईए। गुर प्रसाद दुःख दलिद्दर सर्ब गवाईए। गुर प्रसाद जन्म सुफल जगत कराईए। गुर प्रसाद मनुख देह नूं लेखे लाईए। गुर प्रसाद गुर वडभागी घर महि पाईए। गुर प्रसाद गुर अंजण नाम नेत्रीं पाईए। गुर प्रसाद थिर घर बैठ गुर नाम दृढ़ाईए। गुर प्रसाद कलिजुग विच्च आण तर जाईए। गुर प्रसाद जगजीवन दाता रसना नित गाईए। गुर प्रसाद आप तरे कुटंब तराईए। गुर प्रसाद भय भंजन मेहरवान मन बख्शाईए। गुर प्रसाद त्रैलोकी नाथ उत्ते पलंघ बहाईए। गुर प्रसाद नेत्र खोलु गुर चरन दरसाईए। गुर प्रसाद मन में होए ज्ञान, शब्द रूप गुर दर्शन पाईए। गुर प्रसाद गुर संगत रल जाईए। गुर प्रसाद मदि मास ना रसना लाईए। गुर प्रसाद अमृत फल गुर दर ते पाईए। गुर प्रसाद आपणी महिंमा आप लिखवाईए। गुर प्रसाद गुर पूरा सिर छत्तर झुलाईए। गुर प्रसाद जात पात दा भेत मुकाईए। गुर प्रसाद चार वरन इक्क हो जाईए। गुर प्रसाद विच्च संगत भैण भरा बण जाईए। गुर प्रसाद दर्शन परमगत पाईए। गुर प्रसाद प्रभ अबिनाश सद रिदे ध्याईए। गुर प्रसाद आत्म जोत गुर जोत जगाईए। गुर प्रसाद अज्ञान अन्धेर नास कराईए। गुर प्रसाद उपजे ब्रह्म ज्ञान सदा सुख पाईए। गुर प्रसाद साध संगत मिल हरि जस गाईए। गुर प्रसाद चरन कँवल गुर सीस झुकाईए। गुर प्रसाद पूरन परमेश्वर गुण गाईए। गुर प्रसाद वाह वाह करदयां सतिजुग पाईए। गुर प्रसाद महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गुण गाईए।

गुर प्रसाद जेठ पंचमीं दिन मनाईए। गुर प्रसाद जोत निरञ्जण नित दर्शन पाईए। गुर प्रसाद गुर प्रसाद कराईए। गुर प्रसाद कमाई सुफल कराईए। गुर प्रसाद दुध्ध पुत्त दी तोट ना पाईए। गुर प्रसाद साचा साचा शाह इक्क रंग समाईए। गुर प्रसाद सोहँ शब्द गुण गाईऐ। गुर प्रसाद सचखण्ड समाईए। गुर प्रसाद जोत सरूप अन्त जोत मिल जाईए। गुर प्रसाद आवण जावण पन्ध मुकाईए। गुर प्रसाद गेड़ चुरासी फेर ना आईए। गुर प्रसाद कर्म लेख फेर लिखाईए। गुर प्रसाद पिछली भुल्ल बख्शा अग्गे नूं मार्ग पाईए। गुर प्रसाद मनो गवाईए विकार, नाम अमोलक पाईए। गुर प्रसाद चतुरभुज करतार गुरू विच्च समाईए। गुर प्रसाद आदि अन्त रंग इक्क हो जाईए। गुर प्रसाद पुरख निरञ्जण सर्ब सुख पाईए। गुर प्रसाद कर प्रसाद गुर भोग लगाईए। गुर प्रसाद गुर दर आया सुफल कराईए। गुर प्रसाद सुख सागर विच्च आण तर जाईए। गुर प्रसाद दुःखां वाला भार गुर दर ते लाहीए। गुर प्रसाद दुःखी काया कंचन बण जाईए। गुर प्रसाद वांग चन्दन सदा महकाईए। गुर प्रसाद दाता करता जल थल समाईए। गुर प्रसाद साध संगत मिल हरि जस गाईए। गुर प्रसाद कल्लू काल विच्च पार कराईए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ दर्शन पाईए। गुर प्रसाद जेठ पंचम सोहँ नाम ध्याईए। गुर प्रसाद गुर संगत प्रसाद कराईए।

गुर प्रसाद दरगाह विच्च गुर माण दवाए। गुर प्रसाद गुर साचा सच बचन लिखाए। गुर प्रसाद सतिजुग मार्ग आप चलाए। गुर प्रसाद धन्न गुरसिख जो गुर चरनीं लाए। गुर प्रसाद धन्न गुरसिख खड़े दर सीस झुकाए। गुर प्रसाद अज्ज दिन वडभागी, महाराज

शेर सिँघ अवतार आए। गुर प्रसाद जेठ पंचवी होवे वडभागी, मातलोक प्रभ जोत जगाए। गुर प्रसाद गुर कर्म विचारया। गुर प्रसाद गुरसिखां गुर जन्म सवारया। गुर प्रसाद गुर कलिजुग पार उतारया। गुर प्रसाद गुर पूरे सद बलहारया। गुर प्रसाद जेठ पंजवीं जगत उधारया । गुर प्रसाद प्रगटे महाराज शेर सिँघ सदा बलहारया।
गुर प्रसाद गुरसिखां गुर पार उतारया। गुर प्रसाद गुरसिख नाउँ गुर रसन उच्चारया। गुर प्रसाद सोहँ नाउँ भगत भंडारया । गुर प्रसाद कट्टे हउमे रोग, किल विख पार उतारया। गुर प्रसाद गवाए काया रोग, गुरसिख जन्म सवारया। गुर प्रसाद जिथ्थे सोहे भगत गुर पूरे बलहारया। गुर प्रसाद जेठ पंचम मिली वधाई, गुर पूरे दर्शन पा लिआ। गुर प्रसाद होए दर परवान, जिनाँ महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिका लिआ। (५ जेठ २००७ बि)

सतिगुर मूरत : सतिगुर किरपा साची मूरत, रूप रंग रेख बाहर नज़र किसे ना आईआ।

सतिगुर मूरत अगम्म अथाह, कथनी कथ सके ना राईआ।
सतिगुर मूरत अगम्मी धार, जगत नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। (२ अस्सू श सं ८)

हरि मूरत जन वेख, सर्ब अकार है। हरि मूरत जन वेख, सर्ब अधार है। हरि मूरत जन वेख, रूप अगम्म अपार है। हरि मूरत जन वेख, वेखण सुनण सुनण वेखण सद वसे बाहर है। हरि मूरत जन वेख, ना कोई रूप ना कोई रंग अव्वलड़ी धार है। हरि मूरत जन वेख, आत्म घर साची मेख, जगे जोत निरगुण हार है। हरि मूरत जन वेख, भरम भुलेखा दए निवार है। हरि मूरत जन वेख, मानस जन्म आदि अन्त रिहा सवार है। हरि मूरत जन वेख, काम क्रोध करे भसमंत, मारे शब्द कटार है। हरि मूरत जन वेख, जोत जगाए साचे सन्त, अमृत देवे साची धार है। हरि मूरत जन वेख, एका रंग हरि साचे अन्त ना पावे कोई जंत गवार है। हरि मूरत जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी पसर पसार है। हरि मूरत जन वेख, जोत अकाल है। हरि मूरत जन वेख, मातलोक ना होए कदे कंगाल है। हरि मूरत जन वेख, देवे दात शब्द वड्ड धन माल है। हरि मूरत जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, कर रिहा सर्ब प्रितपाल है। (७ हाढ़ २०११ बि)

सतिगुर प्यार : पुरख अकाल प्रेम : सतिगुर प्यार सच्चा ईमान, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत साचे सन्त जुग जुग जगत करन जहान, जिनाँ ध्यान आपणे नाल मिलाइंदा। (५ भादरों २०२१ बि)

प्रेम अन्दर वसे प्यार, प्यार अन्दर प्रीती सच रखाईआ। भगतां अन्दर वसे भगवान, भगत भगवान विच्च समाईआ । (१७ जेठ २०२० बि)

पुरख अकाल प्रेम अनोखा, गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी गए कमाईआ। भगत सन्त तक्कण मौका, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग ध्यान लगाईआ। गुरमुख गुरसिख राह

वेखण सौखा, चरन लग लग पाईआ। मेहरवान प्रभ ठाकर स्वामी प्रेम प्यार दी ला के चोटा, तन नगारे नाद वजाईआ। अन्तर आत्म बख्श प्रेम कूड़ी क्रिया मन ममता कढ़े खोटा, हउमे रोग गवाईआ। निर्मल प्रकाश अगम्म अथाह कर आपणी जोता, जोती जोत करे रुशनाईआ । धुर दा प्यार किसे विच्च ना आवे सोचा, समझ सके ना कोई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रेम इक्क दृढ़ाईआ।

पुरख अकाल प्रेम अजब, निराला समझ किसे ना आईआ। लक्ख चुरासी होए तअजब्ब, पड़दा सके ना कोई उठाईआ। सृष्टी भरमी दीन मज़ूब, ज़ात पात करी कुड़माईआ। आत्म परमात्म करे कोई ना अदब, आदाब सीस ना कोई झुकाईआ। प्रभ मिलण नूं रक्खे ना कोई क़दम, पान्धी पन्ध ना कोई मुकाईआ। गृह गृह घर घर चार वरन दिसे तशदद्द, सुरत शब्द ना कोई मिलाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले गिणती विच्च अदद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रेम इक्क वखाईआ।

पुरख अकाल प्रेम अपार, अपरम्पर आप कराइंदा। निरगुण सरगुण दए आधार, गुर अवतार मेल मिलाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, धुन नाद आप सुणाइंदा। कूड़ी क्रिया कढ़ु के बाहर, दुरमत मैल धवाइंदा। उजल कर मन्दर मनार, गृह आपणा आसण लाइंदा। सोई सुरती कर के ख़बरदार, शब्द हाणी आप जगाइंदा । अमृत पाणी ठंडा ठार, निझर झिरना इक्क झिराइंदा। बजर कपाटी खोल्ह किवाड़, पड़दा दूई द्वैत परे हटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार इक्क वधाइंदा।

सच प्यार देवे भगवन्त, जन भगतां दया कमाईआ। मेल मिलावा धुर दी नार कन्त, जगत विछोड़ा रहण कोई ना पाईआ। उत्तम श्रेष्ट कर के विच्चों जीव जंत, साध सन्त विच्चों उठाईआ। अन्तर आत्म मणीआं मंत, मन का मणका दए भवाईआ। बोध अगाध बण के पंडत, निरअक्खर करे पढ़ाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। मेल मिलावा जोत अखण्डत, खण्ड ब्रह्मण्ड चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रेम इक्क रखवाईआ।

पुरख अकाल प्रेम अगम्म, अगम्मड़ी खेल कराइंदा। कोई समझ ना सके काया माटी चंम, तत्तव तत्त गंढ ना कोई बंधाइंदा। मेहरवान हो के जिन्हां अन्तर आत्म देवे बंन्ह, परमात्म आपणा रंग रंगाइंदा । जोत प्रकाश चाढ़ के चन्न, रव सस नैण शरमाइंदा। नाम पदारथ देवे धन, अनमुलड़ी दौलत आप वरताइंदा। शब्द संदेश सुणाए कन्न, अनरागी राग अलाइंदा। मन वासना बंन्हे मन, ममता मोह मिटाइंदा। पंच विकारा देवे डंन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रेम इक्क रखवाइंदा।

पुरख अकाल प्रेम इक्क, एकँकार वंड वंडाईआ। जग नेत्र किसे ना आए दिस, लक्ख चुरासी दरस कोई ना पाईआ। मेहरवान हो के जिस गुरमुख पाए भिख, भिच्छया आपणी इक्क वरताईआ। अन्तर आत्म कर के हित, परमात्म मेला सहज सुभाईआ। करवट लै बदले पिठ, सनमुख नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ।

पुरख अकाल प्रेम अव्वलड़ा, शास्त्र सिमरत वेद पुरान रहे जस गाईआ। दो जहान करे

इक्क इकल्लड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेतज आपणा बंधन पाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों हरिजन विरले फड़े पलड़ा, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। जोती शब्दी निरगुण निरगुण धार रलड़ा, सरगुण सरगुण देवे माण वडयाईआ। वसणहारा निहचल धाम अव्वलड़ा, उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा रंग रंगाईआ।

सतिगुर प्यार सदा सदा सद सज्जण, एथे ओथे संग बणाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर कराए धुर दा मज़न, दुरमत मैल धवाइंदा। शब्द अगम्मी ताल नाद अनादी वज्जण, ढोलक छैणा ना कोई खड़काइंदा। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, भरम भउ मिटाइंदा। दरस वखाए गोपाल मूरत मदन, मध सूदन आपणी कार कमाइंदा। हरिभगत सुहेले मस्तक तिलक ललाट लगाए चन्दन, जोती जाता डगमगाइंदा। निमस्कार नमो नमो स्वामी इक्को दस्से बन्दन, डण्डौत साची इक्क समझाइंदा। अन्तर आत्म परमात्म बख्श के अनन्दन, निजानंद रस चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा।

सतिगुर प्यार जगत जग चार, कोटन कोट काल मुक्क कदे ना जाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त विहार, बिवहारी आपणी कार कमाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, जोती जाता फेरा पाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, नाद धुन करे शनवाईआ। सेवा ला गुर अवतार, पीर पैगम्बर हुक्म मनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान बण लिखार, कातब आपणी कलम चलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा नव नौ पाए सार, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। घट घट अन्दर दीआ बाती कमलापाती निरगुण जोत कर उजिआर, गृह गृह करे रुशनाईआ। शब्द संदेशा नर नरेशा सति सति देवे देवणहार, सति सतिवादी आप सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव भरनहार भंडार, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ।

पुरख अकाल प्रेम सदा सद, निरगुण सरगुण आप कराइंदा। जगत दवार कर के पार, हद्द, घर आपणा इक्क वखाइंदा। बिन मक्के काअबिउँ कराए हज, बिन मन्दर मसीत शिवदवाले मठ्ठ गुरूदवार इक्को इक्क वडिआइंदा। लहणा देणा चौदां लोक चौदां तबक हट्ट, चौदां विद्या पन्ध मुकाइंदा। सच प्रीती अन्दर रक्ख, रक्खक हो के सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। जगत जहानों कर के वक्ख, भेव अभेदा भेव खुल्हाइंदा। आपणे मिलण दी खोल्ह के अक्ख, निज नेत्र पड़दा लाहिंदा। दूई द्वैती मेट के फट, कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। लेखे लाए काया रत, रती रत आपणे रंग रंगाइंदा। अन्तर आत्म दे के ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। मेल मिलावा कमलापति, कन्त कन्तूहल इक्को नज़री आइंदा। सच्चा मार्ग धुर दा दस्स, रहबर हो के पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार इक्क दृढ़ाइंदा।

सच प्यार करे जन भगत, प्रभ आपणी दया कमाईआ। उत्तम होवे विच्चों जगत, जग जीवण दाता वेख वखाईआ। लेखे लाए बूंद रकत, पंज तत्त वज्जे वधाईआ। नाम खुमारी करे मसत, दिवस रैण आपणी धार चलाईआ। लेखा चुक्के कीट हसत, ऊँच नीच ना कोई समझाईआ। दीन मज़्हब ना कोई फ़रक, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोई वंडाईआ। वेख वखाए जोधा सूरबीर मरदाना मरद, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। ग़रीब निमाणयां

कोझयां कमलयां वंडे दर्द, दुखीआं दुःख आपणी झोली पाईआ। सतिगुर प्रेम सदा असचरज, अचरज लीला विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ।

सतिगुर प्यार सदा सदा सद नित, आदि जुगादि रहे जस गाईआ। पुरख अकाल कीता गोबिन्द बण के पित, हेमकुण्ट वज्जी वधाईआ। गोबिन्द गुरमुखां वस्सया चित, चित वित ठगौरी कोई ना पाईआ। पूरब लेखा वेख अगला दिता लिख, बाकी रहण ना कोई पाईआ। शब्द सतार मारे खिच, दोहरा ताल वजाईआ। जो गुरमुख गुरसिख मुख भवा दे जाए पिठ, तिस ठौर कोई ना पाईआ। एथे ओथे मिले ना कोई सुख , सांतक सति ना कोई कराईआ। जननी सफ़ल ना होवे कुक्ख, दस दस मास पन्ध ना कोई चुकाईआ। जो गुरसिख सतिगुर प्यार प्रभ सरन प्रीती गए झुक, सीस जगदीस भेट चढ़ाईआ। ओनां पैंडा जाए मुक्क, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रेम इक्क वखाईआ।

सतिगुर प्रेम ना होए विछोड़ा, विछड़ कदे ना जाईआ। आदि जुगादि भगत भगवान दा जोड़ा, जुग चौकड़ी सोभा पाईआ। जगत अन्दर वेखे अन्ध घोरा, चार कुण्ट दह दिशा खोज खुजाईआ। पावे सार ठग्ग चोरां, लुकया कोई रहण ना पाईआ। पशू पंखी चारे खाणी वेखे ढोरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान भेव खुलाईआ।

सतिगुर प्रेम गुरमुख विरले जाता, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। बिन पढ़यां होया ज्ञाता, चौदां विद्या चरनां हेठ दबाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आत्म अनादी जुड़या नाता, बिधाता आपणे रंग रंगाईआ। उत्तम होई जगत ज़ाता, जोती जोत करे रुशनाईआ। साचा खेल अगम्म अथाह काया मन्दर अन्दर भाखा, बाहरों करे ना कोई पढ़ाईआ। मंज़ल मंज़ल चुक्के वाटा, पौड़ी पौड़ी लए चढ़ाईआ। जन्म कर्म दा पूरा करे घाटा, पूरे सतिगुर हत्थ वडयाईआ। आत्म सेज सुहञ्जणी सुहाई खाटा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। अमोलक अमुल अतुल नाम पदारथ देवे दाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर प्रेम इक्क बंधाईआ।

सतिगुर प्रेम धुर दा बंधन, बन्दगी विच्चों बन्दना नज़री आईआ। जिनां उठाया आपणे अंगन, साची गोदी लए बहाईआ। सो गुरसिख दूजे दवारे कदे ना जावण मंगण, गदागर ना रूप वटाईआ। निज आत्म मानण इक्क अनन्दन, परमानंद विच्च समाईआ । वेखे खेल विच्च ब्रह्मण्डन, वरभंडी भेव उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रेम इक्क लगाईआ।

सतिगुर प्रेम जिनां लग्गा, लग मातर नज़र कोई ना आईआ। सति खुमारी अन्दर फिरे भज्जा, मंज़ल आपणी पन्ध मुकाईआ। जगत वासना होए ना गंदा, कूड़ी क्रिया ना कोई कुड़माईआ। सीतल धार सदा ठंडा, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। अन्तर आत्म होवे ना रंडा, कन्त सुहागी इक्क हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम अन्दर प्रेम जणाईआ।

सतिगुर प्रेम डूंघा सागर, जगत नईआ नौका हत्थ किसे ना आईआ । जन भगतां देवे दो जहान आदर, आदरश आपणा इक्क वखाईआ । करता पुरख करीम क़ादर, कुदरत दाता

बेपरवाहीआ। नित नवित्त सदा सदा सद जन भगतां अग्गे हाज़र, हज़ूर हज़रत आपणा रूप वटाईआ। जोधा सूरबीर बण बहादर, कूड़ी क्रिया मन वासना परे देवे हटाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, जो सतिगुर प्यार बणे सौदागर, घर मन्दर हट्ट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम अन्दर डोरी तन्द इक्क जणाईआ।

प्रेम अन्दर सतिगुर मता, मनमत समझ कोई ना पाईआ। प्रेम अन्दर सतिगुर रता, रती रत रंग ना कोई रंगाईआ। प्रेम अन्दर सतिगुर वसा, घर घर विच्च डेरा लाईआ। प्रेम अन्दर सतिगुर नट्ठा, भज्ज भज्ज नौ दवारे पन्ध चुकाईआ। प्रेम अन्दर सतिगुर सति पुरख निरञ्जण सदा समरथ्था, समरथ आपणी कार कमाईआ। प्रेम अन्दर निज नेत्र जन भगतां खोल्हे अक्खां, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

करे प्रेम जोत निरँकारी, निरगुण हत्थ वडयाईआ। सरगुण सति शब्द प्यारी, प्रेम प्रीती इक्क बणाईआ। गुरमुखां गुरसिखां जन भगतां साचे सन्तां रंग रिहा चाढ़ी, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वेखे विगसे वारो वारी, नेत्र नैण अक्ख नज़र किसे ना आईआ। प्रेम विच्चों प्रेम करे शिंगारी, तन जोबन देवे माण वडयाईआ। सतिगुर प्रेम पुच्छो कोलों लाल दरबारी, जिस गृह दरबार लिआ लगाईआ। एह फ़ील हाथीआं नालों उच्ची हमारी, जिस उपर बैठा आसण लाईआ। त्रेते जुग दी पिछली यारी, याराना भुल्ल कदे ना जाईआ। अञ्जण तेरी अंग लग्गण दी आई वारी, बिन सतिगुर पूरे वारता पिछली ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती रिहा वखाईआ।

सच प्रीती मिल्या पिर, पीर पैगम्बर इक्क अखवाइंदा। जिस दा लेखा लहणा गिर, गहर गवर आपे खोज खुजाइंदा। जिस दी जग नेत्र तक्क सके ना कोई तस्वीर, मुसव्वर तसव्वर ना कोई कराइंदा । जो मंज़ल चोटी चढ़ के बैठा अख़ीर, मुकामे हक सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , धुर दा प्रेम इक्क बणाइंदा।

धुर दा प्रेम करे गुर पूरा, सतिगुर पूरे हत्थ वडयाईआ। जिस दा लेख ना होवे अद्धूरा, कूड़ा निहों ना कदे लगाईआ। चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, ग़रीब निमाणे कोझे कमले गोद उठाईआ। दाता बण के जोधा सूरा, कूड़ी क्रिया परे हटाईआ। नाम खुमारी कर मख़मूरा, मुशकल अगली हल कराईआ। हाज़र हो के सच हज़ूरा, हाज़री आपणी लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ।

दरबारी लाल प्रेम अपार, सतिगुर सति सति जणाईआ। जिस नूं तरसदे सदा सदा जुग चार, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। जिस दा राह तक्कण करोड़ तेतीसा नैन उघाड़, सुरपत इन्द संग मिलाईआ। जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिस नूं गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मन्नया पुरख अकाल, अकल कलधारी वड वडयाईआ। जो नित नवित्त दो जहानां दीन दयाल, दीन दुनी आपणी झोली पाईआ। जिस दे हत्थ काल महांकाल, राए धर्म बैठा सीस झुकाईआ । सो साहिब सतिगुर खेल करे कमाल, जिस कमाला कबीर जुलाहा दिती माण वडयाईआ। सो सच सति बणाए सच्ची धर्मसाल, जिस

गृह आपणा चरन टिकाईआ। त्रेता जुग दी प्रीती रिहा पाल, प्रितपालक भुल्ल कदे ना जाईआ। एहो शब्द अनोखी जगत मसाल, जिस दी मिसल ना किसे बणाईआ। शास्त्रां विच्चों ना मिले अहिवाल, वेदां विच्चों ना कोई दसाईआ। ज्ञानां विच्चों ना कोई ज्ञान, ध्यानां विच्चों ना कोई ध्यान, कुरानां विच्चों ना कोई ईमान, ईमानां विच्चों ना कोई प्रगटाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म जुग जुग विछड़यां मेले आण, विछोड़ा पिछला पन्ध मुकाईआ। एहो जिहा लभ्भयां किसे ना मिले भगवान, जो घर बैठयां रिहा तराईआ। कोटन कोट तीर्थ तट्टां गंगा गोदावरी जमना सुरसती करदे दान, जगत अशनान तारीआं लाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाही गौंदे गान, अक्खरां नाल अक्खर मेल मिलाईआ। बिन सतिगुर प्रीती किसे ना मिल्या साचा थान, सचखण्ड सोभा कोई ना पाईआ। तन माटी ख़ाकी ख़ाक रहे छाण, जिन्हां भुल्लया बेपरवाहीआ। ना सिदक ना कोई ईमान, सबर सबूरी संग ना कोई रखाईआ। इक्को नाता जुड़या पीण खाण, रसना जिह्वा जगत हलकाईआ। जिन्हां प्रेम प्रीती अन्दर आपणा आप कीता बलीदान, सो जोधा सूरबीर दो जहान सोभा पाईआ। जिन्हां अन्दर काम शैतान, लोभ मोह हँकार हलकाईआ। सो सतिगुर स्वामी बिन हरि किरपा सके ना कोई पछाण, नेत्र अक्ख दरस कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआा।

बेपरवाह प्रेम प्रीती अन्दर मधा, आदि जुगादि इक्को रंग समाईआ । जन भगतां दे साचा सद्दा, घर साचे मेल मिलाईआ। मेहरवान हो के पड़दा कज्जा, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। भगत जगत कोई रहे ना नंगा, ओढन इक्को नाम जणाईआ। अमृत आत्म साचा नीर वहाए गंगा, गोदावरी सुरसती नाल मिलाईआ। नूरी चन्द चमकाइ चन्दा, चौदस चौदां वेख वखाईआ। सच दवार वखाए ठंडा, चरन कँवल वडयाईआ। नाता तोड़ के जेरज अंडा, उत्भुज सेतज लहणा रिहा मुकाईआ। बिनां बन्दगीउँ पार कर के बन्दा, बंधन सारे रहे तुड़ाईआ। जो हरि संगत विच्च मिल के होया गंदा, तिस दी गंदगी अग्गे पिच्छे सके ना कोई धवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादि जुग चौकड़ी सद बख्शंदा, बख्शणहार इक्क अखवाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर जिन्हां बिन डोरी तन्द बधा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ।

सतिगुर प्रेम सच्चा हक़ा, हकीकत विच्चों नज़री आईआ। लोड़ चुकाए मदीना मक्का, मक़बरयां लेखा दए मुकाईआ। परवरदिगार नूर इल्लाही सांझा यार वखाए आपणी अक्खां, निज लोचण इक्क खुल्हाईआ । लहणा चुकाए चौदां तबकां जगत हट्टां, घर मन्दर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम अन्दर रंग चढ़ाईआ।

जन भगत कहे प्रभ पाया प्रेम इक्क, घर वज्जी नाम वधाईआ। दिवस रैण लग्गी सिक, अठ्ठे पहर रही सताईआ। आत्मा किते ना बहवे टिक, मन मत बुद्ध समझ कोई ना पाईआ। जिस मेरा लहणा दिता लिख, सो देवणहार वेख वखाईआ। ओस दे चरन प्रीती बिन कीमतों जावां विक, ख़ाकी माटी भेट चढ़ाईआ। उह साहिब निराला जोत अकाला सदा प्रितपाला आपे करे हित, हितकारी वड वडयाईआ। दूर दुराडा नेरन नेरा गृह वसणहारा आत्म परमात्म मारे रिवच, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पड़दा चुकाए जो अन्तर विच, विच्चों आपणा आप प्रगटाईआ।

सतिगुर प्रेम अन्दर वड़या, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख कोई मेरे मन्दर चढ़या, पौड़े पौड़े क़दम टिकाईआ। सच दवारे जा के खड़या, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नड़या, अज्ञान अन्धेरा दिता मिटाईआ। आत्म मिल के परमात्म ढोला इक्को पढ़या, सोहँ राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रीती आपणे नाल जुड़ाईआ।

सतिगुर प्रीती प्रेम प्यारी, प्यारयां विच्चों नज़री आईआ। गुरमुख करे विरला बण के नारी, नर नरायण कन्त हंढाईआ। जिस दी तुट ना जाए यारी, आदि जुगादि मुख ना कदे भवाईआ। सच महल्ल बिठाए अटारी, महिफ़ल आपणे नाल लगाईआ। दीआ बाती कमलापाती निरगुण जोत करे उजिआरी, दीवा बाती नज़र कोई ना आईआ। शाह पातशाह सच्चा सिकदारी, तख़त निवासी इक्क अखवाईआ। जोधा सूरबीर बलकारी, मर्द मरदाना सोभा पाईआ। नूर इल्लाही परवरदिगारी, मुकामे हक़ करे रुशनाईआ। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला सच तौफ़ीक सच सरदारी, शाह नवाब वडी वडयाईआ। पीर पैगम्बर जिस दे कदमां उत्ते मस्तक रक्ख मंगण दात अपारी, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। सो बख्शणहारा देवे प्रेम प्रीती वड संसारी, जगत रीती नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ।

सतिगुर प्रेम जिनां जग लाया, लग्गी अग्ग बुझाईआ। नाता तुटा त्रैगुण माया, रजो सतो तमो पोह ना सके राईआ। परम पुरख दी मिली छाया, भय भउ रहण कोई ना पाईआ। गृह मन्दर आपणा इक्क सुहाया, घर साचे वज्जे वधाईआ। नाम अगम्मी ढोला गाया, जोत नूर दिता प्रगटाईआ। जन्म मरन दा गेड़ चुकाया, आवण जावण रिहा ना राईआ। मात गरभ ना फेरा पाया, दस दस मास ना अगन तपाईआ। चित्रगुप्त ना लेख वखाया, लाड़ी मौत ना कोई कुड़माईआ। जेरज अंडज उत्भुज सेतज ना कोई भवाया, चारे खाणी नाता गिआ तुड़ाईआ। साची बाणी राग अलाया, परा पसन्ती मद्धम बैखरी निउँ निउँ सीस निवाईआ। कागद कलम ना लेख चुकाया, शाही नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सतिगुर प्रेम इक्क सिखाया, जिस दी सिख्या दो जहानां पाईआ। तेई अवतारां मिल के संग निभाया, ईसा मूसा मुहम्मद जोड़ जुड़ाईआ। नानक गोबिन्द गंढ रखाया, पल्लू आपणा इक्क फड़ाईआ। भगत अठारां रंग चढ़ाया, प्रेम प्रीती अन्दर वज्जी वधाईआ। तकदयां तकदयां लोकमात एह वेला आया, जिस दी रुतड़ी आप सुहाईआ। गुर चेला इक्को घर बहाया, घर साचे खुशी वखाईआ। पूरब जन्म दा विछड़या मेला अन्त मिलाया, मिलनी हरि जगदीस कराईआ। सज्जण सुहेला बण के आया, दूर दुराडा पान्धी राहीआ। वेला वक़त आप सुहाया, भिन्नड़ी रैण खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्यार इक्क जणाईआ। वेखो प्रेम प्यार परम पुरख दा, प्रीतां विच्चों प्रीत लगाईआ। नाता जोड़ पिओ पुत दा, गुरमुख गुर गुर गोद बहाईआ। आपणे निशानउँ कदे ना उकदा, जुग चौकड़ी शब्दी तीर चलाईआ। कलिजुग वेखो पन्ध मुक्कदा, रैण अन्धेरी पड़दा दए उठाईआ। जन भगतां मार्ग दस्से सुख दा, सुख आत्म विच्च जणाईआ। एह खेल मर्द मरदाने मनुख दा, जो मनुश देवत रिहा बणाईआ। पसू प्रेत प्रेम प्यार अन्दर गोदी चुक्कदा, देवणहार वडयाईआ। सतिगुर पूरा कदे ना रुठ्ठदा, जुग जुग रुसयां लए मनाईआ। आपणे मार्ग उतों रहबर हो के कदे ना उक

दा, भज्जा जावे वाहो दाहीआ। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त पसू पंखी पंछी आपे पुच्छदा, समुंद सागर जल मीन वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती इक्क लगाईआ।

सच प्रीती लावणहारा, हरि करता इक्क अखवाइंदा। जुग चौकड़ी लै अवतारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखणहारा, ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाइंदा। पृथ्मी आकाश पावे सारा, गगन मण्डल पड़दा लाहिंदा। रव सस सूरज चन्द दए अधारा, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कलिजुग अन्तम सुण पुकारा, सति सतिवादी वेस वटाइंदा। कल कलकी लै अवतारा, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। शब्दी डंका विच्च संसारा, राओ रंका आप सुणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी वसे बाहरा, अनभव आपणा राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्यार अन्दर सर्ब समझाइंदा।

प्रेम प्यार सर्ब दा सांझा, हरि सतिगुर आप जणाईआ। इस तों कोई ना रहे वांझा, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोई वंडाईआ। आत्म परमात्म सभ दा गाँदा, गा गा खुशी मनाईआ । मन वासना भरया भाण्डा, नौ दर कूड़ हलकाईआ। दसम दवारी खेल ठांडा, हरि ठोकर नाल जणाईआ। पूरब जन्म जो थक्का मांदा, तिस फड़ बाहों लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्यार इक्क वखाईआ।

प्रेम प्यार दए वखाल, गुर गुर आप जणाईआ। सतिगुर होए दयाल, दीनन लए तराईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आ के वेखे मुरीदां हाल, मुशर्द आपणा फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख भाल, हरिजन आपणे नाल जुड़ाईआ। निरगुण हो के बणया दलाल, सरगुण वणज इक्क कराईआ। जो पूरब जन्म घालण गए घाल, तिन्नां लेखा लहणा रिहा झोली पाईआ। हकीकत जानणहार हलाल, हर घट वेखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। प्यार कहे मैं बाला निक्का, निकया विच्चों नज़री आईआ। परम पुरख अकाल इक्को पिता, पिता इक्को इक्को मेरी माईआ। जिस मेरे मस्तक आपणा लाया टिक्का, टिकटिकी आपणे नाल लगाईआ । मैं ओस दे कोलों सिक्खी इक्को सिखा, सिखां नाल मिल के आपणा झट लंघाईआ। लोकमात मैनूं सच प्रेम दा मिल्या हिस्सा, सोहणी वस्त आपणे विच्च टिकाईआ। जे कोई मेरे प्यार दा रसना गौंदा रहे किस्सा, हिरदे हरि ना सके वसाईआ। मैं उन्नां कदे ना दिसा, नेत्रहीण देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मेला रिहा मिलाईआ।

गुरमुख कहे मैं प्यारा प्रेम, प्रेमीआं विच्चों नज़री आईआ। राह तक्कण मेरे नैण, लोचण आसा नाल तरसाईआ। अन्दरों नाद अनादी सारे कहण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। आत्म पावे वैण, रो रो दए दुहाईआ। कवण वेला मेरा मिले सैण, सज्जण बेपरवाहीआ। नाता तुट्टे भाई भैण, मात पित नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रेम आप वरताईआ।

पुरख अकाल कहे मैनूं धुर दा फ़िकर, फ़िकरयां विच्च ना किसे समझाईआ। जो मेरी

धारों आए निकल, अन्तम ओन्नां लैणा मिलाईआ । धुर दा प्रेम बण के मित्र, साचा मेला देणा कराईआ। आसा मनसा पूरी कर के इच्छत, भिच्छया धुर दी झोली पाईआ। नाता तोड़ दोज़ख़ जन्नत स्वर्ग बहिश्त, चरन कँवल देणी सरनाईआ। बिन गुर अवतारां पीर पैगम्बरां साचे भगतां मेरे नाल किसे ना लाया इशक, आशक माअशूक हक़ीक़ी मज़ाजी दोवें ना गए तजाईआ । कर किरपा जिस नूं आपणा दिता इष्ट, दृष्ट इक्क खुल्लाईआ। सो गुरमुख नाता तोड़ के कूड़ी सृष्ट, प्रेम सतिगुर नाल पाईआ। जिन्नां दी बाकी जुग जुग दी बचत रह गई लिखत, उन्नां दे लेखे आप लिखवाईआ। एहो सतिगुर प्यार दी साची मिव्रत, जिस दी रसना जिह्वा सार ना पाईआ। गुरू प्यार बदले करनी पए ना किसे दी मिन्नत, झोली अगे किसे ना डाहीआ। जो सतिगुर सरनी लग्ग के करे ना इल्लत, तिस कोझे कमले पार कराईआ। बिन सतिगुर किरपा पंज तत्त काया माटी किसे ना मिलदा खिलअत, सिर हत्थ ना कोई रखवाईआ। अन्त खुआरी दुनियांदारी ज़िल्लत, ज़ेबोज़ीन नज़र कोई ना आईआ। प्रेम प्यार प्रभू दी मिल्लत, मिल मिल भगतां खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा प्रेम सर्ब समझाईआ।

साचा प्रेम सुणो चार वरन, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश आप दृढ़ांइदा । निज नेत्र खोल्लो हरन फरन, जिस दे विच्चों सतिगुर नज़री आइंदा । दर्शन पाउ धरनी धरन, तारनहारा दया कमाइंदा। लेखा चुकाउ मरन डरन, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा। सिख्या सिखो साचे पौड़े चढ़न, काया मन्दर अन्दर इक्क दरसाइंदा। लेखा मुक्के वरन बरन, ज़ात पात ना कोई समझाइंदा। परम पुरख दी साची सरन, सरनगत इक्क रखवाइंदा। आत्म परमात्म जग जीव जहान ढोला पढ़न, धुर दा राग इक्क सुणाइंदा। दरगाह साची सच दवारे सन्त सुहेले वड़न, अद्धविचकार ना कोई अटकाइंदा। प्रेम प्यार प्रीती अन्दर जो सतिगुर सरनाई पड़न, तिन्नां मस्तक टिक्का नाम निधान इक्क लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रेम इक्क बणाइंदा।

सच प्रेम बणया दरबारी लाल, लालां विच्चों लाल नज़री आईआ। जिस दा निरगुण बण दलाल, सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। पूरब हल्ल होया सवाल, अग्गे लेखा चुक्कया कलम शाहीआ। साची गोदी लए उठाल, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वडयाईआ।

हरिजन वड्डिआई माणस जन्म, कलिजुग वज्जे सच वधाईआ। निहकर्मी लेखे लाए तेरा कर्म, कर्म कांड डेरा ढाहीआ। धुर सरनाई हरि दी सरन, सरनगत इक्क जणाईआ। कूड़ी क्रिया कुड़ावे पाप झड़न, दुरमत मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

मेहर नज़र जन लाल रंगीले, रंग रत्ता आप चढ़ाइंदा। प्रभू मिलण दे सच वसीले, वसल आपणा इक्क कराइंदा। लेखा चुक्कया जगत तासीले, सच आदालत अदल कमाइंदा। लभ्भणा पए ना कोई वकीले, वुकला संग ना कोई रखवाइंदा। अग्गे करनी ना पए अपीले, अपरंपर स्वामी अन्तरजामी सेव कमाइंदा। जो वसदा अम्बर उपर नीले, नीले वाले जोड़ जुड़ाइंदा। जिस नूं समझ ना सके कोई दलीले, सोच सोच ना कोई रखवाइंदा। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन साचे सच नगीने, तख़त निवासी आपणे ताज टिकाइंदा। जेहड़ा परवरदिगार मिल्या

ना मक्के मदीने, मददगार हो के फेरा पाइंदा । साचे असव कस के ज़ीने, शाह सवारा वेस वटाइंदा। दो जहानां कर अद्धीने, आहला अदना भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्यार अन्दर वेख वखाइंदा।

वेखे अन्दर प्रेम अथाह, दीन दुनी समझ ना आईआ। रहबर बण के इक्क खुदा, खुदी तक्ब्बरी रिहा मिटाईआ। जो आत्म नालों होया जुदा, जुज़ आपणा वंड वंडाईआ। सो साहिब मेहरवान, महबूब फेरा पाईआ। कोई समझ ना सके इन्सान, हैवान भेव ना राईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा लाउँदे गए अनुमान, भविख्त ढोले राग अलाईआ। सो निरगुण निरवैर निराकार अजूनी रहित भगवान, जन भगतां होए सहाईआ। गुरमुखो गुरसिखो प्रेम प्रीती बिन मंगया देवे दान, ठांडी सीती झोली पाईआ। शब्द स्वामी धुर दा काहन, घनईआ बंसरी नाम वजाईआ। सीता सुरती सईआ मईआ करे परनाम, बंधन इक्को इक्क वखाइंदा। चार वरन अठारां बरन लम्भया ना विच्च जहान, चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड सत्त दीप आप समझाइंदा। सतिगुर प्यार सच्चा ईमान, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत साचे सन्त जुग जुग जगत करन जहान, जिनां ध्यान आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सरूपी हो मेहरवान, शब्द सरूपी आपणा राह वखाइंदा। (५ भादरों २०२१ बि)

सार शब्द : शब्द सुत कर दुलारा, हरि साचे खुशी मनाईआ। थिर घर सुहाया सच मुनारा, जोती मात सगन कराईआ। आदि अन्त देवे इक्क प्यारा, एका मुख सलाहीआ। एका रंग रंगे रंगणहारा, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत देवे वर, सार शब्द नाउँ धराईआ। सार शब्द तेरी धार, हरि साचे आप बणाईआ। ना कोई दूसर करे विचार, भेव कोई ना पाईआ। एका दूआ इक्क प्यार, एका घर सुहाईआ। एका पुरख एका नार, एका गोत होई कुड़माईआ । एका पूत होया उजिआर, एका सूत तन्द बंधाईआ। चारे कूट वेख विचार, दह दिशा फेरी पाईआ। पुरख अबिनाशी गिआ तुठ, थिर घर सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नाम आपे दए वडयाईआ। (१६ जेठ २०१५ बि)

हरि शब्द हरि सार, सार शब्द आप अखवाईआ। गुर शब्द गुर अधार, गुर गुर रिहा टिकाईआ । नाम शब्द शब्द प्यार, गुरमुख साचे रिहा कमाईआ। मूर्ख मूढ़े भुल्ले जीव गवार, मनमत रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, आप आपणी चलत चलाईआ। (२५ मध्घर २०१५ बि)

हरि सतिगुर दीन सच्चा दयाल, इक्क इकल्ला एकँकारया। गोबिन्द मीता गुर गोपाल, खेले खेल अगम्म अपारया। गुरमुख वेखे साचे लाल, आप आपणी दया कमा रिहा। मनमुखां मारनहारा मार, जुग जुग आपणा वेस वटा रिहा। आदि जुगादी इक्क अवतार, निरँकार आप अखवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सार शब्द तेज़ कटार, निरँकार हत्थ रखा रिहा।

सार शब्द साचा खण्डा, हरि साचा हत्थ उठाइंदा। वेख वखाए विच्च ब्रह्मण्डां, लोआं पुरीआं फोल फोलाइंदा। आपणी वंडे आपे वंडा, वंडणहार इक्क अखवाइंदा। मेटणहारा भेख परवण्डा, लोकमात जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द धार विच्च संसार, एका आप रखाइंदा।

सार शब्द अगम्म अथाह, वेद कतेब भेव ना पाईआ। आपे जाणे बेपरवाह, आप आपणी रचन रचाईआ। पारब्रह्म सच सेव कमा, सेवक सेवा आप लगाईआ। अलक्ख अभेव आप अखवा, अलख निरञ्जण नूर रुशनाईआ। सचखण्ड दवारा दए सुहा, आप आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची कार हरि निरँकार जुगा जुगन्तर आप कराईआ। (२६ जेठ २०१६ बि)

निरगुण धार शब्द सार, हरी हरि आप उपजाईआ। आपे वेखे करे विचार, आप आपणी दया कमाईआ। तिखीआं रक्खे दोवें धार, नाम निधाना आप उपजाईआ। थिर घर साचे बैठ दवार, धुर दरबारा इक्क सुहाईआ। इक्क इकल्ला अकल कल धार, अकाल मूरत खेल खलाईआ। अजूनी रहित सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण लाईआ। बेऐब खुदाई परवरदिगार, रूप अनूप आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणाईआ।

सार शब्द शब्द अपारा, हरि हरि आप उपजाइंदा। जोती माता कर प्यारा, पूत सपूता झोली पाइंदा। पुरख अबिनाशी सुत दुलारा, एका एक आपणा आप उपजाइंदा। आदि निरञ्जण कर प्यारा, आप आपणा अंग लगाइंदा। पारब्रह्म प्रभ दए सहारा, साचा संग निभाइंदा। थिर घर साचे कर उजिआरा, एका हुक्म सुणाइंदा। करे कराए करनेहारा, कादर करता आप अखवाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सार शब्द आप उपजाइंदा। सार शब्द हरि का रूप, हरि हरि आप उपजाईआ। आप वसाए चारे कूट, दह दिशा आप टिकाईआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, आपे वेख वखाईआ। खेले खेल पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, जागरत जोत करे रुशनाईआ । एका एक दुलारा सुत, सतिगुर आपणा नाउँ धराईआ। पंज तत्त ना दिसे बुत्त, काया गढ़ ना कोई वखाईआ । ना कोई किला ना कोई कोट, मन्दर महल्ल ना कोई वखाईआ। ना कोई नगारा ना कोई चोट, डंका डौरू कोई ना वाहीआ। इक्क रखाई आपणी ओट, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका तत्त एका सार, एका रूप इक्क करतार, एका नूर करे रुशनाईआ।

सार शब्द शब्द उजाला, हरि सतिगुर आप उपजाइंदा। पारब्रह्म प्रभ गुर गोपाला, गोबिन्द आपणा नाउँ धराइंदा। आपे खेले खेल निराला, आप आपणी कल वरताइंदा। शब्दी शब्द अवल्लड़ी चाला, भेव कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सार वंडी वंड, आप उपजाए कोट ब्रह्मण्ड, कोटन कोटां विच्च मिलाईआ। सार शब्द कर त्यार, हरि हरि खेल खलाइंदा। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, शब्दी बंधन पाइंदा। रव सस कर उजिआर, एका हुक्म सुणाइंदा। मण्डल मंडप दए सहार, आप आपणा संग निभाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव खबरदार, आप आपणी अंस उपजाइंदा। बंस सरबंसा हो त्यार, रसना सहसा

आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द शब्दी सार, सतिगुर साचा आप हो जाइंदा।

सार शब्द हरि मीत, सतिगुर रूप वटाया। आदि जुगादी इक्क अतीत, सच घर बैठा आसण लाया। पुरख अबिनाशी पतित पुनीत पतित पावण नाउँ धराया। सदा सुहेला ठंडा सीत, अगनी तत्त ना कोई रखाया। एका भाणा जाणे मीठ, आपणे भाणे विच्च टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी रीत, आपणा मार्ग आपे लाया, शब्द सार सच घर, घर साचे वज्जी वधाईआ।

पारब्रह्म प्रभ किरपा कर, प्रभ आपणा नाउँ धराईआ। आपे देवणहारा वर, आपे करे कुड़माईआ। आप नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क सुहाईआ। आपे अन्दर जाए वड़, आपे बैठा डेरा लाईआ। आपे विद्या रिहा पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। आपणा लड़ आपे फड़, आपे वेख वखाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, मूरत अकाल इक्क उपजाईआ। ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना कोई बीज रिहा बिजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द शब्दी धार, सति सरूप आप उपजाईआ।

सार शब्द हरि का रंग, हरि हरि आप उपनया। आपे मंगे आपणी मंग, आपे देवे माल नाम धन धनया। आपे होए सदा संग, सतिगुर पूरा आपे मन्नया। आपे सच सिँघासण बैठ पलंघ, थिर घर साचा इक्क सुहंनया। आप वजाए इक्क मरदंग, नाम मरदंगा इक्क रखंनया। लोआं पुरीआं आपे लंघ, ब्रह्मण्डां खण्डां फिरे भंनया। आपे वेखे सूरज चन्न, रव सस आपे बेड़ा बंनया। आपे वसे पंज तत्त तन, आप सुणाए आपणा राग कंनया। आपे देवणहारा डंन, जुगा जुगन्तर देवे डंनया। आपे जननी जन लए जन, भगत वछल आप अखवंनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सार शब्द एका वर, एका घर सहुंनया।

सार शब्द ग़रीब निवाजा, आपणा आप उपजाइंदा। शाहो भूप वड राजन राजा, एका हुक्म सुणाइंदा। एका असव एका ताजा, एका हरि दौड़ाइंदा। एका पुरख आत्म वजाए वाजा, अनहद एका ताल वजाइंदा। एका आदि जुगादी रचे काजा, जुगा जुगन्तर वेख वखाइंदा। एका लक्ख चुरासी साजण साजा, एका त्रैगुण मेल मिलाइंदा। एका पंचम खोल्हे पाजा, एका पंचम मोह चुकाइंदा। एका मक्का काअबा हाजी हाजा, शरअ शरीअत इक्क वखाइंदा। एका पंडत पांधा देवे दाजा, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ांइंदा। एका मारनहारा वाजा, गुरमुख सोए आप उठाइंदा । सार शब्द जुग रक्खे लाजा, आदि जुगादी आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द शब्द अगम्मा ना मरे ना कदे जम्मा, मात गरभ ना फेरा पाइंदा।

सार शब्द शब्द अनमोल, हरि सतिगुर हरि उपजाईआ। आपणे अन्दर आपे मौल, फुल्ल फुलवाड़ी आप खिलाईआ। आपे भरया अमृत कँवल, कँवल नाभी मुख भवाईआ। आपे लेखा जाणे धरत धवल, धवल धरनी धरत आप सुहाईआ। आपे रहे आदि जुगादि सदा अडोल, लक्ख चुरासी रिहा डुलाईआ। गुरमुख साजण तोले आपणे तोल, नाम कंडा हत्थ उठाईआ।

मनमुख जीव रहे अनभोल, हरि का भेव कोई ना पाईआ। गुरमुखां पर्दा देवे खोल्ह, अन्तर आत्म इक्क जणाईआ। सतिगुर पूरा वसे कोल, अन्दर मन्दर बेपरवाहीआ। अनहद वजाए साचा ढोल, इक्क मरदंगा नाउँ वजाईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला जन भगतां करे सदा चोल्ह, आप आपणी गोद उठाईआ। अक्खर वक्खर शब्द अनादी आपे बोल, सार शब्द सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी करे वडयाईआ। सार शब्द हरि वड्डिआई, हरि हरि हरि गुण गाइंदा। लक्ख चुरासी कर कुड़माई, घट घट डेरा लाइंदा। गुरमुख साजण वेखे चाईं चाईं, जुग जुग वेख वखाइंदा। सन्त सुहेले आप उठाए फड़ फड़ बाहीं, आप आपणा दर सुहाइंदा। देवणहार ठंडीआं छाईं, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सार शब्द तीर निराला सेवा लाए काल महांकाला, काल रूप आप हो जाइंदा।

सार शब्द हरि फ़रमाण, आपणा आप जणाईआ । आदि जुगादी हो मेहरवान, जुग जुग खेल खलाईआ। एकँकारा कर ध्यान, नर निरँकारा वेख वखाईआ। खेले खेल दो जहान, चौदां लोकां फोल फुलाईआ। लोआं पुरीआं इक्क ज्ञान, लोकमात वज्जे वधाईआ। गुरमुखां करे आप पछाण, आपणी सिख्या आप समझाईआ। मनमुख जीव बाल अज्ञाण, नेत्र नैण ना कोई खुल्हाईआ। वेले अन्त सर्ब पछताण, ना दिसे कोई सहाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजाण, हरिजन मेला मेल मिलाईआ। रसना जिह्वा हरि गुण गाण, बत्ती दन्द सलाहीआ। मिले पद पद निरबाण, निरगुण निर्भय विच्च रखाईआ । आवण जावण चुके काण, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। पाया पुरख पुरख सुलतान, घर साचे वज्जी वधाईआ। रल मिल सखीआं मंगल गाण, सोहँ ढोला एका गाईआ। जगत विचोला श्री भगवान, दूसर कोई ना संग रखाईआ। हरिजन देवे जीआ दान, दाता दानी दान झोली पाईआ। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म वखाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ । सतिगुर पूरे चरन ध्यान, दर दवारा इक्क बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सार शब्द तिखी धार, विच्च संसार आप चलाईआ।

तिखी धार पुरख करतार, शब्दी शब्द रखाइंदा। गुरमुखां करे मात प्यार, एका मंत्र नाम दृढ़ांइंदा। मनमुखां करे अन्त खवार, धीरज धीर ना कोई रखाइंदा। खेले खेल अगम्म अपार, बोध अगाधी शब्द जणाइंदा। अलक्ख निरञ्जण हो त्यार, जुग जुग आपणी अलक्ख जगाइंदा। सचखण्ड दवारा खेल अपार , पुरख अबिनाशी आसण लाइंदा। वंडे वंड सर्ब संसार, वंडणहारा आप हो जाइंदा। वरभंडी पावणहारा सार, ब्रह्मण्डी खोज खुजाइंदा। शब्द खण्डी तेज कटार, आपणे हत्थ उठाइंदा। जुगा जुगन्तर लए अवतार, आदि जुगादी गुर अखवाइंदा। नाम तोड़ा सीस दस्तार, एका कलगी जोत चमकाइंदा। असव घोड़ा कर त्यार, शाह असवार आप अखवाइंदा । गुरमुखां पावणहार सार, जुग जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। जिस जन बख्शे चरन प्यार, जगत नाता तोड़ तुड़ाइंदा। दरस दिखाए अगम्म अपार, आप आपणी दया कमाइंदा। खुशी गम ना कोई विचार, एका रंग रंगाइंदा। तोड़णहारा गढ़ हँकार, दूई द्वैती मेट मिटाइंदा। अमृत भरे नाम भंडार, नाम प्याला भर प्याइंदा । जो जन मंगे बण भिखार, साची भिच्छया झोली पाइंदा। ग़रीब निमाणे लाए पार, जो जन सरनाई आइंदा। रोग सोग चिन्ता दुःख दए निवार, जो जन रसना सोहँ गाइंदा। करे कराए सच

प्यार, गुरसिख बाल अंञाणे आप आपणी गोद उठाइंदा । मावां पुत्तरां इक्क प्यार, इक्क सुहाए बंक दवार, सतिगुर पूरा हरि अखवाइंदा। एथे ओथे दए सहार, दो जहानां मीत मुरार, कलिजुग तेरी अन्तम वार, फड़ फड़ बाहों पार कराइंदा। सार शब्द तेज़ कटार, मारी जाए वारो वार, गुरमुख साजण लाए पार, मनमुख शौह दरियाए आप रुड़ाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द एका नाम एका जोत श्री भगवान, एका देवणहारा दान, एका बख्शे ब्रह्म ज्ञान, आत्म प्रेम इक्क जणाइंदा।

आत्म ब्रह्म ब्रह्म जणाई, जन हरि बूझ बुझाइंदा। पुरख अबिनाशी दया कमाई, गुरमुख सज्जण वेख वखाइंदा। दर घर साचे होई कुड़माई, साचा सगन मनाइंदा। दिवस रैण वज्जे वधाई, एका रंग समाइंदा। अन्त विछोड़ा होए नाही, जिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, सतिगुर पूरा बण मलाह, गुरमुखां कलिजुग पकड़े बांह, दो जहानी करे सच निआं, दरगाह साची देवे थां, एका धाम सुहाइंदा।

धाम अव्वला हरि निरँकार, गुरमुखां आप वखाईआ। इक्क इकल्ला बैठ सच्ची सरकार, साचा हुक्म सुणाईआ। जलां थलां पावे सार, लक्ख चुरासी मन्दर अन्दर डेरा लाईआ। गुरमुखां गुरसिखां पूरब लहणा कर विचार, नेत्र नैणां दरस दिखाईआ। जुगाँ जुगाँ दे विछड़े यार, कलिजुग अन्तम मेल मिलाईआ। बावन रामा हो अवतार, कृष्ना काहन आप अखवाईआ। ईसा मूसा बंने धार, संग मुहम्मद सेवा रिहा कमाईआ। नानक गोबिन्द इक्क प्यार, एका शब्द करी कुड़माईआ। नाम डंका विच्च संसार, नाम सति रिहा वजाईआ। वासी पुरी घनका हो त्यार, कलिजुग अन्तम निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निहकलंका लए अवतार, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ । गुरमुखां करे सच प्यार, गुर गोबिन्द दए गवाहीआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सतिगुर पूरा इक्क अखवाईआ। हिंदू मुसलम सिख ईसाई ऊँच नीच ना कोई विचार, राओ रंक राज राजान शाह सुलतान एका धाम बहाईआ। आपे सभ तों वस्सया बाहर, दिस किसे ना आईआ। जिस जन आपणी किरपा देवे धार, आप आपणा दरस दिखाईआ। भव जल सागर उतरे पार, जो जन आए चल सरनाईआ। काग ना उडे कागाँ डार, कागों हँस उडाईआ। माणक मोती भरे भंडार, सोहँ चोग चुगाईआ। निरगुण जोती कर उजिआर, दिवस रैण डगमगाईआ। गुरसिख वरन गोती वस्सया बाहर, एका वरन पारब्रह्म करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, सन्त सुहेले गुरू गुर चेले काया मन्दर अन्दर उच्च मिनार, हरि निरँकार जोती नूर नूर उजिआर, शब्दी शब्द शब्द धुनकार, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। (५ सावण २०१६ बि)

सार शब्द प्रभ का शौंक, शौकीन आप हंढाइंदा । ओथे कोई ना सके पहुंच, मस्कीन हो हो सर्ब गाइंदा । बिन सार शब्द सारे होण औंत, औंतरा जगत वखाइंदा । सार शब्द आदि जुगादि जुग जुग कदे ना आई मौत, मौत सभ दे नाल परनाइंदा । सार शब्द जुगा जुगन्तर इक्को बहुत, बौहड़ी बौहड़ी सभ तों कराइंदा। सार शब्द प्रकाश निर्मल जोत, रूप रंग रेख ना कोई वखाइंदा। सभ दी पावणहार सरोत, सरोत आपणी आप जणाइंदा।

जिस बणाया सचखण्ड कोट, सो सार शब्द अखवाइंदा। एकँकार वसे आपणे लोक, लुकया नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आप आप प्रगटाइंदा। (१८ मध्घर २०१६ बि)

सार शब्द शब्द अनमोला, अनमुलड़ी खेल कराईआ। जुग चौकड़ी रक्खे उहला, पर्दा इक्को इक्क रखवाईआ। कर किरपा गाए ढोला, नाम निधान गुण प्रगटाईआ। सच्चो सच सुणाए सोहला, सुहबत आपणी आप प्रगटाईआ। कलिजुग अन्तम निरगुण हो के पाए रौला, रौणक आपणी आप वधाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सार शब्द सच तौफ़ीक, दो तरफ़ी खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण बण रफ़ीक, आप आपणा रंग रंगाइंदा। जुग चौकड़ी बण फ़रीक, फ़िरका सभ दा मेट मिटाइंदा। नाउँ रक्ख लाशरीक, जल्वा नूर इक्क दिखाइंदा। हुजरा हक़ सुहाए ठीक, महराब आपणा रंग रंगाइंदा। मीआं बीवी करे नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सार आपे पाइंदा। (१८ मध्घर २०१६ बि)

एह नूर प्रभू दा नुक्ता, बिन कलम छाही बणाईआ। एह बड़ा पुखता, हिलाइआं हिल सके ना राईआ। एह नूर धुर दा नुसखा, चमकया हत्थ ना किसे फिराईआ। एह नूर ना फिरदा ना तुरदा, गली कूचे ना रंग रंगाईआ। एह विहार करे आपणी लोड़ दा, लोहड़ा आपणा भेव ना किसे खुल्ह़ाईआ। किधरे लौंदा किधरे तोड़दा, तोड़ विछोड़ा आपणा खेल रचाईआ। पैहला खेल पंज तत्त चोर दा, चोरी चोरी आपणी कार कमाईआ। एह खेल अगम्मे बांके छोहर दा, शहनशाह निरगुण रूप वटाईआ । सन्त सज्जण आपणे लोड़दा, लक्ख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। जिस नुकते विच्चों नुकते बणा के गुर अवतार पीर पैगम्बर तोरदा, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म मनाईआ। ओस नुकते विच्चों मंत्र कढ्ढे फोर दा, जो फुरना सभ दा सार शब्द अखवाईआ। एह खेल नहीं कूड़ी ताकत ज़ोर दा, बलीआं बल ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नुक्ता बिन नुकतिउँ आपणे नुकते विच्च रखवाईआ। (११ माघ २०२० बि))

सार शब्द कहे मैं सदा वसां उहले, धाम अगम्मड़े आसण लाईआ । मेरे हुक्म दी धार आउँदी रहे विच्च काया चोले, तन वजूद मात सुहाईआ। मेरी सिफ्त दे गाए ढोले, अवतार पैगम्बर गुरू नाउँ प्रगटाईआ। सदा खेल करां हौले हौले, आपणी कार भुगताईआ। जुग चौकड़ी पवा देवां रोले, किसे दी चले ना कोई चतुराईआ। जिन्ह़ां दीन मज़्ह़ब विच्च फरकाए डोले, अन्त उन्ह़ां दी करां सफ़ाईआ । मेरा दर कदी ना खोल्हे, मैं सभ दे दवारे आप खुल्ह़ाईआ। मेरा तोल कोई ना तोले, मैं गुरूआं अवतारां पैगम्बरां कंडे दिआं तुलाईआ । आपणी महिंमा दे बणा विचोले, सिफ्तां वाले राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, मेरा भाव आपणा भेव जणाईआ।
सार शब्द कहे मैं कदी बन्द नहीं होया विच्च पंज तत्त, वजूद वजूद ना कोई जणाईआ। मैं धुर संदेसे दी देवणहारा मत, नाम अगम्मी कर पढ़ाईआ। जो अवतार पैगम्बरां गुरूआं

संदेसा दित्ता दस्स, वारो वार समझाईआ। उह मेरे प्यार दा माणदे गए रस, सुख सागर विच्च समाईआ। मैं विकया नहीं किसे हट्ट, वणजारा ख़रीदण कोई ना पाईआ। मैं निरगुण धार अगम्म समरथ, जो समरथ खेल खिलाईआ। जिस नूं भेजया तिस मेरी महिंमा कही अकथ्थ, रागाँ नादां विच्च कर शनवाईआ। कोटन कोट जुग चौकड़ी गए नट्ठ, हुक्मां अन्दर भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेरा रूप समाईआ।

सार शब्द कहे मैनूं कह सके ना कथन, कहावत विच्च ना कोई जणाईआ। मैं सभ दे चलावां रथन, हुक्मे अन्दर अगला हुक्म बणाईआ । मेरा खेल सदा समरथण, समरथ आप अखवाईआ। अवतार पैगम्बर गुर सन्त भगत मेरे प्यार दे गीत कथण, संदेसयां विच्च दृढ़ाईआ। मेरी मंज़ल मूल ना टप्पण, टापूआं विच्च बैठे अक्ख उठाईआ। मेरा खेल अलख अलखण, लेखा लिख ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा घाट समझाए कोई ना पतण, पितर पत्रका विच्च ना कोई समझाईआ । (११ चेत शहनशाही सम्मत ६)

गुर अवतार पैगम्बर चार जुग दे बच्चे शब्द दी सिफ्त वाले कवी, सार शब्द दी सार किसे ना पाईआ। (१२ चेत श सं ५)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪